

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182285

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No.

#83/R19B

Accession No.

H2875

Author

शेणैश्वर्यधर

Title

बौद्ध धर्म का इतिहास 1958

This book should be returned on or before the date last marked below.

सन्तुषा और श्रील

[उपन्यास]

लेखक—

डा० रांगेय राघव

विनोद पुस्तक मन्दिर

हॉस्पिटल रोड, आगरा ।

प्रकाशक—

राजकिशोर अग्रवाल

विनोद पुस्तक मन्दिर

हॉस्पिटल रोड, आगरा ।

प्रथम संस्करण

बसन्त पंचमी

२५ जनवरी—१९५८

मूल्य ३॥)

मुद्रक—राजकिशोर अग्रवाल, कैलाश प्रिंटिंग प्रेस,
बाग मुजफ्फर खाँ, आगरा ।

भूमिका

प्रस्तुत उपन्यास विगत महायुद्ध और वर्तमान युद्ध की समस्या को लेकर लिखा गया है। युद्ध और मनुष्य—यही मेरे दृष्टिकोण में मुख्यतया रहा है। मनुष्य की राष्ट्र, जाति, समाज की व्यवस्था, राज्य की व्यवस्था, विज्ञान, परिवार, तथा कला संबंधी मान्यताओं के बारे में एक नये ढंग से विचार किया गया है।

अधिक न कह कर इतना कह सकता हूँ ऐसी रचना प्रस्तुत करने के लिये मुझे बहुत परिश्रम करना पड़ा है और मैं उनका आभारी हूँ जिन्होंने बहुत कष्ट भोगे हैं, और उन्हें मुझे सुनाया है जिससे यह रचना बन पाई है।

यहाँ मैंने जीवन के नये दृष्टिकोण को सामने रखने की चेष्टा की है।

यूरोप में युद्ध साहित्य काफी है और वहाँ काफी वेदना के साथ लिखा गया है। मनीषियों ने युद्ध की वीभत्सा पर अनेक मत भी प्रगट किये हैं। मेरा भी अपना एक दृष्टिकोण रहा है और उसे मैंने जितने सहज रूप में रख सकता था, सामने रख दिया है।

कल्याण अंततः मनुष्य का होना है। आज हम एक ऐसे मोड़ पर पहुँच गये हैं जहाँ 'हां' या 'ना' के सवाल की नौबत आगई है।

युग एक ओर विज्ञान की अभूतपूर्व उन्नतियों से चमत्कृत हो रहा है और दूसरी तरफ है सवाल आदमी की जिंदगी का। चारों ओर अविश्वास है। युद्ध क्यों होता है ? युद्ध है क्या ? वर्ग स्वार्थ क्या है ? और युद्ध का अंत कैसे हो सकता है, इस सब बातों को मैंने बार बार सोचा है।

क्राफ्ट के संबंध में कहूँ कि इस उपन्यास में मैंने सदा की तरह कुछ नये हो प्रयोग किये हैं। यह मैं पाठकों पर छोड़ता हूँ कि वे उन्हें पहँचानें, और उनकी परख करें। न करें तो भी कोई नुकसान नहीं है, क्योंकि असली बात से गरज है कि वे कुछ सोचने में और गहराई से उतरे, क्योंकि 'रूप' मूलतः 'वस्तु' द्वारा अपने आप बन जाता है और कला में 'इकाई' हो इसलिये बड़ी चीज होती है, 'इकाई' की जड़ असल में होती है 'भाव' में और 'भाव' की तेजी आती है 'यथार्थ' में, यथार्थ यदि केवल भावहीन चित्रण है तो वह निष्प्राण ही कहा जा सकता है।

उपन्यास में मैंने अंतर्राष्ट्रीय चित्रण किया है, लेकिन महज इसलिये नहीं कि वह अंतर्राष्ट्रीय हो। वह ऐसा अपने आप होगया है, क्योंकि घटनाओं ने अपने आप ऐसा मोड़ ले लिया है।

अत्याचारी से युद्ध करने वाले वीरों का मैं अब भी जय-गान करता हूँ और अत्याचार करने वालों का जो दूसरा दृष्टिकोण है, वही मैंने आपके सामने रखा है।

अंत में कह दूँ कि भारतीय सैनिक जीवन का चित्रण करने वाला यह पहला उपन्यास है। बंगाली का एक उपन्यास

[ग]

पढ़ा था—रंगरूट—(हिंदी में अनूदित था वह)—लेकिन उसमें यांत्रिक मार्क्सवादी दृष्टिकोण था, वह मुझे पसंद नहीं आया था । मैं समझता हूँ कि उसे पढ़कर सेना का कुछ आभास भी नहीं हुआ था । हमें जीवन के हर क्षेत्र में केवल व्यवस्था से टकरा कर नहीं लौटना है, कला एक सत्य है, और उस सत्य की सुंदरता है, इसलिये हल्के फुल्के तौर पर मजाक उड़ाना या छिछले व्यंग्य कस कर अपने दीन अहंकार की तृप्ति करके लेखक को अपने आपको 'प्रगतिशील' समझना काफी नहीं है, चाहिये यह कि हर जगह मनुष्य को देखा जाय—मनुष्य के मन को देखा जाय अन्यथा वह कला नहीं प्रचारमात्र है ।

—रागेय राघव

[एक]

खूबसूरत बँगले के बरामदे में रनवीर बैठा है। बाहर फाटक पर नाम की प्लेट टँगी थी, इस समय वह बेल से ढक गई है, वरना कोई पढ़ सकता है कि उस नाम के पहले लगा है-लेफ्टिनेंट कर्नल।

रनवीर बैठा सिगरेट पीर रहा है, और चाय सामने है। अभी भी वह अविवाहित है, और यह लेफ्टिनेंट कर्नल उसे कुछ विशेषता नहीं देता—उसका मन इस सबसे ज्यादा प्रभावित नहीं है।

बाहर का बाग फूलों से भरा है और उसके फूलों का माली सामने गुलदस्ता बना कर रख गया है। विलायती फूल हैं, देखने में बड़े सुन्दर हैं, पर खुशबू किसी में नहीं है।

यह दिल्ली है। वैभव की नवीं बार पहल हुई है। यहाँ वे लोग रहते हैं जिनके हाथ में करोड़ों आदमियों की नकेल है।

घंटी बजती है।

फ़ोन उठाता है रनवीर।

हलो...

‘हां भाई, सब ठीक है...’

‘कुछ नहीं, आज सिर्फ़ रोज़ का मामूली काम है...’

‘आ तो सकता हैं; गाड़ी भी ठीक होकर आ गई है, लेकिन

जाना कहाँ है ...

‘क्या कहा?जापानसे फौजी मिशन आया है?आया होगा...’

‘अच्छी बात है जरूर आऊँगा !’

फोन बंद ।

बैरा सामने अखबार रख गया है

रनवीर ने अखबार उठा लिया है...

पोस्टमैन आता है : ‘सलाम हज़ूर !’

‘सलाम !’

वह चिट्ठियाँ दे गया है और रनवीर खोलता है उन्हें ।

अंतिम पत्र है :

“चिरंजीव रनवीर को आशीर्वाद ।

तुम्हारा पत्र आया । हाल मालुम हुआ । अम्मा कहती हैं...”

रनवीर मुस्कराता है ।

चिट्ठी हमेशा की तरह से छोटे से लिखवाई गई है । लिखी गई है अम्मा की तरफ से,लेकिन छोटे अपने को अलग कैसे रख सकता है । फिर पढ़ता है वह—

“सुषमा की शादी का सब मामला तय होगया है ।”

(सुषमा रनवीर की छोटी बहन है)“लड़का तुमने देखा ही है । अब दो महीने बाद पंडित ने दिन निकाला है । तुमने लिखा है कि शायद तुम्हें काश्मीर जाना पड़े । तो अम्मा कहती हैं कि देखभाल कर रहना, जापानी और लोग थे, पाकिस्तान का मामला और है । जापानी हमें जानते नहीं थे, पाकिस्तानी

जानते हैं। वैसे तो भगवान रक्षक है ही। उसके रहते किसी के किये क्या हो सकता है। सुषमा की शादी के जोड़े सिलने डलवा रही हैं। तुमने रुपये भेजे थे सो मिल गये हैं, इसलिये बैंक के रुपयों को छुआ नहीं है। अम्मा कहती हैं कि खर्चा नहीं बढ़ाना चाहिये। बबुआ का रुपया उन्हीं की बहू के काम आये तो अधिक ठीक रहेगा। और कहती हैं कि तुम जरा इशारा ही करदो तो वे तुम्हारे लिये भी लड़की देख लें। पड़ोस में एक इंजीनियर आगये हैं। तनखाह पाते हैं (१८००)। उनकी श्रीमतीजी आई थी। कहीं सुन आई थीं कि इस घर में एक लेफ्टिनेंट कर्नल हैं, जो अभी तक क्वारे हैं। बहुत ही भले हैं, सच्चरित्र और सीधे सादे। सो अम्मा ने तुम्हारा फोटो दिखाया। देखकर खुश होगईं। बोलीं अम्मा से कि बहन जी! ऐसा अच्छा लड़का है। मेरी लड़की अब एम०ए० कर चुकी है। आप चाहें तो सबकुछ ठीक हो सकता है। बड़ी अच्छी जोड़ी रहेगी। अम्मा को बुला गईं थीं चाय पर। सो भैया, मैं भी संग गया था। सच भाभी होने के लायक हैं वे! बिल्कुल ऐसी लगती हैं वे, जैसे वह फिल्म था न, जो तुमने उस बार दिखाया था, उसमें जो लड़की बनी थी वह डाक्टरनी। भाभी अब २५ साल की हैं।”

रनवीर मुस्कराता है। गधा ! इंटर में आ गया है, मगर अभी बचपना नहीं गया।

“जवाब जल्दी देना। क्या बिगड़ता है! भैया शादी में तुम्हें कुछ भी काम नहीं करना होगा। अम्मा कहती हैं कि वे अपने सारे गहने बेच कर ही तुम्हारा ब्याह करेंगी। तुम्हारी कमाई

से हम बड़े होंगे, पर तुम्हारा सब वे ही करेंगी। सच अम्मा को भाभी बहुत पसंद आई हैं। अभी उन्हें जवाब नहीं दिया। कहा है चिट्ठी डाल कर पूछलें। भाभी ने सुना तो कुछ उदास होगई थीं। इंजीनियर साहब कहते थे कि भाई खर्च बहुत हैं पर शादी ऐसी करूँगा कि कसर अपनी तरफ से तो रखूँगा नहीं। तो तुम हाँ कर दो अब। अम्मा कहती हैं कि सुषमा बहन के जाने से घर खाली हो जायगा। सो उस जगह को भरना चाहिये, वरना घर काटने को दौड़ेगा।”

चिट्ठी में अभी कुछ सतरें बाकी हैं।

रनवीर उत्तर लिखता है—

“प्रिय छोटे—

पत्र मिला। सुषमा की तारीख तय हो गई और मुझे शायद काश्मीर जाना ही होगा। मैं छुट्टी के लिए दरखास्त दे देता हूँ, लेकिन जोखिम के कामों में वे जिम्मेदार आदमी चाहते हैं। इसलिये पक्की तौर पर नहीं कह सकता। रुपये बैंक से निकलवा लेना। सुषमा की शादी में कसर नहीं रखनी चाहिये। मेरे लिये तुम, सुषमा और नीलम तीनों बराबर हो। अगर वे दोनों बहनें भी होतीं, जो हमारे बीच से उठ गईं, तो मैं इतनी चिंता नहीं करता। लेकिन अब उसका अफसोस करने से फायदा भी क्या है? खुशी के वक्त बल्कि ऐसी दुख की बातें याद भी नहीं करनी चाहियें। रही मेरी शादी। सो बच्चे, अब तो तुम तीन ही मेरे सहारे हो। जब लड़ाई पर गया था तब मैं बीस का था। तुम पाँच के थे, सुषमा २ की और नीलम शायद ३॥ साल का था। पिताजी की

मृत्यु ने घर को उजाड़ दिया था । अब सन् ४० से ५७ है । मैं ३७ बरस का हूँ । यह ठीक है कि मैं तन्दुरुस्त हूँ । मगर ३७ साल हिन्दुस्तान में शादी के दिन नहीं रहते । इंजीनियर की लड़की २५ की है । छोटी है, लेकिन वैसे मैं तो उसके ३२ की होने पर भी शादी नहीं करता । और मेरी पत्नी घर रहेगी कहाँ ? घर तो सूना हो रहेगा । माँ से कहना कि वे चिंता न करें । सुषमा की शादी पर आने की पूरी कोशिश करूँगा । न आ सकूँ तो कोई काम रोकने की जरूरत नहीं है । तुम्हें तो मैं बता ही चुका हूँ कि जापानियों ने मुझे क्या क्या दिया था, जब मैं कैद में था । लेकिन आज जापानियों का एक फौजी मिशन आया है । उनसे मिलने जाऊँगा । यह कोई खास बात नहीं है । माँ से कहना किसी तरह की फिक्र न करें । तुम्हारी पहली चिट्ठी में लिखा था कि मकान चूता है । बदल लो बँगला । बल्कि मेरी राय में तो तुम एक काम करो । मुझे तो तनखाह बराबर मिलती ही है । मैं घर भेजता ही हूँ तुम्हें । अब तुम इन्टर में हो । नीलम भी इन्टर के फर्स्टियर में है । पाँच ६ साल में तुम दोनों लायक हो ही जाओगे । सो ऐसा करो कि बैंक से रुपया ले लो और चार हजार की ज़मीन ले लो और ८ हजार तक में मकान बन जायेगा अच्छा सा चार कमरों का । एक ड्राइंग रूम बना लेना । एक कमरा अम्मा का । दो तुम दोनों के लिये । १००) महीने बच जायेंगे । घर अपना रहेगा । बर्ना शायद रुपया उठ जाये । फिलहाल ऐसा करो । बाद में ऊपर चार कमरे और बन जायेंगे । आठ कमरों का मकान काफी होगा ।

सुषमा तो चली ही जायेगी । इस मामले में सोचता हूँ कि जापानियों के यहाँ कैद में रहा तो यह फायदा तो हुआ कि छूटने पर इकट्ठी तनख्वाह मिल गई । माँ से पूछ कर जवाब लिखना । माँ के चरन छूना और तुम सबको मेरा आशीर्वाद ! अभो नीलम में से अँगरेज़ी कल्चर के ठाठ का नशा उतरा या नहीं ? दिल्ली बुला कर तुम्हें दिखाता, मगर तुम्हारा कालेज है । यहाँ तो दो दुनियाँ हैं । एक पुराना हिंदुस्तान, एक पंजाबी बोलने वाले अँगरेज़ों का ।

तुम्हारा—

रनवीर ।”

रनवीर उठ जाता है ।

गाड़ी आती है । रनवीर बैठता है और गाड़ी चल पड़ती है । रनवीर दिल्ली देखता है और अचानक उसे खयाल आता है—यहाँ है पंजाबी ! सताये हुए । जिन्होंने भारत-विभाजन के समय भयानक कष्ट उठाये हैं । दुख ने उन्हें तपा दिया है । लेकिन वह दुख जिस निखार को ला सकता था, वह दिखाई क्यों नहीं देता ? क्या दिल्ली के लोग इतने वीर हैं कि वे दुख को दुख ही नहीं समझते ! या यह भी हो सकता है कि मैं अपने पद के कारण लोगों से मिल नहीं पाता और दुख वहाँ है जहाँ इंसान है, दुख वहाँ नहीं दिखता जहाँ पैसा है, क्योंकि पैसा आज मक्कारी सिखाता है और पैसा ही अँगरेजियत की नकल के आडम्बर में अपना खोखलापन छिपाना चाहता है । क्या सचमुच यहाँ जो चमक दिखाई दे रही है, उसकी तह में अंधेरा नहीं है...

रनवीर सोचता है, फिर वह सिगरेट पीने लगता है और देखता है, बहुत सी भीड़ है, मर्द भी औरतें भी वह परिवार का व्यक्ति है, पर स्वयं अविवाहित है... एक उड़ती नजर चुपचाप लड़कियों को देखती है, फिर लौट जाती है और रनवीर की आँखें देखती हैं, सिगरेट के धुएँ को बनता है, घुमड़ता है, और फिर मिट जाता है...

वह पार्लियामेंट भवन के पास से आगे निकल गया। वह विशाल दीवारें, कितनी भव्य लगती थीं। सबकुछ कितना साफ सुथरा और सुन्दर था। विदेशी अवश्य इसे देख कर प्रभावित होते होंगे। मोटरें भागी जा रही थीं, चमकती हुई। उनमें दो नस्ल के इंसान बैठते हुए बहुतायत से पाये जाते हैं। एक वे जो धोबी की भट्टी में से सीधे निकल कर भूँका से आते हैं, उनको नेता कहा जाता है। दूसरी नस्ल है लम्बे नाखूनों, सुर्ख रंगीन होठों और कटे बालों वाली औरतों के साथ बैठे साँवले या गेहुँए, हिंदुस्तानी साहब। प्रायः दोनों नस्लों का केन्द्र एक ही होता है, मगर साहब की ऐठ में घुटन होती है, क्योंकि उसकी उन्नति सीमित होती है, अतः वह काफी बेमुरब्बत होता है, उसे यह सदा ज्ञात रहता है कि वह सिर्फ एक पुर्जा है, और पहली नस्ल वालों के चेहरे पर एक बड़ी सलीस मुस्कान पैतरे बदला करती है, क्योंकि उसकी उन्नति 'चुनाव' के कारण असीम होती है, मगर यह लोग पैसे होने पर भी बेमुरब्बत नहीं होते, क्योंकि चुनावों में फिर आम लोगों से काम पड़ता है।

यह आजाद हिन्दुस्तान है और यहाँ प्रजातन्त्र है। एक

व्यक्ति खड़ा होता है। चुनाव के लिये, कई वोट देते हैं, जब वह चुन लिया जाता है तो मंत्री हो जाता है, नहीं चुना जाता तो वह सिर्फ नेता रह जाता है। ध्यान टूट गया।

‘हलो ! हलो !’

रनवीर ने देखा।

दोस्त था। डॉक्टर ग्राहूजा !

वही चिकनी ठोड़ी, खैलाब के पलट जाने पर निकली हुई चिकनी धरती सा चेहरा।

और यों ही रनवीर की गाड़ी बढ़ती रही, चलती रही, आखिर रुक गई।

रनवीर गाड़ी से उतर कर भीतर पहुँचा तो मिला डॉक्टर कावसजी।

‘बहुत देर लगादी तुमने।’ कावसजी ने स्नेह से कहा।
रनवीर ने कहा—‘आगये वे लोग ?’

‘अभी लंच खत्म हुआ है। आओ तुम्हारी मुलाकात करा दूँ।’

‘सब इकट्ठे हैं ?’

‘नहीं इस वक्त सिर्फ एक कर्नल है। बाकी लोग अभी तैयार हो रहे हैं। आज यह लोग आगरे जायेंगे ताज देखने ! अभी राष्ट्रपति की मोटर आती होगी।’

‘चलो फिर, मिल ही लें।’

रनवीर को उत्सुकता थी।

देखा विशाल कमरे में एक मेज के सामने एक जापानी बैठा था। उसका सिर घुटा हुआ था और वह भुककर एक

अखबार पढ़ रहा था ।

डाक्टर कावसजी ने आगे बढ़ कर कहा : 'यह अंगरेजी जानते हैं । आग्रे लेफ्टिनेंट कर्नल ! Meet ... कर्नल मत्सुओका ... लेफ्टिनेंट कर्नल रनवीरसिंह ...'

जापानी ने सिर उठाकर देखा ..

रनवीर ने उसकी ओर ..

फिर दोनों ऐसे रह गये जैसे दोनों हतबुद्धि थे । मत्सुओका को जैसे लकवा मार गया था, वह खड़ा होना चाहता था, पर शायद वह निर्जीव हो गया था और रनवीर के नेत्र ऐसे फटे रह गये थे कि शायद वह देखकर भी देख नहीं पा रहा था । डाक्टर कावसजी समझा नहीं । फिर हँसा और बोला : 'लगता है पुरानी दोस्ती है ...'

उसके हास्य ने दोनों को सचेत कर दिया ।

रनवीर के होठों पर एक विजय भरी मुस्कान खेल गई । उसने हाथ बढ़ाकर कहा—'कर्नल मुझसे सीनियर हैं, लेकिन मेरे बड़े पुराने दोस्त हैं, और यहाँ कोई है भी नहीं । लिहाजा अदब की फिक्र न करके हाथ माँगता हूँ ...'

कर्नल मत्सुओका ने हाथ बढ़ाया, उसका चेहरा जैसे शर्म से गीला हो गया था । उसके मुँह से टूटे फूटे शब्द निकले : 'किस्मत ! अच्छे हो ? दोस्त ...'

'दोस्त !' रनवीर ने दुहराया : 'पुराने दोस्त !' और फिर वह एक बार खुले तरीके से हँसा और बोला : 'मुझे आपकी याद है कर्नल ! आपको मैं याद रह गया ...'

जापानी ने कंधे उचकाए । उसके चौड़े मुँह पर एक

विचित्र ग्लानि का भाव आया और जैसे बैठ गया ।

कावसजी ने कहा: 'वैल ! तो फिर यह और भी अच्छा रहा । पुराने दोस्त ! सिगरेट !'

उसने एक टिन बीच में रख दिया और कहा: 'मैं तब तक अपना काम खत्म करके आता हूँ । जरा कल्चरल अटैशे से मुझे फोन पर बातें करनी हैं, यहीं हैं आजकल...'

उसके बूटों की आवाज बड़े सलीके की थी, बहुत कम आती थी, क्योंकि कालीन काफी मोटा था, और जब वह चला गया, रनवीर ने सिगरेट उठाकर कर्नल को पेश करते हुए कहा : 'सिगरेट !'

कर्नल उठ खड़ा हुआ । दर्द भरी आँखों से वह उस टिन को देखता रहा और फिर वह कठोर लगने वाला आदमी खिड़की के पास जाकर पीठ मोड़ कर खड़ा हो गया । शायद उसने रुमाल निकाल कर आँखें साफ कीं । रनवीर उठ खड़ा हुआ । कर्नल ने उसे देखा, और तब जैसे पहाड़ फरफरा उठा वह मत्सुओका रनवीर को छाती से लगाकर रोने लगा ।

'कर्नल ! यह क्या है ।' रनवीर फुसफुसाया । 'जो होना था हो गया ! उसमें तुम्हारा कोई कुसूर नहीं । उस वक्त हम भी गुलाम ही थे । अब उसकी याद से कोई फायदा नहीं । हम दोस्त हैं ।'

कर्नल सुस्थिर हो गया । करुणा उसके नेत्रों में फिर भी भाँकती रही ।

'तुम ...' कर्नल ने कहा 'आदमी नहीं हो रनवीर ! तुम बुद्ध हो ... तुम बुद्ध हो ...'

रनवीर फिर हँसा । कहा: 'ओह कर्नल ! इंडिया में बुद्ध बनना बड़ा कठिन है । आओ ! छोड़ो । मैं बिल्कुल ठीक हूँ । वह सब आया था । एक पहलू था । चला गया । कोई प्रति-हिंसा नहीं है अब ! हिरोशिमा ! अकेले हिरोशिमा ने मेरी घृणा छीन ली । अब मुझे कोई शिकवा नहीं है । आदमी लड़ता है, यह दुनियाँ, एक बड़ा, बड़ा भारी जाल है । कर्नल ! हम सब शतरंज के प्यादे हैं । उसे भूल जाओ !'

कर्नल गंभीर खड़ा रहा । फिर वह बोला: 'आओ !'

दोनों बैठ गये और सिगरेट पीने लगे । धूआँ उठने लगा ।

कर्नल ने कहा: 'रनवीर ! तुम सचमुच भूल गये हो ! तुमने सचमुच मुझे माफ कर दिया है !'

'माफ़ !' रनवीर ने मुस्कराकर कहा: "तुमने करवा लिया कर्नल ! तुमने करवा लिया !"

'वह कैसे !'

'सबका बदला इकट्ठा हिरोशिमा में चुकाकर !'

कर्नल थर्रा गया ।

'हाँ, ठीक कहता हूँ । तुमने अपने वक्त पर वह सब किया । आज भी मुझे राजनीतिक स्तर पर शायद तुमसे यह नहीं कहना चाहिये, लेकिन हम एलाईज की तरफ थे न ? एलाईज ने क्या किया ? हिरोशिमा ? हिरोशिमा कर्नल !'

रनवीर का स्वर उच्छ्वसित हो गया था । कर्नल सिर झुकाये सोच रहा था । उसने धीरे धीरे सिर उठाया और

कहा: 'लेफ्टीनेंट कर्नल ! आदमी की तरह देश का भी एक भाग्य होता है ? होता है ? तुम्हारे यहाँ क्या कहते हैं ?'

'नहीं कर्नल ? मैं नहीं जानता वे क्या कहते हैं, पर इतना जानता हूँ कि देश से भी ऊपर एक भाग्य है, और सारे दुनियाँ के आदमियों के लिये एक है... असल में हम सब इतने पास आ गये हैं, विज्ञान के साधनों के कारण, इतने पास 'सचमुच बहुत पास !'

उसकी बातें अजीब ढंग से खत्म हुईं । मत्सुओका ने सिगरेट से सिगरेट को सुलगा कर कहा: 'शायद तुम सच कहते हो यह ! शायद मैं बाहर यह नहीं कहूँगा, लेकिन तुमसे कहता हूँ, हमने अँगरेजों और अमरीकनों को कम नहीं सताया था । अब मैं उस सबको दूर रखकर देखता हूँ न ? अब वह सब मेरे इतने पास नहीं रहा है न ? अरे हाँ ! कोरिया को जो भारतीय सैनिक गये थे ...

'हाँ मैं उनके साथ गया था ।'

'वह तुम्हारा दाढ़ीवाला ब्रिगेडियर था ! अच्छा आदमी था ।'

'तुम कब मिले उससे !'

'वह हमें मिला था कलकत्ते में । टोकियो में नहीं ।' कर्नल हँस पड़ा ।

'टोकियो में तो मैं भी तुमसे नहीं मिला था, कर्मज मेरी बड़ी इच्छा है तुम्हारा देश देखने की ।'

कर्नल का चेहरा स्याह पड़ गया ।

'अरे ! तुमतो फिर कुछ सोचने लगे ।' रनवीर ने कहा

‘मैं किसी और खयाल से नहीं कह रहा था ।’

कर्नल कुछ क्षणों तक स्तब्ध बैठा रहा, फिर उसने कहा: ‘लेकिन दोस्त ! जापान अब वह जापान नहीं है । अमेरिका ने उसे इतने वर्षों में पीस दिया है ।’

रनवीर ने कहा: ‘सुनता रहा हूँ ।’

‘हजारों जापानी लड़कियों के उनके सिपाहियों ने नाजा-यज बच्चे पैदा किये हैं । उन्हें नंगा नचाया है... हजारों घर तबाह होगये... और वे मेरी बहन की लड़कियों को लेगये थे उन दिनों । वे मर गईं शर्म से । और हिरोशिमा में मेरा परिवार भस्म हो गया । लेकिन मैं नहीं मर सका ।’

रनवीर ने देखा और कहा: ‘होता है, ऐसा ही होता है कर्नल ! आदमी जब मरना चाहता है, तब नहीं मरता । अब मुझे ही देखो...’

‘रहने दो । रहने दो ।’ कर्नल ने उसका हाथ दबा कर कहा: ‘मैं उसे नहीं सह सकूँगा लेफ्टिनेंट कर्नल ! यह सब जो हुआ है उसी का फल लगता है । बुद्ध ! बुद्ध ने कहा था—पाप का फल पाप होता है न ? राष्ट्र और देश का आदमी पर इतना जोर क्या ठीक है रनवीर ! इस सारी हत्या और दूसरे महायुद्ध ने हमें कहाँ पहुँचाया है ? क्या हम तीसरे की तरफ बढ़ रहे हैं ? सुबह हम राजघाट गये थे । गाँधी की समाधी पर फूल चढ़ाने । वह आदमी इस सदी का ही था ; वह नंगा था, लेकिन हम सब नंगे नहीं हैं, पर देखता हूँ तो लगता है कि असल में वह नंगा नहीं था, हम सब नंगे हैं । उसे मार डाला गया, पर वह ज़िंदा है, और मैंने, जिसने लोगों को मारा है, लगता है, मैं ज़िंदा नहीं हूँ ।’

युद्ध ने मुझे क्या दिया है ? मौत, बरबादी, और निराशा । '

रनवीर ने कहा: 'लेकिन ऐसा ही चित्र नहीं है कर्नल ! मुझे लगता है युद्ध एक मास्टर है । सबक देता है । लेना, न लेना आदमी का काम है । इस युद्ध ने सबसे बड़ी चीज दी , वह थी दुःख ! और दुख की नींव पर ही खड़ा होता है प्रेम का भवन ! दुनियाँ पहले से करीब आरही है, ऐसा मैं सोचता हूँ ।'

'कहाँ आरही है लेफ्टिनेन्ट कर्नल !' उसने धीरे से झुक कर कहा: 'रूस और अमेरिका ! यह उदजन बम, यह बिना-शक वस्तुएँ क्या धरी रह जायेंगी ? पहला डंडा आदमी ने जान-वर मारने को उठाया था, जिससे उसने दूसरे कबीले के आदमी का सिर तोड़ा और तब से तलवार, बंदूक, तोप होता हुआ वह उदजन बम तक आगया है । बम बनने की तुक ही क्या है ! दोनों तरफ से आत्मरक्षा । और इसका नतीजा ?'

रनवीर ने उसके पास झुक कर कहा: 'कर्नल ! इतना तो सच है कि रूस हमला नहीं करेगा ।'

'स्तालिन की मौत बताती है कि रूस में जनता और सर्वहारा के नाम पर एक गुट्ट राज्‍य करता है ।'

'लेकिन उसने जनता कीं खुशहाली तो की है , कर्नल ! जापानी साम्राज्‍यवादी दृष्टि से न देखो ! उसने बेहद तरक्की की है । क्या यह सब ज़ार के जमाने में होसकता था ? पर शायद तुम कहोगे कि तरक्की विज्ञान ने की है । रूस ने नहीं । जापान ने भी की थी । और अमेरिका जैसा साम्राज्‍यवादी देश भी तरक्की कर ही सकता है । उसीने पहले अणुबम

बनाया था !'

'यही मैं कहता था', कर्नल ने कहा—'यह जो हंगेरी बग-हरा में बलबे हुए हैं...लेफ्टिनेंट कर्नल ! मैं तब सिर्फ लेफ्टिनेंट था, लेकिन कोमितांग के चीन में वे बलबे मैंने देखे हैं जहाँ हमारी फौजें रहती थीं। मुझे रूस से आशा नहीं है।'

रतबीर क्षण भर चुप रहा। फिर उसने द्वार की ओर देखा और कहा: 'आशा! किसकी आशा कर्नल !'

कर्नल मुस्कराया। कहा: 'शांति की।'

रतबीर आश्चर्य-चकित सा दिखाई दिया।

कर्नल ने कहा: 'साकतवर कमजोर को कुचलता है।'

'लेकिन वहाँ तो जनता खुशहाल है।'

मत्सुओका ने सिर हिला कर कहा: 'लेकिन सोच नहीं सकती। और जब सोच नहीं सकती, या एक ही दायरे में सोचती है, तब उसमें प्रेम कहाँ जन्म ले सकता है। हम भी नहीं सोचते थे, हम भी अपने दायरे में थे। वह एशिया, जापान का स्वप्न था, यह रूस का सुपना है, मार्क्स के नाम पर जनता की खुशहाली, खुशहाली का नाम वैज्ञानिक तरक्की और तरक्की के नाम पर अक्ल पर चादर ! क्या यह मनुष्य के कल्याण का मार्ग है ? क्या तुम समझते हो कि अब संसार में युद्ध नहीं होगा ? यह उद्‌जन बम अब नहीं फटेंगे ?

उसी समय डक्टर कावसजी ने अत्यंत उत्तेजित हालत में प्रवेश किया और कहा: 'तुमने सुना ! रेडियो न्यूज है, बन्डर फुल !'

'अद्भुत !'

‘क्या है वह अद्भुत !’

मत्सुओका और रनवीर दोनों ने आश्चर्य से देखा ! रनवीर ने कहा: ‘क्या हुआ ?’

‘घोर आश्चर्य !’

‘आखिर !’

‘रूस ने कमाल कर दिया ! उपग्रह उड़ा दिया है आकाश में । अब वह दिन आयेगा जब इंसान चाँद पर जायेगा, जायेगा इस विनाश शून्य में, देखेगा जाने कितने आश्चर्य !’

वह स्फुरित था । उसने फिर कहा. ‘सचमुच ! यह रूस की जीत है !’

रनवीर ने दृढ़ स्वर से कहा: ‘डॉक्टर! रूस की जीत कह कर इस जीत को छोटा क्यों करते हैं, डॉक्टर ! यह इंसान की जीत है । जिस दिन तेन्जिग ऐवरेस्ट पर चढ़ा था- वह भारत की जीत नहीं, इंसान की जीत थी । जिस दिन शेक्सपियर ने हैमलैट पूरा किया था, उस दिन वह इंगलैड की जीत नहीं, इंसान की जीत थी । डॉक्टर ! हमें दूसरे युद्ध ने बताया है, यह दुनिया, एक दुनिया है । इसके मुस्तलिफ़ सूबे हैं । यह जो सिद्धांत-विद्धांत हैं, इन सबसे ऊपर आदमी है ।’

‘कौन सा आदमी ?’ डॉक्टर ने अचकचाकर पूछा ।

‘वह आदमी!’ रनवीर ने कहा:—‘जिसे तुम दवा देते हो । दुनिया के सारे इंसानों पर एक मर्ज में एक ही दवा लागू होती है । मलेरिया में वही क्विनीन, कैमैक्वीन, और फोड़े के लिये वही...

‘ओह यस-यस’, डॉक्टर ने सिर हिला कर कहा—‘यह

उपग्रह ! उपग्रह का नतीजा क्या होगा ?

‘होगा क्या !’ रनवीर ने कहा—‘यह कर्नल से पूछिये ।
लेकिन मैं बता सकता हूँ ।’

‘क्या !’ कर्नल ने पूछा ।

‘वह यह कि उद्‌जन बमों को समुद्र में डुबा देना चाहिये और हर जगह इंसान की तरक्की, अमन और खुशहाली की तरफ जुट जाना चाहिये... इसका नतीजा होना चाहिये कि अब सारी दुनिया में एक ही सरकार बननी चाहिये...’

‘एक सुपना !’ कर्नल ने कहा ।

डॉक्टर कावसजी हँसा । उसने कहा: ‘लेफ्टिनेंट कर्नल ! यह खबर अच्छी रही । तुमने तो पैगंबरों को मात कर दिया ! और तुम फौजी होकर भी यह बात करते हो ! फ़ौज याने जंग !’

रनवीर का मुख उदास सा होगया । उसने कहा: ‘कॉलेज में पढ़ा था, उसके बाद कभी पढ़ने का मौका नहीं मिला, डॉक्टर ! इसलिये ज्यादा मैं बहस नहीं कर सकता । केन्टीन, फ़ील्ड, और यह जिन्दगी का घिराव ! फिर भी जिन्दगी ने जो कुछ सिखाया है वह यह कहता है कि फ़ौज हिंसा है । कुछ लोगों का स्वार्थ लड़ाता है फ़ौज को । मैंने अभी महाभारत का एक अनुवाद अंग्रेजी में पढ़ा था । उस वक्त भी यही समस्या थी । और जिन्हें हम बड़ा मानते हैं—ईसा, बुद्ध, नानक, सब कहते थे हिंसा बुरी है, गांधी इसके आखिरी पैगम्बर थे । सचमुच ! हम क्यों लड़ते हैं ! लेकिन बड़ी सचाई यह है कि हम लड़ते हैं, और हम लड़ने

के लिये ही रखे जाते हैं ।’

‘और बिना लड़े’, मत्सुओका ने कहा—‘दुनिया में शान्ति रह सकती है ? क्या तब बलवान अपने से निर्बल को नहीं दबायेगा !’

‘अरे छोड़ो !’ डॉक्टर कावसजी ने कहा : ‘बात उपग्रह की चल रही थी । उसके बारे में तो सोचो । रेडियो कहता है कि अमेरिका में खलबली मच गई है । तुम नहीं सोचते कि दुनिया और इंसान आज एक बिल्कुल नये मोड़ पर आगये हैं । जब रेल बनी थी तब ! तब से कितना आगे । कितना क्या कुछ न देखेगा आदमी अब । चाँद ! मंगल ! शनि ! नये-नये सूरज ! आकाश-गंगा...विराट्...विराट्....’

रनवीर ने धीरे से कहा : ‘यों ही थोड़ा बहुत सुना है कि आइन्स्टाईन ने बताया है कि यह सारी सृष्टि सीमित है ! उसमें आदमी घूमेगा । अपने से बहुत बड़े संसार में; लेकिन क्या देखेगा वह ? Matter ! पदार्थ ! पदार्थ के अनेकों रूप ! नुमायश जैसी करामात ! पर वही मूल अणु, जो उसने धरती पर देखा है । उससे अधिक क्या देखेगा वह ? इसी धरती पर क्या कम चमत्कार हैं ।’

कर्नल मत्सुओका ने कहा : ‘यानी विज्ञान की उन्नति से तुम को कोई आश्चर्य नहीं होता !’

‘आश्चर्य नहीं होता कर्नल, खुशी होती है, लेकिन बहुत डर लगता है, कि यह तरक्की न जाने किस दिन सर्वनाश बन जायेगी । सारी सभ्यता, इंसानियत, धरती, सब आज टँगा

हुआ है ! इतनी बड़ी विजय और प्रसन्नता, और इतना भयानक भय, और संकट, शायद कभी नहीं आया था । इतना सदा है यह डर कि हम दुख भेलते हैं, और फिर उस पर ध्यान देकर सोचने का भी वक्त नहीं मिलता, और न जाने क्यों ऐसी हालत आ गई है कि एक का दर्द दूसरे तक पहुँचता नहीं, सुधारक, नेता, लेखक, अफसर, यहाँ तक कि जनता, यह मैं किसी एक देश के बारे में नहीं कहता, सब बेचैन हैं, और सब पलटता देखते हैं तख्ते को... स्वार्थ घुसा है, अहंकार बहुत बढ़ गया है, और हिंसा हमारी उन्नति की छाया बन गई है । उपग्रह ऊपर उड़ा है आदमी की उन्नति का दीपक बन कर, मगर धरती पर जो उसकी छाया गिर रही है वह क्या कम शंका दे रही है ?'

बात खत्म होते ही बाहर बरामदे में छूतों की आवाजें सुनाई देने लगीं ।

'कर्नल !' रनवीर ने कहा: 'किस्मत ने हमें मिलाया है । अब लोग आ रहे हैं । हमें फिर गंभीर हो जाना चाहिये । फिर हम आदमी नहीं रहे, राष्ट्र हो गये हैं । डॉक्टर कावसजी की किस्मत ज्यादा अच्छी है । उनके लिये हर हालत में हर आदमी आदमी ही है...'

'श्योर, श्योर...' (अवश्य) कहते हुए डाक्टर ने बाहर भाँका ।

भीतर जापानी सेना-नायक आने लगे ।

ब्रिगेडियर ने भीतर प्रवेश किया...

चारों ओर स्तब्धता छा गई ।



बैंगले में लौटते ही अर्दली ने कहा: 'हुज़ूर ! दो खत मेज़ पर रखे हैं । दूसरी डाक से आये हैं ।'

जाकर उसने खोले । एक फिर छोटे का था । दूसरा था हुक्म ?

कल ही काश्मीर जाना होगा ।

उसने छोटे के पत्र को पढ़ा—

यह फोटो भिजवाया है अम्मा ने ।

एक सरसरी निगाह से देखा । अच्छी लड़की थी ।

लेकिन उसका ध्यान ज्यादा नहीं गया । सामान ठीक करना था । तुरंत अर्दली को सूचना दी ।

एक पत्र लिखा—प्रिय छोटे,

मैं कल ही काश्मीर जा रहा हूँ । इस वक्त मुझे ज़रा भी फुर्सत नहीं है । काश्मीर से लिखूँगा ।

'पहला खत डाल दिया था ?' अर्दली से पूछा ।

'जी हाँ, वह मैंने डालने को चपरासी को दे दिया था ।'

'पूछो उससे ।'

लौट कर अर्दली ने कहा—'हुज़ूर ! वह भूल गया । मैं अभी डालकर आता हूँ ।'

'नहीं डाला है तो ले आओ !'

अर्दली मुस्कराया ।

साहब तनिक भी क्रुद्ध नहीं दीखता था । जैसे इस गफ़लत से उसे खुशी हुई थी ।

अपने हाथों से ही रनवीर ने वह पत्र अपनी डायरी में

रख लिया और एक अनजानी लँबी साँस ली ।

शाम पार्टी में बीती जहाँ मिसेज अहलूवालिया और मिस सक्सेना उसके पास बैठी हुई अपनी अमेरिका और इंगलैंड-यात्रा के किस्से सुनाती रहीं । वे अभी कल्चरल मिशन में गई थीं । रनवीर मन ही मन उनके सांस्कृतिक ज्ञान पर हँसा पर एक बड़े अफसर की बीबी थी, दूसरी बेटी ।

चलो ! होता है !

रनवीर जब बिस्तरे पर लौटा तो तीन बज रहे थे । पलकें मुदीं तो सुबह ही खुलीं ।

उसने घड़ी देखी और जल्दी से उठ बैठा ।



थक गया है रनवीर....

बहुत थक गया है ।

अर्दली कहता है: 'चाय लीजिये हुज़ूर....'

रनवीर चाय सुटकता है....

'हुज़ूर बड़ी सदी है ।' कहते हुए उसके दाँत बजने लगते हैं ।

नवम्बर का प्रारम्भ है ।

काश्मीर बर्फ़ से छाने लगा है । और यह है बिल्कुल उत्तर पश्चिम, पाकिस्तान की सीमा....

लंबी कुर्सी पर रनवीर घुटनों तक ऊँचे बूट पहने है और पाँवों पर कंबल पड़ा है ।

बाहर तूफानी हवाएँ चल रही हैं ।

'सब लोग आ गये ?'

'हाँ हुज़ूर, अपने टैन्टस् में हैं ।'

‘उस पाकिस्तानी को कहाँ रखा है ?’

‘हुजूर वह तो लँगड़ा है। घायल हो गया है। डाक्टर साहब उसे देख रहे हैं।’

रनवीर प्याला खत्म करके बढ़ाता है। ऊनी टोपी से ढकी चायदानी से अर्दली चाय ढाल कर दूसरा प्याला बनाता है। पास ही रेडियो पर नज़र जाती है...

रनवीर कहता है: ‘जरा इसे स्विच करना। कोई खास खबर...’

अर्दली कहता है: ‘हुजूर खबरों का वक्त तो निकल गया।’

‘अच्छा !’ रनवीर चौकता है।

अक्सर इधर पाकिस्तानी लुटेरे आ घुसते हैं और काश्मारी ग्रामीणों को लूटा करते हैं। उसने बड़ी कड़ी टक्कर ली है, तीन घंटे दोनों तरफ से गोली चली है और अन्त में एक लँगड़ा पकड़ा गया है। कहता है—वह आजाद काश्मीर सेना का एक बैरा है किसी अफसर का। लँगड़ा...

‘तुमने देखा है उसे ? कितना लँगड़ा है !’

‘जरा लंग करता है हुजूर ! वर्ना वह तो भाग लेता है। बड़ा निडर है हुजूर ! सिपाहियों से कहता था कि उसने जङ्ग में बड़े बड़े हमले देखे हैं, इस रेड से वह नहीं डरता।’

अर्दलो फिर कहता है—‘हुजूर, यह बड़ा नुकसान करते हैं ! काश्मीर का मामला कब सुलभ जायेगा, हुजूर ! लँगड़ा कहता था कि हिन्दुस्तान की सरकार मुसलमानों पर जुल्म करती है, मैंने कहा हुजूर, तो क्या इसीलिये तुम सीधे सादे गाँव वालों को लूटने आते हो...’

रनवीर ऊब रहा था ।

उसने कहा—‘वह लेंप ज़रा ऊँचा करदो और वह डायरी निकालो अटैची से । मैं ज़रा अब सोऊँगा । सब बाहर ठीक है न ?’

‘बिल्कुल हुज़ूर !’

अर्दली चला गया है । रनवीर बूट पहने ही कंबल ओढ़ कर तकिये के सहारे टिक कर डायरी खोलता है ।

दृष्टि पड़ती है—

इंजीनियर की लड़की है……

छोटे का पत्र है……

अब क्या रनवीर बसायेगा घर……

डायरी रखी रह गयी है……

रनवीर ने कंबल और ऊपर सरका लिया है……

बाहर तूफानी हवा की आवाजें सुनाई दे रही हैं, जो खड्डों और पहाड़ों से टकरा रही है …

क्या मुसीबत है यह ज़िन्दगी……

कहाँ दिल्ली……

फिर आसमान और हवाई जहाज……सारी दुनियाँ नीचे, बहुत नीचे से खिसलती चली गई……

फिर बसेगा घर अब ?

किसलिये……

चित्र की स्त्री सामने आ खड़ी हुई है ।

मैं इस अनजाने इतिहास में खड़ी हूँ……तुम मुझे अपनालो……
अपनालो मुझे……

मैं ! मैं बहुत व्याकुल हूँ...सच तुम्हारी आँखें मुझे अच्छी लगती हैं...पर मेरा जीवन बहुत बड़ा संघर्ष है...यह सभ्यता एक विकराल देवी की उपासना है और मैं उसमें एक बलि का बकरा हूँ...

छिः संघर्ष जीवन है । हारो मत ! मैं वह स्त्री नहीं, जो तुम्हें रोक्कूँ...मैं संगिनी बनूँगी...

डॉक्टर कावसजी के आश्चर्य भरे नेत्र...और आकाश का उपग्रह...और मत्सुओका के नयनों के आँसू...और सूदुर प्रतीक्षा करते माँ के नयन...

यह सब क्या है ?

व्यक्ति के कितने पहलू हैं...

हा हा हा हा...

बाहर गरज रहा है तूफ़ान...

बर्फानी...

पेड़ ठिठुर गये होंगे...

मत्सुओका ! कहाँ गया तेरा वह अभिमान ! किसने तुझे मनुष्य बना दिया ! पर क्या अब भी तू सचमुच मनुष्य बन गया है ?

कितनी भयानक जगह है...

खच्चर की सवारी...

नीचे देखते डर लगता था...

अथाह खड्ड । नीचे अँधेरा...जरा पाँव फिसला और फिर हमेशा के लिये एक मीठी नींद...अँधेरे खड्ड की एक स्याह अँगड़ाई...और कुछ नहीं...सिर्फ गज़ट के किसी कोने में...

लेफ्टीनेन्ट कर्नल रनवीर की मौत की खबर ।

रनवीर सिहर उठता है ।

क्यों लड़ता है इंसान ।

धन ।

राज्य ।

और माँ कहती है—बेटा ! घर बसालो ।

घर ।

क्या है घर ?

इस वक्त क्या कर रहा होगा छोटे ?

छोटे, नीलम और सुषमा ! बातें करते होंगे... कॉलेज की, सुषमा की आँखों में रंगीन सुपने होंगे । बिटिया दुल्हन बनने वाली है । कैसी छोटी सी थी । कैसी तुतलाकर बातें करती थी । और वह सब कितना सुन्दर बन गया है । अब वह दुल्हन बनेगी । काश पहुँच पाता वहाँ । बाप नहीं है । मैं होता तो माँ कितनी प्रसन्न होतीं । पर काम तो सब चलेगा ही । और मैं जाऊँगा, तब भी क्या है ? लोग सम्मान करेगे, पद का, धन का, परन्तु मेरी मुसीबत कौन देखेगा ।

माँ के नयनों का गीला स्नेह ।

वह कितना निर्मल है ।

और इन्जीनियर की यह लड़की ।

क्या करूँ मैं !

चित्र कितना सुन्दर है ।

बड़ी चाहना से खिचवाया है ।

कोई मुझे देखे और रीझे ।

रीझे और मुझे अपना ले ।

फिर मैं उसके लिये एक घोंसला बनाऊँ ।

भटकते हुए पुरुष के लिये स्त्री कितना बड़ा सहारा है ।
निर्बलता की मिठास में जीवन है, बल के गर्व में एक
भयानकता ।

बाहर तूफान गरज रहा है ।

इस समय यह बैठी होगी ।

माँ कहती होगी बिटिया ! तेरा ब्याह हो जाये तो !

कैसी बातें करते होंगे वे मेरे बारे में ?

इतने दिन तक शादी क्यों न की ?

बीस के गये थे लड़ाई पर, तो ४६ में तो लौट आये थे ।

तब से ग्यारह बरस बीत गये । फिर....

कहीं वे ये तो न समझते होंगे कि फौजी आदमी है, उसका
क्या भरोसा, जाने कहाँ कहाँ मुँह मारता होगा....

घृणित....कितना घृणित....

लेकिन कितना सत्य है....

लोग हमसे डरते हैं, हमें चाहते नहीं, उन्हें हमारे आतंक
ने दबाया है, उन्हें हमसे सहानुभूति नहीं लगती; क्यों नहीं वे
सोचते कि हम भी मनुष्य हैं....

नहीं सोचते....

क्योंकि हजार साल से सेना भारत में जनता की शत्रु
बन कर रही है....किसी न किसी राजा के स्वार्थ की भुजा

बन कर ..

सेना का इतिहास है लूट....

पर अब तो देश अपना ही है....

फिर भी नहीं मिलता है स्नेह....

सच बताओ ! चित्र में ऐसी खड़ी हो तुम जैसे....कोई खिला
हुआ सुगंधित फूल....

बीन की सी भंकार रही हो तुम....

पर मैं तो एक कठोर बन्दूक हूँ सुन्दरी....

सैनिक की तृष्णा ।

स्त्री माँस है....वासना....

नहीं....नहीं....यह झूठ है....

सैनिक के भी हृदय होता है....वह भी चाहता है एक
कोना....इस विशाल संसार में एक कोना....जहाँ मन उँडेल सके,
जहाँ उसकी हर कराह पर कोई आँख गोली हो सके....

पर कहीं तुम मेरे पद और वैभव की हो तो आकांक्षिणी
नहीं हो ! पार्टियों, दावतों की, जहाँ वैभव बोलता है, जहाँ
सिपाही तोपों का भोजन बन कर कवायद करते हुए निकलते
हैं....लेकिन क्यों....किसी महान आदर्श के लिये....करोड़ों की
शांति और रक्षा के लिये हम प्राण देते हैं....

यह भी झूठ है....

युद्ध शस्त्र-बल है....आज की दुनियाँ में जिसके पास विज्ञान
के नये आविष्कार हैं, वही जीतता है....वही दबा सकता है....
परन्तु क्या प्राचीनकाल से ऐसा ही होता नहीं चला आ रहा

है ? पहले वीरता थी...अब वीरता नहीं, घात है...शस्त्र-बल ने ही मनुष्य को चलाया है...

लेकिन क्या मनुष्य केवल शस्त्रबल से दबा है ? नहीं, नहीं दबा है । जीता वही है जिसने मनुष्यत्व के लिये बलिदान दिया है, जिसने संसार के लिये अपने को मिटाया है, वही हमारे जीवन का संबल बन कर रहा है, और जिसने शस्त्र उठाया है, वह लोक में क्या कर सका है...यदि उसने आदर्श की भी प्रतिष्ठा की है तो क्या वह आत्मसुख और संतोष भी दे सका है ?

आकाश में उपग्रह चक्कर लगा रहा है...मनुष्य की बुद्धि की जय-यात्रा, और धरती पर मैं बन्दूक लिये पड़ा हूँ... क्योंकि देश की सीमा का छोटा आदर्श भी हम अभी तक लांघ नहीं सके हैं, क्योंकि अभी तक दूसरे को हड़पने की वृत्ति का स्वार्थ बाकी है, क्योंकि इंसान अभी तक इंसान का कत्ल करने में नहीं हिचकिचाता...उसके झूठे आदर्श आदमी के बहुमूल्य जीवन से आज भी ऊँचे माने जाते हैं...माने जाते हैं क्योंकि संसार में स्वार्थ है, अहंकार है...और मनुष्य के सामने मनुष्य का मूल्य अभी तक ठीक से जागा नहीं है...

और इस भयानक हलचल में, विजय के भीषण निनाद और संघर्ष के अन्धकार भरे चीत्कारों में, व्यक्ति सुख खोज रहा है...प्यार में...कौन देगा मुझे...

तुम दोगी मुझे...

अखण्ड प्यार...

मेरी बीन....

भंकार में सृष्टि कांपेगी विभोर होकर....

यातना के पर्दे उधार दूंगा तुम्हारे सामने ...

सच, जीवन की सौगंध है, प्यार बहुत बड़ा संबल है....
दे सकोगी मुझे....

बाहर तूफान गरज रहा है ...

बर्फ भी गिर रही है ...

रनवीर की पलकें मुँद गई हैं...

एक बार भरी पिस्तौल को हाथ से छूता है....

और तब जागते हैं उसके सामने अनेक चित्र....

उपग्रह चक्कर लगा रहा है....

भविष्य की सुखद कल्पना की रानी....इंजीनियर की
लड़की....

मत्सुओका के आसू....

आज़ाद काश्मीर के नाम पर हमला करने वाले लुटेरे....

मां प्रतीक्षा कर रही है....

और बाहर तूफान गरज रहा है....और सोच रहा है
रनवीर....पिस्तौल पर हाथ धर कर....विजन पर्वत के टैंट में
पड़ा हुआ....

[दो]

सन् १९४१ ई० में दिसंबर का महीना था । बम्बई से चलते समय कुछ भी नहीं बताया गया । रेगिस्तान की लड़ाई सिखाने को वे लोग ले जाये गये थे । उनको हर एक सामान हल्के रंग का ही दिया गया था । सिर पर हल्के रंग का

कन्टोप था, किट का रंग बाह्य वस्तुओं के अनुकरण पर था । परन्तु यह अब सिगापुर था । यहाँ वह सब छोड़ दिया गया । समुद्र की अथाह लहरों पर जब वे चले तब उनको यह भी ज्ञात नहीं था कि उस समय उनके जीवन को वह जहाज कहाँ ले जायेगा क्योंकि पग पग पर शत्रु थे । उनको कुछ भी ज्ञात हो जाना संकट को निमंत्रण देना था । कब तक डैक पर रहें, वह एक दुःस्वप्न की सी याद थी । डा० महीधर के चौड़े मुख में अटका काला सिगार उसके मदरासी मुख को और भी कुछ खुरदरापन देकर धीरे धीरे धूँ में कुलबुलाने लगता था । डाक्टर हंसमुख आदमी था । उसका घर दक्षिण में कोडाई कैनाल में था । उसकी आस-पास में जमींदारी थी, जिसमें उसके खान्दान के लोग इलायची की लाभदायक और कीमती खेती किया करते थे । डाक्टर जीवन में मस्त रहकर उसका मजा लूटना चाहता था । उसने धीरे से रनवीर का कंधा थपथपाया । चालीस साल की आयु में संयम तो होता ही है, यदि उसमें एक बाह्याकृति में अनुकरणशील हास्य और हो तो फिर तरुण हृदय में वह एक सौहार्द्र उत्पन्न करने की क्षमता रखता है । रनवीर ने भी टेढ़ी करके देखा ।

‘कहाँ जा रहे हैं हम डाक्टर ?’

डाक्टर मुस्कराया ।

‘क्यों’ उसने कहा: ‘आपका कहीं कोई काम अटका हुआ है?’

एक कठोर बम की तरह वास्तविकता का विस्फोट हुआ रनवीर का स्वप्न टूटा । बाईं तरफ खलासी आपस में धीरे-

धीरे बातें कर रहे थे । जहाज की धड़कन समुद्र के पानी में फेन उगलती दूर धुंधले से दिखते किनारे की तरफ बढ़ती चली जा रही थी । अथाह पानी । रनवीर अकेला था जिसे एक ही बार खारी पानी से मिचली और उबकाइयों ने सताया था । पर कप्तान सॉन्डर्स, विलायत से आया था, फिर भी वह टेढ़ा मुँह करके कहा करता था : कमबख्त ! कमबख्त ! तो क्या इन्हीं दो शब्दों में उसकी विवशता प्रगट हो सकती थी । अधिक बोलते बोलते जैसे वह रुक जाया करता था । उसमें खतरा था क्योंकि वह अंगरेज था और यह जो कुछ हो रहा था, साहबों की शतरंज की चालें थीं, उनका वह मुखर विरोध करने का अधिकारी नहीं था ।

और फिर सिंगापुर का वह विशाल गौरव जहाँ मलयद्वी-पस्थ लोग अंगरेजों के गुलाम बन कर घूमते थे । उन्होंने रनवीर को देखा तो अविश्वास से ।

सुमात्रा और जावा के बीच सुन्दावे में अचानक जहाजी चौंक उठे । दस जहाज जा रहे थे । पाँच माल के जहाज थे । एम्प्रेस आफ इण्डिया भी था । हठात् आकाश घरघराने लगा । एक पुकार जहाज से उठी—हमला ! सब आतंकित हो उठे । रनवीर ने अपने केबिन के द्वार से झाँका । डाक्टर महीधर हँसा । उसके चौड़े दाँतों के बीच की जगह दिखाई दी । कप्तान सॉन्डर्स का मुँह पीला पड़ गया था । पहली बार जापानी हवाई जहाजों का आक्रमण हुआ था । जहाज पानी पर थरनि लगे । हवाई जहाजों की घरं घरं करती आवाज

को तड़का कर कुत्ते की कर्कश भरी भूँक उठी । एन्टी एयर-क्राफ्टगन चली थी ।

प्राण कण्ठ में आकर इकट्ठे हो गये थे । लगता था चेहरे लोहे के हो गये थे । रनवीर को लगा अब अंतिम पल आ गये थे । उसने डैक पर दौड़ कर चक्कर लगाया । पास ही लगा, ढेर ढेर पानी चीत्कार करके आकाश की ओर उठ रहा था । तीन मिनट बाद एम्प्रेस ऑफ़ इण्डिया से लपटें निकलती दिखाई दीं । हवाई जहाज़ लोट गये । डा० महीधर ने पुकारा, कुत्ते ! सूहर !

अंगरेजी में उसकी आवाज सुनकर सब एकत्र हो गये । एक सिपाही डैक पर पड़ा था । उसका गला बीच से कट गया था । बम का टुकड़ा लगा था । उसकी आँखें निकल आई थीं । उसका स्वप्न आज भी जैसे खुले होठों पर से अपनी अधूरी बात कहना चाहता था । वह नाइक था । रनवीर ने देखा । देखा मृत्यु की विकरालता ने सबके चेहरों पर भिल्ली सी डाल दी थी । पर सबसे पहले डा० महीधर मुस्कराया । उसने भरपूर स्वर से कहा: 'बदला लेंगे ।'

पर रनवीर ने देखा सब उतने पवित्र बंधन में नहीं बंधे थे । भाग्यवाद की विषमता ने उनको आक्रांत कर रखा था । सिक्ख लेफ्टिनेन्ट की आँखों का भाव स्पष्ट नहीं था , पर रनवीर को ध्यान आया । वह खाने की मेज़ पर भी अपनी अधूरी तृप्ति में ही भूला हुआ रहता था । नाइक का शव उन्होंने धीरे धीरे उठाया और समुद्र की विशाल, अतलान्त,

अपरिमित जलराशि को समर्पित कर दिया। सिक्ख हरीसिंह ने पंजाबी स्वर में कहा था: 'अरे साले कायर हैं। कायर...

पर भय उसके भीतर था। रनवीर को लगा अब जीवन एक कठोर यात्रा के समान रह गया था।

जीवन-रक्षक-एम्प्रेस ऑफ़ इंडिया से लोगों को बचाया जा रहा था। कुछ नावें भेज दी गई थीं। विस्तृत जल समूह पर धीरे-धीरे रंगबिरंगी लपटों में सुलगता जहाज देख कर रनवीर को स्वयं इस विचार पर आश्चर्य हुआ कि वह उसे वर्फ का ग्लेशियर सा लगा जो अपने सौंदर्य में पिघलता हुआ दिखाई दिया। पर यह विचार टूट गया। धूम्राँ आकाश में अब छाँटा सा बना कर फैलने लगा था। लहरों पर हरी पीली छाँह काँप रही थी। उस हल्के प्रकाश में चलती लाइफ बोटों से बैधी डरी हुई संघर्षरत आकृतियाँ काली-काली ऐसी लग रही थीं जैसे आज वे लहरों पर युद्ध करती हुई भी विक्षुब्ध नहीं हुई थीं। डा० महीधर ने रनवीर के कंधे पर पीछे से हाथ रख कर कहा: 'देखते हो?'

उस के स्वर में आतंक था। रनवीर ने कहा: 'अब? इसका क्या होगा?'

डा० महीधर ने व्यंग्य से कहा था वैसे ही, रनवीर नहीं समझा। उसके होंठ मुड़े और रनवीर ने सुना: 'आज समन्दर पर हो एम्प्रेस में आग लग गई है।' फिर वह घुटन भरो हँसी; उस समय 'एम्प्रेस' जहाज के लिये थी, या सास्राज्ञी के लिये

रनवीर नहीं समझा । पर उसके भी अंतस्थल में एक सुरसुरा-हट हुई । जहाज में खड़े-खड़े भी इंसान सचमुच ऊब जाता है ।

आकाश का अंधकार, नीचे खलासियों की बातचीत, उठते हुए मास की गंध और अफसरों की भारी झूतों वाली चाल, सबको दबाकर डा० महीधर ने धीरे से फुसफुसाहट भरे स्वर से कहा: 'अब यह तीन दिन में जल जायेगा ।'

तीन दिन ! इतना विशाल जहाज ! रनवीर को कुछ भय हुआ । यह भय एक आतंक था जिसने उसे अपनी तुच्छता का भान कराया । चलता फिरता शहर था वह जहाज ।

डा० महीधर के हाथों में सिगार हिल रहा था और रनवीर सिगरेट जलाते हुए देखता रहा । डाक्टर ने कहा: 'लेफ्टिनेट!'

स्नेह का स्वर तो पाताल फोड़ने की शक्ति रखता है । लेफ्टिनेट ने सुना. 'आज मेरा पहला बेटा ज़िंदा होता तो तुम्हारी उम्र का होता । उसकी आँख की भाँँ भी तुम्हारी ही जैसी थी ।'

अब रनवीर की समझ में आया । मनुष्य का प्रेम मूलतः भाववादी नहीं, आकृति मूलक है क्योंकि उसकी प्रत्येक कल्पना का कोई मूर्त आधार चाहिये । तब रनवीर को कालेज की बहसे याद हो आई जो वे लोग बैठ कर बड़े आराम से हेगेल और स्पिनोज़ा की लाशों पर किया करते थे ।

उसने डॉक्टर के दोनों हाथ पकड़ लिये और तब उन दोनों ने पहली बार वास्तविक सौहार्द्र से देखा । वे सब एक दूसरे के सहयोगी थे, पर मित्र नहीं थे । किसी भी संघशक्ति में स्नेह के

स्थान को कर्त्तव्य ढँक कर एक दूसरे को निकट लानेका प्रयत्न किया करता है; परन्तु मित्रता दुर्लभ है। और मनुष्य प्रत्येक परिस्थिति में वह निकट का सान्निध्य चाहता है। समुद्र की अतल लहरों पर जब दो हाथ प्रेम से मिलते हैं तब वे दुर्दम लहरें भी दीन सी प्रतीत होती है।

रात होगई थी। तीन तारीख थी। जनवरी का अँधेरा था। वे लोग ठहर गये थे। सिंगापुर थर्मा गया। देखते ही देखते सामने की इमारत धू धू करके जलने लगी। जहाज पर कोला-हल हो रहा था। ज्वानों के मुँह से हुँकार फूटती थी। रन-वीर कुत्ते की तरह थका हुआ था। आँखें भुकी जाती थीं। किनारे पर उतरने के पहले जहाज पर सुबह चार बजे उन्होंने खाना खाया। उतरने को तैयार तीर पर खड़े खड़े उन्हें चौबीस घण्टे बीत चुके थे। एकाएक फिर अ.काश घरघराया। पानी के पास ही बाँई ओर बम गिर कर फटा, जिससे जहाज पर आघात हुआ। सामने के सात फौजी ज्वान अँधे मुँह गिरे खलासी पुकार उठे—ज्वान मारा गया !

सामान लेकर सब लोग उतरने लगे। वे लगभग भाग रहे थे। हवाई जहाज लौट चुके थे। एक सन्नाटा छागया था। लाशें सामने पड़ी थीं। डा० महीधर ने पुकारा: 'लेफ्टिनेन्ट रनवीर सिंह !

‘यस सर !’ रनवीर ने पास जा कर कहा।

डॉक पर उस समय भारी भारी जूतों की प्रतिध्वनि होने लगी थी। डॉक से लगभग सौ गज दूर पर ही रेल तैयार

खड़ी थी जिसमें वे जानेवाले थे । वे लोग तेजी से गाड़ी में घुस गये । गाड़ी चल दी । रनवीर सीट पर गिरते ही सो गया । डिब्बे में गर्मी थी । दिन की धूप चढ़ आई थी जब उसकी आँख खुली । उठ कर पानी पिया । छोटे स्टेशनों पर से केले लेकर खाये । सारा देश हरा-हरा दिखाई देता था । कहीं कहीं छोटी छोटी बस्तियाँ दिखाई देती ।

कप्तान सॉन्डर्स डाक्टर महीधर के साथ बैठा विहस्की पी रहा था । रनवीर ने उनके पास जाना उचित नहीं समझा । अपने सामने बैठे लेफ्टिनेन्ट अताउल्ला से उसकी बातें होती रही ।

और ऐसे ही धीरे धीरे रात होगई । रनवीर सो गया था । अताउल्ला का भयभीत स्वर सुनाई दिया—‘लेफ्टिनेन्ट ! लेफ्टिनेन्ट रनवीर !’

‘क्या हुआ यार ?’ रनवीर ने करवट बदल कर कहा ।

‘गाड़ी रुक गई है ।’

‘गाड़ी !’ रनवीर ने उठते हुए कहा । ‘क्यों ?’

‘हवाई हमला हो रहा है ।’

अब रनवीर ने धीरे से खिड़की से सिर निकाल कर देखा । गाड़ी खड़ी रही, खड़ी रही । बहुत देर बीत गई ।

रुकती चलती चलती रुकती गाड़ी मलाका के उत्तर पूर्व में मलय के मध्य में जैसिन पहुँची, तब दो दिन बीत गये थे, पाँच तारीख थी । और जैसिन की धरती और आकाश बम-मारी से घड़क रहे थे । निरंतर जापानी जहाज हमला किया करते ।

रनवीर और अताउल्ला को आज्ञा मिली । वे बढ़े । तभी डाक्टर महीधर भी उनके साथ था । तीनों प्रसन्न थे । जाड़े के अतिरिक्त-वस्त्र साथ थे । जाकर जंगल में (mps) डम्प्स बनाये । रबड़ के ऊँचे उँचे वृक्ष उगे थे । गी हरियाली इतनी घनी थी कि धूप नीचे नहीं आती थी कार छाया रहता था । यही वह स्थान था जहाँ के कुलिशों अगरेज भयानक अत्याचार करते थे । साँभ हो गई थी, अंधेरा छा गया था । पेड़ों के बीच एक धुंधली सी छाया आई देरही थी ।

अताउल्ला ने बन्दूक उठाई और आवाज दी—‘कौन है ?’ छाया रुकी नहीं । फिर वह जैसे छिप गई । ‘लेफ्टिनेन्ट !’ अताउल्ला ने भयभीत स्वर से कहा—‘नी !’

रनवीर के रोंगटे खड़े हो गये । अचानक पेड़ों के पीछे से ने गोली चलाई और फिर एक भयानक चीत्कार सुनाई । इतना भयंकर कि दोनों थर्रा गये । फिर एक कठोर सुनाई दिया । रनवीर ने धीरे से कहा : ‘यह तो स है !’

पास पहुँच कर देखा । एक बूढ़ा आँधा पड़ा था । कराह था । साँडर्स ने कहा : ‘लेफ्टिनेन्ट ! यह मरा नहीं है, इसे त्तार करके ले आना ।’

वह चला गया । रनवीर ने मुड़ कर देखा, बूढ़ा रक्त से गया था । उसके मुख पर करुण विवशता थी । रनवीर

पास चला गया । अताउल्ला चिल्लाया: 'पास मत जाओ । वह गोली चला सकता है, रनवीर !'

और एकाएक वह बूढ़ा हँसा । उसका हास्य सुन कर रनवीर की हड्डी तक कप छा गया । मरता हुआ आदमी हँस रहा था । वह उसके सिर के पास बैठ गया । बूढ़ा क्षण भर कराहा और उसने कहा: 'रनवीर ! तो तुम हिन्दुस्तानी हो?'

रनवीर नासमझ सा देखता रहा । वह सोच ही रहा था कि क्या उत्तर दे । तभी वृद्ध ने फिर कहा- 'मैं भी कानपुर का रहने वाला हूँ ।'

कानपुर ! गंगा के किनारे बसा कानपुर ! वहाँ से यह आदमी यहाँ आया है ? आखिर क्यों? तभी उसे याद आया : जब वह कालेज में था तब वे सब प्रवासी भारतीयों के बारे में विवाद किया करते थे , सिंगापुर में भी मजदूर थे । वे सब पेट के लिये आये थे । उन्हीं में से एक था यह जिसे सॉडर्स अभी अभी गोली मार गया है । पर यहाँ से तो सब भाग चुके हैं । यह यहाँ कैसे रह गया । अताउल्ला ने कहा : 'यकीन मत करो । जासूस है, जापानी जासूस लगता है । एक गोली और मार दो...'

और कहने के साथ ही उसने दूसरी गोली दाग दी जो बूढ़े के कूल्हे को तोड़ गई । बूढ़ा भयानकता से चिल्लाया ।

'अताउल्ला !' रनवीर चिल्लाया : 'ठहरो ।'

पर बूढ़ा पछारें खारहा था । उसने भरपूर स्वर से कहा: 'जासूस नहीं...मेरा बेटा...यहीं नौकर था...जवान...उसे एक

अंगरेज मालिक ने जूतों की ठोकरीं से मार डाला था... मैं उसको हूँढने आया था ...उसकी रूह कहती रही मुझसे... वह यही भटकती है...और ...अब मैं भी...

फिर वह हिचकी लेकर रुक गया। फिर जैसे उसने मृत्यु को ठोकर देकर कहा: 'हिन्दुस्तानी हो...यकीन करो... ईमान का यकीन करो...

वह चुप हो गया। रनवीर उठ खड़ा हुआ। अताउल्ला गभीर खड़ा था। रनवीर उसके पास गया। उसके नेत्रों में भांक कर देखा। अताउल्ला की आँखें भुक गई थी। फिर जाने क्यों उन में पानी छलक आया। रनवीर हट गया और उसने ताली बजाई। सिपाही आ जुटे।

एक तम्बू में सॉन्डर्स बैठा बिहस्की पीरहा था। उसने आँख उठाकर देखा। रनवीर ने कहा: 'वह मर गया।'

'फेंक दो।' सॉन्डर्स ने सिगरेट हिलाते हुए कहा।

रनवीर जब लौटा तो सिर में कोई हथौड़े मार रहा था। वह ही शब्द बार बार गूँज रहे थे—हिन्दुस्तानी हो...यकीन करो।

विश्वास ! मनुष्य की आज एकमात्र करुण पुकार है। विश्वास करो। क्या मनुष्य एक दूसरे पर विश्वास करना भूल गया है ?'

अताउल्ला इस समय बंदूक में गोलियाँ भर रहा था। अब उसके मुख पर एक दूसरी बीभत्सा थी जैसे हत्या ने उसे जघन्य बना दिया था। रनवीर ने उसके पास जाकर कहा:

‘सिगरेट ?’

अताउल्ला ने सिगरेट निकाल कर दी । फिर वे चुपचाप सिगरेट पीते रहे । अताउल्ला ने धीरे से कहा: ‘मुझे मालूम नहीं था !’

फिर उसका गला रुंध गया । उसने रनवीर के हाथ पकड़ लिये, जैसे वह बहुत कुछ कहना चाहता था, पर सब-कुछ कंठ में अटका जा रहा था । रनवीर ने कुछ नहीं कहा । वह उसे धूरता रहा । और उसे अचानक ही ध्यान आया । भय ! अताउल्ला ने भय के कारण उसे मारा था । आत्मरक्षा से ही हत्या का प्रारंभ हुआ था । उसकी समझ में आया । युद्ध में तभी मनुष्य हत्या करता है । उसे अपने जीवन का भय होता है । अपनी मृत्यु की आशंका रहती है । और तब मरणांतक विवशता से उसने उससे धीरे से कहा: ‘मैं यकीन करता हूँ ...’

‘यकीन !’ वही शब्द । एक बार जैसे दोनों थर्रा उठे ।



जापानी बहुत पास आ गये थे । हर एक के मुँह में जैसे यही बात अटक कर रह गई थी । वे सब इसे जानते थे, पर बाहरी आकृति पर यह स्पष्ट नहीं होता था, क्योंकि इस तरह की बात करना सेना के अनुशासन के विरुद्ध था ।

बकरियाँ पास में ही चर रही थीं । वे कटीले पेड़ों पर भी मुँह मार देतीं । छोटी छोटी, काली, कोई कोई चितकबरी, पर उस खिंचकर तने हुए वातावरण पर उनकी वह मासूम मस्ती एक अजीब चीज थी, जैसे उन पर किसी का भी प्रभाव

नहीं पड़ रहा था । बच्चे मिमिया रहे थे ।

मुर्गे ने बेवक्त बाँग दी क्योंकि आदमी भी बेवक्त काम करता था । अब किसान को जगाने के लिये नहीं, वह जैसे हर क्षण चैतन्य कर देने को सिर की कलँगी उठाकर पुकार उठता था कि जैसे वह नहीं समझता कि आदमी यह सब क्यों कर रहा है । फिर उसने नीचे पड़े कूड़े में चोंच डाली और दाना चुगने लगा ।

सारा देश हरा हरा था । अनेक प्रकार के वृक्ष थे । हरे और घने पत्तों के बीच में से सूर्य की किरन कठिनाई से निकल पाती । कभी कभी तो ऐसा लगता जैसे धरती के बोरे के सिले हुए और कुछ अधखुले से मुँह के पास अटका हुआ विशाल पेड़ एक बड़ा सा सूया है और जो एकाकिनी किरन इसके सघन पत्तों के बीच को भेदकर निकल आई है वह और कुछ नहीं, उस सूए के छेद से निकला हुआ एक सफेद मोटा डोरा है । उन वृक्षों पर जब पुकारते हुए काले और लाल पंछी इधर उधर उड़ते, तब उनकी उड़ान का पीछा करने वाली आँखें भाड़ियों के पार कुछ चमकते पानी पर फिसलती और फिर हरियाली आँखों को निगल जाती ।

रनवीर को वहाँ के लकड़ी के घर बहुत प्रिय लगे । कभी उनमें आनंद से उत्सव हुआ करते होंगे । साँझ की रंगीन छाया जब नशोली आँखें लिये उतरती होगी तब इन्हीं लकड़ी के खंभों के पास कोई तरुणी खड़ी प्रतीक्षा करती होगी और तब कहीं किसी के गाने का स्वर आता होगा । उस कल्पना

की मिठास से रनवीर को न जाने क्यों एक सांत्वना मिली । परिवार की कल्पना अविवाहित को कब अच्छी नहीं लगती ? वह चाहे बन भले ही ले ! स्वच्छ थे वे घर । सामने बरामदा था, खभों पर टिका, छतें ढलुआ थीं, कहीं लकड़ी की, कहीं टीन की । और उनकी भीतों पर कहीं कहीं बाँस की बुनी चटाइयाँ थीं । जो घर दुमज़िले थे उनमें ऊपर चढ़ने की सीढ़ियाँ भी लकड़ी की ही थीं ।

रनवीर ने देखा वे सब घर अब खाली पड़े थे, क्योंकि अब फौजी आ गये थे । और फौज का आदमी दूसरे के परिवार में जंगली समझा जाता है ।

धीरे - धीरे अफ़सर आने लगे । उनके चेहरों पर कठोरता थी जैसे सब के सब लकड़ी में से काट कर बनाये गये हैं । अफ़सर होने पर भी रनवीर अभी तक उस आकृति से मन ही मन घृणा करता रहा है । यह किस उपचेतन की उपेक्षा है वह स्वयं नहीं जानता, उसे उससे घृणा है । इतना ही ज्ञान उसके पास शेष है । क्यों नहीं मनुष्य का मुँह सहज बन जाता, यह उसके लिये आज तक एक समस्या बनी हुई है ।

इस पल्टन में जाट, राजपूत, गढ़वाली सभी थे । वे जाट और राजपूत जो राजपूताने के सामंतीय समाज से आये थे और गढ़वाली ! वे तो सिर्फ़ जैसे मरना जानते थे । रनवीर भी आधुनिक कालेजों में से एक में पढ़ा था जिसमें अंगरेजों की तारीफें पढ़ाई जाती थीं । उसे वे विशेष कारण स्पष्ट नहीं थे,

जिन्होंने मनुष्य को इतना संकुलित बना दिया था कि वह पेट के ऊपर की सोचना ही भूल जाये। मीटिंग समाप्त हो गई। आदेश दे दिये गये और जगहें ली गई। पल्टनें फैल गईं।

हरी धरती पर भारी बूट आहिस्ता आहिस्ता इधर उधर चलने लगे। कुछ दूर पर जिधर पेड़ कम हो गये थे, गढ़वालियों ने झाड़ियों की आड़ ली और पेट के बल लेट कर बढ़ने लगे।

इसी समय एक काला मगर लंबा आदमी एक पेड़ के पीछे दिखाई दिया। कुछ विशेष प्रकार का इंगित करके वह आगे बढ़ा। बंदूक की नली अताउल्ला ने नीची करली। डा० महीधर ने कहा—‘अपना आदमी है यह !’

रनवीर को उस अपनेपन में एक विचित्रता का सा अनुभव हुआ। क्या यह अपना आदमी है ? हम अँगरेजों की भेड़ें हैं और यह एक दूसरे देश में हमारी ही जैसी एक भेड़ और है। पर वह बिचार बाहर नहीं निकल सका। यह जैसे श्मशान-साधना थी, जिसका प्रारंभ ही मनुष्य की खोपड़ी की हड्डी में चर्बी जला कर दीपक जलाना था।

अताउल्ला चिंतित था, कहा : ‘शायद खबर लाया है।’

खबर ! युद्ध का समाचार उस समय के पाये हुए तार के समान होता है जिसमें कोई व्यक्ति घर पर मरते हुए संबंधी को बड़े ही जरूरी काम से छोड़ कर जाता है, और हर क्षण उसे यही लगता है कि उसका वह संबंधी मर गया। उस तार को खोलते हुए उसका अन्तर्बाहर एक अज्ञात आशंका से कांप उठता है।

रनवीर को यही अनुभव हुआ। हृदय एक बार भीतर ही भीतर घड़क उठा। कलेजे में हूक सी उठी। थूक मुँह में आगया, जो उसने साहस करके भीतर निगल लिया।

वह लंबे दाँतों वाला आदमी पास आगया। उसने सलाम किया। उसका मुख देखकर रनवीर को घृणा हुई। देखने को ऐसा लगता था कि यह आदमी अपने लाभ के लिए किसी को भी धोखा दे सकता है, किसी का भी ठंडे दिल से खून कर सकता है, क्योंकि उसकी आँखों में एक चमकनी हुई सफ़ेदी थी जिसका हया से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

रनवीर ने कहा कुछ नहीं। आँखें उठाईं, जिनका अर्थ था कहो।

वह आदमी बढ़ा और भुककर कहा: 'दुश्मन सिर पर है।'।

डा० महीधर मुस्कराया। जैसे यह बात नितांत सूखता की है, इसे कौन नहीं जानता। अताउल्ला ने अधीरता से कहा: 'किधर है? तुम कहाँ थे?'

वह आदमी बोला: 'मैं उस तरफ़ के पेड़ों की आड़ से बच कर आ रहा हूँ।' उसने हाथ से इशारा किया।

'तुम्हें जापानियों ने टोका नहीं।'।

'मैं उनका दोस्त जो बना हुआ हूँ। वे मुझे अपना समझते हैं।' उसने उत्तर दिया और उसके दाँत बड़े बड़े पूरे के पूरे जैसे होठों से निकल आये जैसे थैले के कौने को सरकाते ही भीतर के कीड़े दिखाई दे गये हों।

'ऐसे ही जैसे तुम हमारे दोस्त बने हुए हो?' अताउल्ला

ने भी तरेर कर कहा ।

रनवीर के मन की बात निकली । सिर हिलाया और सिगरेट दियासलाई पर ठोक कर ऐसे मुँह में लगाई, जैसे उसने बंदूक की गोली को हाथ में उठाकर परखा था ।

आदमी सकपका गया । उसके मुँह से वह विश्वास की हँसी ऐसे लुप्त हो गई जैसे कांच के बहुत से चमकते टुकड़ों को भाड़ू ने समेट कर कोने में कर दिया और वे धूल में ढँक गये ।

रनवीर ने आगे बढ़कर कहा : 'पोजीशन बताओ ।'

आदमी धरती पर बैठ गया और धूल में उंगली से कुछ रेखाएं बनाकर समझाने लगा । अताउल्ला देखता रहा । आदमी इस समय बिल्कुल सही मालूम दिया ।

डा० महीधर ने सिगार का कश खींचा, और फिर पेट पर हाथ फेर कर कहा: 'उसके आगे मुग्नर है ?'

'जी हाँ नदी है ।'

'ठीक है, तुम जा सकते हो ।' रनवीर ने कहा ।

आदमी के होंठ कुछ चौड़े हुए और फिर उसने उसी घृणित ढँग से मुस्करा कर सलाम किया । रनवीर को लगा कि वह उस हँसी को नहीं सह सकेगा । वह किसी की आत्मा का जैसे एक सड़ा हुआ शव है जो अपने आपको खा लेने में भी संभवतः नहीं हिचकिचाएगा । जघन्य ! कितना वीभत्स ! पेट ! पेट के लिये !

अताउल्ला ने उसकी ओर एक नई सिगरेट निकाल कर

फेंक दी। आदमी ने भुककर उठाली और फिर उसने आग की ओर देखा। अताउल्ला ने अपनी जलती सिगरेट उसकी ओर फेंक दी। उस आदमी ने धरती से उसे उठा कर सहर्ष ही अपनी सिगरेट सुलगाई और फिर वह मुस्कराया।

जब वह चला गया डा० महीधर ने कहा—‘सूहर !’

पर अताउल्ला को इतना अवकाश नहीं था। कहा: ‘अब?’

इस अब का उत्तर इनमें से किसी के पास नहीं था। युद्ध में जीवन तो घने पेड़ों की भुकी डालियों के बीच बेतहाशा भागते ऊँट की सवारी है, हर क्षण दचके देती है, और कोई नहीं जानता कि उँट किधर भागेगा या कब कोई डाली ऊपर से टकराकर सवार का सिर फोड़ देगी।

रनवीर ने कहा: ‘क्या यह आवश्यक है कि हम जापानियों को इधर से देखें?’

‘फिर?’ महीधर ने कहा।

‘मेरी राय में इसके पीछे कुछ दूर चलकर देखा जाये।’
डा० महीधर ने कहा। विवाद नहीं हुआ।

अताउल्ला पीछे पीछे चलने लगा। रनवीर और महीधर आगे आगे रहे। दोनों ने देखा दूर वह आदमी अब हरे पेड़ों की आड़ में हो गया था और धीरे धीरे वह उस सघन हरीतिमा में छिप सा गया। फिर कुछ नहीं दिखा, सिर्फ हिलते हुए पत्तों और उड़ते हुए एक आद पक्षी ने क्षण भर निस्तब्ध की चौखट पर ताल दी और उनको चौकन्ना कर दिया।

अताउल्ला ने धीरे से कहा: ‘पच्चीस वायें।’

दोनों एकदम बैठ गये । कुछ देर अताउल्ला भी बैठा रहा । फिर सिर उठाया । कुछ नहीं था ।

डा० महीधर ने हँसकर कहा: 'शाबास ! आपने फ़ौरन नम्बर भी बोल दिया, गोया आँखें न हुईं ?'

रनवीर ने मुस्कराकर सिर हिलाया ।

तीनों के हृदय में आविर्भूत आशंका अभी दबी नहीं थी । महीधर हँस ही रहा था । उस हास्य में कठोरता उतनी नहीं थी जितना अपने आपको बहला देने का प्रयत्न था । तीनों उठ खड़े हुए ।

रनवीर ने पहली बार अनुभव किया कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अलग अलग विचारधाराएँ हैं । परिस्थितियाँ मनुष्य को प्रभावित करती हैं । कुछ लोग बुद्धिहीन ढंग से उनका अनुसरण करते हैं, कुछ लोग उनमें बहते नहीं, धार में खेतें हैं । मनुष्य वे ही हैं, उसने कहा ।

पाँव में कुछ कड़ा कड़ा सा चुभा । रनवीर बैठ गया । उसको इस प्रकार बैठते देखा तो दोनों ने चौंक कर इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई ।

रनवीर ने जूता खोला । और अपने मोजों पर हाथ फेर कर उन्हें सहलाया, फिर जूते एड़ियों पर से धरती पर ठोके और उनके भीतर की धूल और कंकड़ निकाल दिये । फिर वह क्षण भर यों ही बैठा रहा । डा० महीधर ने मुस्कराकर कहा : 'तुम शायद थक गये हो ?'

'नहीं', रनवीर ने अँगड़ाई ली । वह थकान इतनी प्रास-

गिक थी कि वे सब हँसे । फिर फीते बाँधकर रनवीर उठ खड़ा हुआ ।

वे लौटने लगे ।

‘इधर से लौटना मुझे ठीक नहीं लगता ।’ रनवीर ने इशारा किया ।

‘क्यों ?’ अताउल्ला ने पूछा ।

‘इधर आओ ।’ डा० महीधर ने एक ओर मुड़ कर कहा ।

दूर बंदूक चलने की आवाज आई । अताउल्ला भपक कर बैठ गया । रनवीर भी । डाक्टर पास खड़े वृक्ष के तने से सट गया ।

एक भी नहीं बोला ।

बन्दूक की दूसरी गोली चली और कहीं कोई चिल्लाया । उस स्वर में एक बीभत्स उन्माद था । फिर कुछ नहीं, जंगल की सांय-सांय । तीनों छिप कर बढ़ चले ।

सामने चौड़ी मुअर नदी बह रही थी । प्रशस्त धारा पर आकाश के ऊदे बादल तैर रहे थे । किनारे पर भीनी भीनी बौनी भाड़ियाँ थीं जिन की परछाईं पानी पर लबी लबी होकर ऐसी गिर रही थी, जैसे किसी के हाल के नहाये शुद्ध हाथ पर उगे हुए घने बाल हों ।

नदी में स्टीमर बह रहे थे । वे सब इस समय संयुक्त राष्ट्राँ के ही अधिकार में थे । उनसे इन लोगों को किसी प्रकार का भी भय नहीं हुआ । स्टीमर पानी पर गहरी छायाएँ डालते हुए धीरे धीरे चलते से दिखाई दे रहे थे । उन पर कुछ फौजी और कुछ नागरिक थे । दूर से वे सब काली छायाओं से ही

देखाई देते थे ।

रनवीर देखता रहा । उसे वह सब अच्छा लगा । प्रशान्त गारा पर जैसे एक विराट जलचर ऊर्ध्व श्वास खींच कर बढ़ा ना रहा था ।

स्टीमर की गति मंथर थी ।

‘वह हमारा है’, डाक्टर ने कहा ।

‘हूँ ।’ अताउल्ला ने उत्तर दिया । ‘अपना है ।’

फिर दोनों ने रनवीर की ओर देखा । रनवीर इस समय उसके पीछे के घिरते अंधकार को देख रहा था । उसने कहा: लेकिन वह सीधी राह नहीं आरहा है ।’

महीधर ने होठ मोड़े । फिर दोनों कूलहों पर हथेलियाँ रख कर घूर कर देखा । उसकी दृष्टि को आकाश में आती घर-घराहट ने रोक दिया और वह चौंक कर इधर उधर देखने लगा ।

अचानक आकाश में बममार दिखाई दिया ।

रनवीर ने कहा: ‘डाक्टर !’

‘घबरा रहे हो !’

‘नहीं !’

भयानक विस्फोट हुआ ।

कोई कहीं चिल्लाया । वह मृत्यु का भेदी नाद था...

घहर गूँजती रही, गूँजती रही, भय के विकराल अट्ट-
हास सी...

सब छिप गये । रनवीर एक पेड़ के नीचे आँधा लेट गया ।

अताउल्ला एक ओर हरियाली में पड़ा था । डाक्टर इस-
बार नीची भूमि में धीरे धीरे उल्टा लेटा हुआ सरक रहा था ।

कुछ देर बाद साइरन बजने लगा । फिर कुछ कुत्ते की सी
भूँक सुनाई दी ।

सब साफ़ होगया । तीनों अपने अपने स्थान से निकले ।
मुस्कराये । रनवीर ने महीधर के कंधे पर स्नेह से हाथ रखा ।
विपत्ति में संग रह कर पार उतर जाना !

रनवीर ने देखा स्टीमर डूबने लगा । उसके भीतर के
आदमी पानी पर डूबते उतगते बहने लगे । वे प्राणपण से
किसी प्रकार तीर पर पहुँच जाने का प्रयत्न कर रहे थे ।
स्टीमर के टूटे टुकड़े कुछ पानी पर बहे जा रहे थे, कुछ डूब गये
थे । स्टीमर टेढ़ा होगया था और अब उस पर कोई नहीं था ।
सारा सामान यों ही पड़ा रह गया ।

‘सब खत्म होगया ?’ रनवीर ने पूछा ।

‘अभी से ? डाक्टर ने कहा ।

‘तो कब तक !’

अताउल्ला हँसा । क्या हँसी थी वह भी ! विचित्र !

रनवीर नहीं समझा ।

डा० महीधर ने कहा: ‘घूम कर चलो ।’

‘इधर से ?’ रनवीर ने कहा ।

‘हाँ ।’

पन्द्रह मील का रास्ता बढ़ गया था ।

जहाँ यह लोग टिके हुए थे, वहाँ जंगल था ।

रनवीर अपने देहात के मकान के बारे में सोच रहा था ।
हाँ जब वह जाता था तब चिकनी के चूरे और इलायचियों में
से हुए पण्डित जी आवाज फर्सी करते थे । किसी प्राचीन
ल के पर्दादार चौमहला के पास खड़े महलदार की तरह
हुआ पुजारी मुस्कराता था ।

तांबे के मटके, देग गगरे, पतिलियाँ, लोटे, नेवाड़ी का
लंग, मसहरी, तरुतों की चौकियाँ, फर्श फरुश, शीशा, आलात
ब उसके सामने धूम गये । उसके मित्र नवाब रहमत अली
हाँ हमेशा एक ही लहजों से बात करते थे । चिट्टीनबीस और
साहिब यही उनके शहर और गाँवके साथी थे । वे सदैव
लाव, मुजाफर, बूरानी, मुतंजम, सफेदा, शीरबिरेज बाकर-
नियाँ, सालन, कवाब, अचार, मुरहेब, मिठाइयें, दही, बालाई-
सी ही नेमतों के बारे में चर्चा करते थे । दो जानूँ बैठे मौलवी
मेशा मुगलानियों, पेशखिदमतों, महरियों और दायाओं के
भाव को याद करते थे । गावतकियों में बेलें चमेली की
हकें लगा कर, सुथरी चाँदनी खींच कर, नक्शी पानदान,
लदान, खुशबूदार गिलोरियाँ, खासदान और उगालदान,
से हुए हुक्के, भलमल आईने, उम्दा तस्वीरे, छत में छतगा-
याँ लगी हुई । झाड़, उम्दा हॉडियाँ, कँवल, यही वैभव का
र में अवशेष था ।

और फिर उसे पुराने कमरे में लटकी उस फोटो की याद
लगी, जिसका रंग धुंधला पड़ गया था, जो एक बेर्या
1, जो मलमल का दुपट्टा, गरंट का बड़े पायचों का पायजामा,

फँसी कुर्ती, नाक में हीरे की कील, कान में सोने की अतियाँ, हाथ में कड़े, गले में मोतियों का कण्ठा पहने थी। बाहीक्रेब का दुपट्टा बगल में रखा था। द्वारचोबी तुलबाँ जोड़ा, बन्नत टँकी हुई, पास था। दूसरी तवायफ़ के साथ छोटे बाबा तंजेब का अंगरखा, सदरी, नुक्केदार टोपी, चुस्त घुटन्ना, सन्दली दुपट्टा काँधे पर डाले खड़े थे। वेश्या की नाक में नथुनी, ऊँची चोटी गुँथी, बाफ़ का शाल वा सूबाफ़...याक़त का नगीना...फीरोज़ की अंगूठी...

जहाज़ी सुपारी के अद्वे कोरे मटके में धर कर, फिर आग पर धर कर जल्दी-जल्दी हाथ चला कर गर्म करके, ताकि पक न जाये, उतार कर कोरे मिट्टी के बर्तन में पीली मिट्टी से बद, छाँव में रखकर—जो तैयार की गई थी, वह सुपारी, पान असली देसी रेत में रखा हुआ अंडेदार, गिरे तो खिलेमा... मुँह में पानीदार...बस यही दो चीजें पण्डित जी की ज़िदगी की मीनारे थी। और रनवीर...

मृत्यु के मुख में...

ज़िदगी न हुई हरामजदगी हुई...रात की नफ़रत और मजबूरी में इसकी शुरुआत हुई, मगर जब यह आगई तो मजबूरी आज़ादी और नफ़रत प्यार में बदली हुई दिखाई देने लगी... कोई करे भी तो क्या...

नवाब ने कहा था: कोरे बर्तन में पपरिया कत्था औटाकर बनालो, छानलो, एक कोरे सकोरे की मोटी ठीकरी में खस का इत्र बसा लो, उसे कत्थे में डाल दो और बत्ते का मुँह बाँधकर घर दो...कोरे मिट्टी के बर्तन में असली मिजपूरी

कंकड़ का चूना बुझाओ, मोटी ठीकरी में केवड़े का इत्र बसा कर डाल दो । दोनों के बर्तन पारी में धरकर पीली मिट्टी से संधें बंद कर खुश्क छाँह में धर दो

और अब....

हरी धरती में बूट बज रहे हैं.... वे धीरे धीरे कदम रखते हैं....

हठात् गोलियों की बौछार आई ..

वे लेट गये....घना जंगल....

रनवीर भाड़ी में घुस गया .. किसी कीड़े ने हाथ में काट खाया है....परन्तु....प्राण....हाय भीषण पीड़ा हो रही है.... वह भाड़ी में घुसकर उस कीड़े को बूट से कुचलता है....कितना छोटा सा कीड़ा....कितनी बड़ी मार मारता है यह....

धाँय....धाँय....

अचानक चीत्कार सुनाई दिया....

अताउल्ला और महीधर नहीं देखते....

रनवीर छिपा हुआ देखता है....

अब अताउल्ला और महीधर के चारों ओर जापानी सिपाही खड़े हैं....दो जापानी सौन्डर्स का शव लाते हैं....

एक जापानी हँसता है और अपने पाँव का जूता सौन्डर्स की मुर्दा छाती पर रखता है....अब सौन्डर्स, 'कमबख्त....कमबख्त' नहीं कहता....

जापानी अपनी अजीब अँगरेजी में कहता है: 'तुम हिदुस्तानी हो....या इंगरिस....'

‘हिंदुस्तानी……’ महीधर कहता है ।

‘देखो, यह एशिया का दुश्मन है, जापानी कहता है, ‘हम दोस्त है……लाग्रो हाथ बढ़ाओ……’

महीधर हाथ पकड़ता है ..

सौंडर्स मर चुका है……उसका भय नहीं रहा .

अताउल्ला कहता है, हिन्दी में .

‘डाक्टर ! यह झूठ है……फँसो मत . कल फिर हमारा जाना पहचाना साहब जीत सकता है……हम इनसे मिल गये तो खैर नहीं है . बफ़ादारी .

महीधर हँसता है और कहता है : ‘बफ़ादारी……’

जापानी सशक दृष्टि से देखता है । अताउल्ला से कहता है : ‘हम दोस्त है .

उसके बड़े हुए हाथ को अताउल्ला नहीं पकड़ता ..

जापानी को सहसा ही क्रोध हो आता है

‘धाँय !’

ठंडे दिल से एक गोली ।

बहुत मामूली तरीके से अताउल्ला का दायाँ फेफड़ा फटता है । वह गिर जाता है । महीधर की आँखें काँपती हैं……

वे चले जाते हैं । पीछे पीछे महीधर…… कुत्ते सा……रनवीर निकलता है……

वह सौन्डर्स के शव को देखता है, फिर अताउल्ला को । अताउल्ला का हाथ हिलता है …

बैठकर रनवीर उसे उठाता है । अताउल्ला की आँखें खुलती हैं……यह कैसा भाव है आज उसके नेत्रों में……

‘अताउल्ला……’रनवीर कहता है ।

अताउल्ला अपने होठों पर जीभ फेरकर कहता है……

‘वे भी……वही है …’ फिर वह कह नहीं पाता……फिर बड़ी मुश्किल से कहता है…… ‘यकीन करो …’

वह मर गया है ।

रनवीर ने शव को लिटा दिया है……

यकीन !

वही शब्द……

इतनी जल्दी बदला……

इतनी जल्दी……

रनवीर खड़ा होता है……अब वह क्या करे ? अपने आदमी कहाँ मिलेंगे : वह तो अकेला रह गया है …वन में अकेला, सामने दो लाशें; विचार आया……खोद कर गाड़ दे……

फिर वह बैठकर उनके कारतूस निकाल लेता है, फिर जेबों से नोट …

और फिर एक तरफ बढ़ता है ……उसकी इच्छा है किसी तरफ अपने आदमियों से मिल जाये …



रात हो गई । वन की गहनता में रनवीर डरने लगा ।
एकांत……भयानक……

वह वही आ गया । उसने अताउल्ला और सौंडर्स की जेबों से निकाले रुपये फिर उन्हीं की जेबों में रख दिये और दोनों मुर्दों के बीच में लेट गया……

वह इस समय निश्चिन्त था...जैसे अपनों में सो रहा था ।
भरी बटूक उसने सीने पर आड़ी रखली और हाथ उस पर
जमाये ऊपर देखता रहा...वह सो गया था...

❀

❀

❀

मैं रनवीर ही हूँ । मुझसे मेरा अधिक परिचय मत पूछो ।
क्योंकि मेरा कोई विशेष परिचय है भी नहीं ।

जो कहता हूँ, वह सुनो । मैं लाखों करोड़ों में से एक हूँ ।

मैं केवल एक सत्य तुम्हें बताऊंगा कि यातना जब मनुष्य
को सताती है, तब उसमे से निकल कर मनुष्य प्रतिहिंसा की
क्षुद्रता में नहीं पड़ता ।

❀

❀

❀

कर्नल ने कहा: 'ठीक है ।'

लंच समाप्त हो चुका था ।

कहे मुताबिक जहाज ११ बजे ही आये, मगर अपने नहीं,
वे जापानी थे । बममारी होने लगी । मैं झपट कर मेज के
नीचे हो गया । कर्नल और ब्रिगेडियर अपनी रक्षा नहीं कर
सके । मैंने उन्हें बम फटते ही गायब होते हुए देखा । बाहर
सिपाहियों में टक्कर शुरू हो गई थी । मशीनगन की खड़खड़
खड़खड़ होती थी और कहीं कर्कश बन्दूकें चलतीं । हाहाकार
गूँज रहे थे ।

जब मैं बाहर निकला केवल एडजूटेंट बचा था । बाकी
सब फौज मारी गई थी ।

हम दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा । आग के शोले

अब भी भड़क रहे थे । धूआँ उठ रहा था ।

हम दोनों निरंतर भागने लगे । घना जंगल था ।

एडजूटैन्ट एक पेड़ की जड़ में पाँव अटकने से गिरा ।

उसका मुँह धरती से वेग से टकराया । दाँत टूट गये ।

लहू टपकने लगा । मैंने उसे कराहते नहीं सुना । वह मूर्च्छित था, या मर गया था, यह पता नहीं चला । किंतु रुकने में खतरा था । मैं अकेला भाग चला । जंगल और घना होता चला गया । मुझे भूख लगी । मैं जड़ियाँ उखाड़ उखाड़ कर खाने लगा । शायद उस बीहड़ जङ्गल में मैं चार दिन तक भटकता रहा । उस समय मुझे मालूम पड़ा कि प्रकृति में वन नामक वस्तु कितनी भयानक होती है । सरे साँभ अँधेरा साँय साँय करने लगता । मैं किसी पेड़ पर चढ़ जाता और उसी की डाली पर सो जाता । वह सब बिल्कुल साधारण सी बात हो गई थी ।

पाँचवें दिन मैं जङ्गल में थक कर बैठ गया था । शायद ऊँघ गया था । एक घने पेड़ से मेरी पीठ टिकी थी ।

अचानक मुझे किसी ने जगाया ।

आँखें खोलो ।

हम दोनों लिपट गये ।

‘तुम कैसे आये ?’

‘मैं भी पीछे भाग रहा हूँ । उल्टा चल रहा था । तुम दिखाई दिये ।’

बस, उसने इतना ही कहा । वह मऊ में साथी रह चुका

था मेरा । फिर बैठकर उसने कहा: 'यहाँ दलदल ही दलदल है । कुछ खाओगे, मेरे पास राशन बचा है ।'

हम खाने लगे । उसने कहा: 'यहाँ की धरती को देखकर पता नहीं चलता । लगती है मासूम है, लेकिन बड़ी कातिल होती है । जिस जगह घास न हो, वहाँ पानी को छिछला समझ कर भी पाँव न रखना । मैं फँसते फँसते बचा । उफ़ । वह दलदल था । जितना ही मैं निकलने की कोशिश करता, उतना ही घुसता जाता था । तुम नहीं सोच सकते । मैं रो दिया । इस परदेश में दलदल में धुट धुट कर मरना ?'

वह कहते कहते सिहर उठा ।

उसने फिर कहा: 'मैं आठ आदमियों को मार चुका हूँ । जापानी घूम रहे हैं यहाँ मेरे पास नक्शा है, कम्पस नहीं ।

हमने नक्शा देखा । फिर उठ खड़े हुए । कुछ दूर जाने पर देखा, जानवरों द्वारा अधखाई लाशें पड़ी थीं । उनकी राइफलें बिखरी पड़ी थीं ।

'मेरे पास नहीं है ।' कहकर मैंने राइफल उठा ली ।

मऊ के साथी ने कहा: 'रात यहीं ठहर जाएं । देखो अंधेरा हो गया है ।'

हम लोग मुर्दों की बगल में सो गये । वह इन्सान नहीं थे, लेकिन कभी इन्सान रह चुके थे । अब भी अगर उनसे हरकत की उम्मीद न की जाये, तो वह इन्सान की सबसे करीब की चीज़ थी ।

घनी हरियाली में तड़का हुआ । मऊ का साथी उठ बैठा ।

उसने मुझे जगाया ।

मैं बैठ गया ।

उसने धीरे से कहा: 'जापानी ।'

मैंने देखा ! वे चार थे, हमारे सामने से निकल रहे थे ।

'क्या करें ?' उसने कहा : 'मारू ?'

मैंने कहा: 'ठहरो ! अभी पता नहीं, पीछे न जाने कितने और होंगे ।'

'लेकिन यार मुझे लालच ने घेर लिया है ।'

'क्यों ?'

'मैं इन्हें मारना चाहता हूँ ।'

मे मुस्कराया । कहा: 'निशाना साधो ।'

धाय ! एक मरा ! धाय ! दूसरा मरा ! एक चीत्कार,
फिर दूसरा !

उत्तर में गोली आई—धाय

हम जंगल में झुके झुके भागे और झाड़ियों में घुस गये ।
वह क्षण बड़ा अनमोल था ।

आयरहिताम की छाया काली थी । वहाँ तालाबों में काला पानी था । मेरा साथी रुक गया । उसने कहा: 'वह देखो !'

मैंने देखा । काली छायाएँ चल रही थीं ।

'कौन हैं ?'

हम सरकने लगे ।

साथी ने हर्ष से कहा: 'वह नदी पर हमारे आदमी हैं ।'
कम चौड़ी नदी का पानी बहुत तेज था । उसी समय जापानी

हवाई जहाज सर पर मँडराने लगे । बमों के धड़ाकों से धरती हिलने लगी । बहुत से सिपाही पानी में कूदे और हमने उन्हें धारा की चपेट में चिल्लाकर बह जाते देखा ।

रेड खत्म हुई ।

साथी ने कहा: 'सब मर चुके हैं ।'

मैंने कहा: 'अच्छा हुआ, हम वहाँ नहीं थे ।'

'अब!'

हमने एक दूसरे की ओर देखा ।

'उधर चलना होगा ।'

'मैं नहीं जाऊँगा ।'

'क्यों?'

'इस पानी में तुमने देखा नहीं ? तैरना नामुमकिन है ।'

मऊ का साथी हँसा । उसने कहा: 'यार तुम भी! चलो !

हम पास गये, तो वह मुर्दा सिपाहियों के साफे इकट्ठे करने लगा, फिर उसने उनको कसकस गाँठे लगाकर एक रस्सी बनाई और कहा: 'अगर वे जिंदा बच रहते तो हमारा पुल कैसे बनता ?'

हम दोनों हँसे ।

फिर उस रस्सी को एक पेड़ से बाँधी । पीछे बूटों की आवाज हुई ।

वे हमारे आदमी थे । उनके साथ आस्ट्रेलिया-वासी सैनिक भी थे ।

एक सैनिक ने कहा: 'यह रस्सा छोटा पड़ेगा, क्योंकि

धारा में हम सीधे पार नहीं कर सकेंगे, तिरछे उतरना होगा । राय पक्की थी । अब जिन्दे सिपाहियों ने अपने साफे हमारी रस्सी में बाँधे, मैं साफा पकड़ कर बढ़ा, मऊ का साथी मेरे साथ था, हम जल में कूदे । बड़ी तेज़ धार थी । हम भीम वेग से तैरने लगे, किन्तु धार हमें धक्का देरही थी । इसी समय कई सिपाही पानी में कूदे और उनकी देखा-देखी सब कूद पड़े । सबने साफ़ा पकड़ लिया ।

मऊ का साथी चिल्लाया: 'सब मत पकड़ो....पेड़ से रस्सा खिच कर टूट जायेगा....'

किन्तु कौन सुनता था ।

मऊ का साथी गाली देने लगा....

आगे के हम पन्द्रह आदमी किनारे पर पहुँचे । पहुँच कर धरती पर थक कर गिर गये । उस समय अचानक एक हाहाकार सुनाई दिया । रस्सा टूट गया था । बाकी के लोग पानी में बह गये थे । कुछ देर हम चुपचाप पड़े रहे । बोले नहीं । न एक दूसरे की तरफ देखा ।

फिर मैं उठा । मुझे देख कर वे सब उठे और हम फिर चलने लगे । बानूपहात आगया था । नगर खाली पड़ा था । जापानियों के आने का डर था । सब पहले ही से भाग गये थे ।

मैंने कहा: 'वह देखो ।'

सेना के कुछ लोग वहाँ मिले । उन्होंने हमें देखा । हाथ मिलाये । कहा: 'यहाँ आखिरी मुकाबिला होगा ।'

लेकिन उसी समय घंटी बजी । अन्दर से एक ने निकल

कर सूचना दी : 'रिट्रीट !'

रिट्रीट ! रिट्रीट !

'कब तक पीछे हटना होगा । इससे अच्छा तो मर जाना हैं ।' मऊ का साथी बड़बड़ाया : हार को भी जीत समझने का धोखा । हम भाग रहे हैं और पकड़ में न आने की चालाकी को अपनी जीत समझ रहे हैं ।'

एक उदास सैनिक ने कहा : 'जापानियों ने मलय घेर लिया है ।'

'किस तरह ?'

'नावों से ।'

'किसने कहा ?'

'हैडक्वार्टर से पता चला है । हुकम है अपनी बन्दूकों की रक्षा करो ।'

अपनी नहीं ? मैंने सोचा । फिर सोचा, यहाँ हम बन्दूक ही तो हैं ?

२६ जनवरी को युद्ध समाप्त हो चुका था । २६ को हम सिंगापुर पहुँचे । किन्तु रास्ते भर हर चौथे पाँचवें घंटे हवाई हमला होता था । सिंगापुर में बड़ा विध्वंस हुआ था । हथियार और गोलियाँ खत्म हो चुकी थीं ।

३१ जनवरी को मलय और सिंगापुर के मिलन का पथ कौजवे तीन जगह से एलाइज़ (संयुक्त कमान) ने बारूद से उड़ा दिया । पेट्रोल में आग लग गई । चारों ओर अँधेरा छा गया । भयानक धुआँ घुटने लगा । ६ दिन तक वह आग

जलती रही । फिर पानी बरसने लगा । वह पानी उस काले अंधेरे से धुँए में से बरसता दिखाई नहीं देता था ।

नयी यूनिट बनी । में उसका एक कंपनी कमान्डर नियुक्त हुआ, उस दिन ६ तारीख थी । ७ तारीख को एलाइज ने हमारे स्थान से डेढ़ मील दूर १५ इंच की गन चलाई । डेढ़ टन का गोला फूटा । टीन के चोबे और खूँटियाँ धमाके से उड़ गईं । १० या १२ मील तक भीषण विध्वंस और विस्फोट होने लगे । नींद हराम होगई । कोलाहल के कारण सिर फटता था, आँखें जागते जागते पथरा सी गई थीं । उसी समय आकाश से जापानी बममार हमला करने लगे । हमारे २३ आदमी मरे, और कई घायल होगये । मेरी खाई से १५ गज पर बम फटा । वह इतना भयानक बम था कि उसकी चोट से धरती से पानी निकल आया । मैं खाई में छिपा रहा ।

रबर के प्लांटेशन के बीच बम गिरने लगे । जापानी इस मनुष्य-निवास को जान गये थे ।

अचानक खाइयों की मिट्टी हवा के विक्षोभ में काँपने लगी कई व्यक्ति दब गये । मिट्टी जोर से अर्रा पड़ी । हम खोदकर उन्हें निकालने लगे । बमुश्किल एक निकला । सामने एक टीला सा था । एक सिपाही घबरा कर उस पर चढ़ने लगा । वह भाग रहा था । अचानक टीले की बगल में बम फटा । उसके धमाके से वह उड़ गया । हमने देखा, वह हमारे पास ही आकर गिरा ।

मैंने कहा: 'इसके एक भी ज़रूम नहीं है ।'

किसी ने उत्तर नहीं दिया। वह फिर भी मर चुका था। मैंने मुड़कर देखा। जहाज़ चले गये थे। हम खाई से निकले। बढ़कर देखा।

एक गड्ढे में एक आस्ट्रेलिया की मशीनगन-ट्रक गिर गई थी। उसमें से एक आस्ट्रेलियन-सिपाही-मुर्दे का दाँया हाथ निकला था। वह जल गया था। उसका गोश्त पक गया था। भयानक दृश्य था।

मैं उसे देख नहीं सका। तभी एक करुण पुकार सुनाई दी: 'मुझे मार डालो ! मुझे मार डालो !'

एक ब्रिटिश सैनिक ने मेरी ओर देखा।

'मुझे मार डालो !' वह अत्यन्त करुण पुकार फिर घिघिया उठी। वह एक आस्ट्रेलिया-वासी सिपाही था। वह जल गया था, पक गया था, लेकिन मरा नहीं था। वह असह्य यातना से कह रहा था: 'दया करो...मुझे मार डालो...'

मृत्यु ! सुखद ! ब्रिटिश सिपाही की आँखें करुणा से गीली हो गईं। उसने पिस्तौल निकाली और साध कर उस जले पके आदमी के सिर पर गोली दाग दी। आस्ट्रेलिया-वासी फिर चुप हो गया। कितना सुख था उस क्षण ! कितनी शांति छा गई। किंतु यह ब्रिटिश सिपाही आँख फाड़े देख रहा था। उसके रोंगटे खड़े हो गये थे, क्योंकि मैंने उसकी दाढ़ी के तूठों को खड़ा देखा। मैंने उसका कंधा पकड़ कर हिलाया। वह चौंका। उसने कहा : 'अब उसे दुख नहीं है...अब उसे दुख नहीं है... अब उसे दुख नहीं है...'

नेने नेना...जबकी आँखों में एक अजीब दहशत आ

गई थी ।

हम आगे बढ़े । एक सैनिक की दोनों टांगें मशीनगन से टूट गई थीं ।

मैंने आज्ञा दी: 'लकड़ी लाओ ।'

सैनिक लकड़ियाँ काटकर ले आये । स्ट्रैचर बनाये गये और घायलों को रखकर हम बढ़ने लगे ।

अचानक वह ब्रिटिश सैनिक जोर से हँसा और उसने अपनी पिस्तौल से अपने माथे में गोली मार ली और लुढ़क गया । मैंने देखा वह मुस्करा रहा था । वह शायद पहली गोली चलाकर डर गया था ।

एक स्ट्रैचर के ऊपर से एक अंग्रेज़ चिल्लाने लगा : 'मुझे छोड़ दो...मुझे छोड़ दो...'

जङ्गल की लकड़ियों के स्ट्रैचर, थके हुए सिपाही... घायलों का बोझ...सिपाहियों के कंधे कटने लगे थे...

अचानक वह अंगरेज़ उठ बैठा । उसने अपने मुँह में पिस्तौल रख ली और धाँय से गोली चलाई । उसका शव नीचे लुढ़क गया ।

मैंने कहा: 'रुक जाओ !'

हम गड़्ढा खोदने लगे । उसे दफ़नाया । उस वक्त एक सिपाही ने कहा : 'घायल होकर दूसरों को तकलीफ़ देने से तो अच्छा फौरन मर जाना है ।'

मैंने कहा: 'तुम अगर घायल हुए तो ?'

'हुज़ूर', मुझे गोली मार दीजिये तब !'

हम फिर बढ़ चले ।

❀

❀

❀

बुकीटीमा जापानियों ने घेर रखा था । हमने भयानक युद्ध किया । शायद इससे अधिक घातक युद्ध हुआ ही नहीं ।

६ फ़रवरी को हम पहुँचे । रेल से उतरते ही हुक्म रात को ही मिला: सुबह हमला करो ।

सामने समुद्र था । पैदल सेना के पीछे टैंक थे । टैंकों के शोर में हलचल थी ।

जीरो काल आने लगा । घड़ियाँ ठीक करली गईं । भयानक बमवर्षा होने लगी । धूल छा गई । पैदल सेना लेटी रही किंतु विस्फोटों के कारण सेना अधमरी होने लगी । सिंगापुर में साहस पहले ही टूट गया था । अब हवाई जहाज भी नहीं थे ।

समुद्र के तीर पर देखभाल करने वाली टुकड़ी खो गई थीं । कुछ नावें आती दिखीं । उन्हें जापानी समझकर मशीन-गन चलादी गई । वे गोरे सिपाही निकले । एक के बाद एक गलती होती चली जा रही थी । उधर जापानियों ने ऑटोमैटिक बंदूकें तैयार करली थीं ।

मैंने देखा कई सिपाही उस समय भी सो जाते थे । सिगरेटें खत्म हो गई थीं । मैंने खाना भी नहीं खाया । सिपाहियों के पास राइफल के लिये सत्तर राउण्ड होने चाहिये थे, वे भी नहीं थे ।

एक सिपाही ने कहा : 'सब परमात्मा के हाथ है ।'

उसका स्वर कुछ डरावना सा लगा । शीघ्र ही जापानियों की गोलियों की बौछार आने लगी । वे हमारे बहुत निकट थे । सिर पर से गोले भाग रहे थे । वे जाकर पीछे अस्पताल में नुकसान कर रहे थे । हम सज्जीनों लगाकर तैयार हो गये ।

जीरो कॉल और पास आने लगा ।

४-३५ पर सब सन्नाटा छा गया ।

४-३६ पर सन्नाटा और गहरा गया ।

४-३७ पर सन्नाटा भारी लगने लगा ।

४-४० होगया । कुछ नहीं हुआ ।

हेडक्वार्टर को टेलीफोन किया ।

जवाब आया : 'पता नहीं गोलाबारी का क्या हुआ । कुछ देर ठहरो ।'

हम ४-४५ तक प्रतीक्षा करते रहे ।

कर्नल अधीर हो उठा । उसने कहा : 'वे आयें या नहीं । तीन मिनट में हमले के लिये तैयार होजाओ ।'

मैं तैयार था । एकदम हम लोग खाइयों से चिल्ला कर दूटे । जापानियों ने मशीनगनें इधर मोड़ दीं ।

हुक्म हुआ : 'आगे बढ़ो ।'

भीषण हत्या-काण्ड होने लगा । धुंधलके में वे झमकती गोलियाँ उड़ने लगीं । ट्रेसर से दिवाली का सा उजाला होगया । अब हम जापानियों के पास पहुँच गये । बंदूकों के आगे बँधी संगीनों से युद्ध प्रारंभ होगया । दाँई कम्पनी के १५० जवान

टूट पड़े। 'मार मार' का दुन्द और शोर भीषणतम हो चला।

इसी समय एक गोला फटा। फिर छः छः गोले, फिर दस दस...हम लेट गये...

मेरे पास एक सिपाही ने खून उगला।

जापानी गोलाबारी शान्त होगई। हमारे पीछे से हमारे ही गोलदाज हमीं पर गलती से वार कर रहे थे। हम लोग खुले में पकड़े गये थे। धमाके के वक्त, फेफ़ड़ों में चोट सी लगती थी, साँसें रुकतीं, दिल घुटता सा लगता था...धूल... धूँआ... हाहाकार....

'घायलों को पीछे भेजो'...कोई चिल्लाया...

सामने सैनिक मर रहे थे...श्रोलों के गिरने में चिड़ियों की सी मौत....

कर्नल को फिर मैंने फ़ोन किया। उत्तर आया : मैं स्वयं आगे देखने आऊँगा।

किन्तु तभी हेडक्वार्टर से संवाद आया : सब कुछ बिगड़ गया। जहाँ तक जितनी जानें बचाई जा सकें बचाओ।

अब हम लोग भागने लगे। मैं सामने की इमारत की ओर जाने लगा। मेरा अर्दली साथ था।

जोर से कीवीं करके शेल उड़ा...

हम लेट गये...फिर...दौड़े...

१३ या १२ गज़...कि तभी फिर कीवीं...

पता नहीं अर्दली कहाँ गया।

मैं इमारत में पहुँच गया। ऊपर चढ़कर देखा... तभी

एक शेल आकर फटा...इमारत गिरी...भयानक रोर करके पत्थर लुढ़के...

मेरे सिर पर पत्थर गिरा। मैं मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। गिरते समय मेरी बगल से कीवीं की ध्वनि निकल गई।...

जब मैं जागा, मैं अस्पताल में था। मुझे मेरा अर्दली खींच लाया था। सिर में टाँके लगे थे। दवा लगने से अभी तक जलन होरही थी।

डाक्टर ने ठंडे स्वर से कहा : 'गर्दन टूटने से बच गई।'।

और कुछ नहीं। वह आगे बढ़ गया।

मर्द नर्स इधर से उधर घूम रहे थे। दो आये और मुझे वार्ड में लेगये। वहाँ उन्होंने मेरी बाँई आँख पर भी पट्टी बाँधी।

दो दिन शान्ति से निकले। पहली बार इतने दिन बाद मैं चैन से सोया, यह नहीं कि मृत्यु का भय नहीं था, किन्तु भय के आगे मैं अपना समर्पण कर चुका था।

कई रोगी पड़े थे। किसी की टाँग टूट गई थी, किसी का हाथ, बहुतेरे चल भी नहीं सकते थे...कराहें गूँज उठती थीं...दवाओं की गंध फैल रही थी...वह एमरजन्सी अस्पताल था। तीसरे दिन भयानक और मोटे स्वर में एलार्म बजने लगा। जापानियों ने बममारी की थी। आग लगाने वाले बम गिर कर फूटने लगे। एक बम इतने पास गिरा कि अस्पताल में आग लग गई। बहुत से मरीज जलने लगे। उनमें उठने की ताकत नहीं थी। एक मर्द नर्स ने बचाने को हाथ बढ़ाया,

उसका हाथ जल गया..... ३०० आदमी घेरे में कबाब बन रहे थे । मैं भागा । एक कोने में जाकर छिप गया । [यहाँ मैं क़ैदी होकर एक बार और आया था बाद में । तब मैंने खंडहर के मलवे में हड्डियाँ ही हड्डियाँ दबी हुई देखी थीं ।]

मुझे गुस्सा आने लगा । मैं किसी की हत्या करना चाहता था, क्योंकि मुझे रात में भागना पड़ रहा था ।

अर्दली ने मेरे पीछे भागते हुए कहा : 'सा'ब किधर जायेंगे ?'

मैंने चिल्ला कर कहा : 'यूनिट ! यूनिट में चलो । उसे ही ढूँढ़ेंगे ।'

हम अस्पताल के कपड़े पहने थे । कुछ सिपाहियों से यूनिट का पता चला कि रेंफ़ल्स कालिज की ओर है ।

सिंगापुर में लोग भाग रहे थे । नागरिकों में हाहाकार मच रहा था । नागरिक लोग लड़ रहे थे । भूखे सिपाही नगर में लूट रहे थे; क्योंकि उन्हें खाने को नहीं मिल रहा था । वे भूखे थे.....कम्यूनिस्टों को जगह जगह जापानी लोग एकदम गोलियाँ मार देते थे.....स्त्रियों से अखण्ड बलात्कार हो रहा था, भूखी औरतें अधनंगी होकर उन मतवाले जापानी सिपाहियों से चिपट जाती थीं.....सिपाही भाग रहे थे.....

बलूनी पर्वत के पास मैं अपने यूनिट की अन्तिम स्थिति में जा मिला ।

रेडियो पर वेवेल का भाषण आ रहा था.....

हम अंतिम दम तक लड़ेंगे.....हम आखिरी आदमी तक

लड़ेंगे...

कर्नल ने मुझे देखा ।

‘तुम घायल हो ।’ उसने कहा—‘अस्पताल जाओ ।’

मैंने कहा: ‘वह स्थान भयानक है, यहाँ से भी खतरनाक है ।’

‘तुम्हारी पट्टी अच्छा निशान नहीं है ।’

मैं चुप सा लेट गया । सिर में मंदा मंदा दर्द हो रहा था । पानी के नल जापानियों ने पहले ही उखाड़ दिये थे, मैंने जिन पी । पास में खाई का गंदा पानी था । उसे पीकर गर्मी के कारण लोगों को पेचिश हो रही थी । पेट में मरोड़ा हो रहा था । ४५ फ्रीसदी लोग उसी से मर रहे थे । सिगरेट नहीं थी, यातायात ध्वस्त पड़ा था । दो दिन से खाना नहीं मिला था । कोई काम नहीं कर रहा था । सिपाही राइफल से, मुर्गा दिखा, तो गोली मारते थे, भूनते और खा लेते थे ।

मैं उठ बैठा ।

मैंने देखा । यहाँ गोलाबारी का अच्छा प्रबंध था । एक जापानी टैंक खबर लेता घूम रहा था । मैंने गोली चलाई ; टैंक मुड़ा और लौट गया ।

‘कॉरपोरल ।’ मैंने कहा: ‘मोरटार लाओ ।’

कॉरपोरल लौटा । साथ में ब्रिटिश ३ इंच की मोरटार लाया ।

‘कहाँ चढ़ाऊँ?’ उसने पूछा ।

मैंने कहा: ‘यह तुम्हारा काम है । देख लो ।’

चार सिपाहियों ने उसे चढ़ाया ।

कॉरपोरल मेरे पास खाई में आया । हम खाई में छिप गये । जापानी गोले फिर बरसने लगे ।

आध घंटे तक भयानक रोर करते हुए दोनों ओर से भोषण विस्फोट करने वाले गोले बरसते रहे । धूल ही धूल छा गई । उसी समय एक शेल आकर हमारे मोरटार पर गिरा । एक अँगरेज़ सिपाही तुरन्त मर गया । एक टाँमी के बिल्कुल चोट नहीं आई, पर उसमें एकदम धूल घुस गई । वह कभी इधर गिरता था, कभी उधर और तब वह बेहोश होकर गिर गया । तीसरे सिपाही का सीधे हाथ की तरफ का सीना उड़ गया, किन्तु वह फिर भी जिन्दा था, मरा नहीं था...और चौथे के पेट की अन्तड़ियाँ निकल आई थीं और...और वह भी जिन्दा था... हाथों में अन्तड़ियाँ पकड़े था ।

दिन के एक बजे के उजाले में मैंने उन्हें तड़पते देखा । जब गोलाबारी रुकी, स्टैंचरों पर घायलों को भेज दिया गया । कॉरपोरल ने मेरे पास आकर कहा: 'दूसरी मोरटार आने तक...'

वह मेरे पास बैठ गया । सिगरेट नहीं थी, इसलिये उसने एक बार दो उँगलियाँ होठों से लगाईं, फिर दाँत भीच लिये ।

तीन बजे दूसरी मोरटार आ गई ।

जापानी हवाई जहाज़ मँडराने लगे ।

मुझे ही दूसरी जगह ले जाकर मोरटार चढ़ानी पड़ी, क्योंकि सूबेदार कमाण्डर थर थर काँप रहा था । हमने 'अग्रण्डरकवर' मोरटार बड़ी देखभाल करके चढ़ाई । फिर

चलाई तो ऊपर के पेड़ की डाली से पहली शैल टकराई, क्योंकि मोरटार ठीक सतह पर नहीं जमी थी। पहली शैल फटी, हमारे दो आदमी मारे गये। इस बार की टीम भी विनष्ट हो गई।

मैंने कर्नल से फोन किया।

उत्तर मिला: अब मोरटार नहीं है।

यहाँ जापानी हर पाँच मिनट बाद गोले बरसाते थे। और हमारे पास कुछ नहीं था ! हैडक्वार्टर से मंबाद आया: तुम्हारी जगह एक ब्रिटिश कम्पनी आयेगी।

हम मन ही मन प्रसन्न हुए, किन्तु तत्क्षण ही हमारा हर्ष शोक में बदल गया, क्योंकि हम जानते थे कि अब वे लोग मरेंगे। उस समय न अंगरेज स्वामी थे न हम गुलाम, मौत के मुँह में पड़कर इंसान अपने आदमियों को प्यार करने लगा था....

हम बरसते गोलों में चुप पड़े रहे।

५.३० तक गोधूलि धुँधली पड़ गई, अँधेरा छा गया, क्योंकि जङ्गल की छाया गहरी होने लगी थी।

मेरे पास गोग आया। मैंने उसे धीरे से परिस्थिति समझाई। मैंने कहा: 'जापानी बहुत पास है....'

उसने पीछे देखा, फिर सामने....

गाँव के लकड़ी के घर अँधेरे में जलते दिखाई दे रहे थे उनके निवासी पहले ही भाग चुके थे....

अंगरेज कम्पनी आने लगी, हम पीछे हटने लगे, गोरे हमारी जगह लेते गये। अभी हम पीछे जा भी न सके कि

कर्नल ने कहा: 'हम अन्तिम कम्पनी के साथ जायेंगे ।'

हैडक्वार्टर पहुँचकर देखा । वहाँ कब्र खुदी हुई थी ।
दो स्ट्रैचर रखे थे । सब गंभीर खड़े थे ।

मैंने पूछा: 'क्या बात है ?'

एक व्यक्ति ने आँख से इशारा किया ।

मैंने देखा ! वह व्यक्ति जिसकी अन्तड़ियाँ निकल आई थीं, और वह जिसका फेफड़ा एक ओर से फट गया था ... मरे नहीं थे, किंतु असह्य यंत्रणा भेलते हुए पड़े थे । उन्होंने अपनी कब्रें खुदते देखी थीं । उनका मुख मुझसे देखा नहीं गया ।

एक ने कहा: 'तुम 'फ्यूनरल' में जाओगे ?'

मैंने कहा: 'हाँ ।'

मैंने यूनिफार्म ढीली की ।

कर्नल ने कहा: 'पादरी !'

पादरी हिम्मत का आदमी था, 'शाँत'—उसने कहा: 'इनका पता ले लो ।'

मैं लिखने लगा ।

कर्नल ने कहा: 'जापानी गोलन्दाज बड़े आ रहे हैं । और यह दोनों पर भी नहीं रहे हैं ।'

उन दोनों ने सुना । सबने सुना ।

सबने कर्नल को देखा ।

मैं बढ़ा । स्ट्रेचर के कपड़े में से पानी भी नहीं निकलता । मैंने उन्हें देखा । एक को हिलाया । अन्तड़ियों वाले का सब

खून निकल चुका था । मेरे हाथ भीग गये । वह गोरा अब अपने ही खून में तैर सा रहा था । खून । लाल खून । वही लाल रंग जो दुनियाँ के नक्शे पर सल्लेनत बर्तानिया को दिखाता है । प्राज्ञ वह गोरा उसी में डूब सा रहा था ।

कर्नल कभी खतरे में भी छिपता नहीं था । वह सिपाहियों के साथ आगे बैठता था, बहुत कम सोता था, हर वक्त तैयार रहता था । मैंने देखा वह अब एकदम टूट रहा था ।

वह बड़ा । उसने कहा: 'पादरी ! इन्हें गाड़ दो, वर्ना सब ही मारे जायेंगे ।'

पादरी रोने लगा । उसने कहा: 'लेकिन वे अभी जिंदा हैं ।

कर्नल ने दिल पर पत्थर रख कर कहा: 'हम तुम्हें भी छोड़ देंगे । यह सब कहाँ जायेंगे ?'

कर्नल ने मुड़कर कहा: 'जवानो ! इनके गोली मार दो ।'

हमने एक दूसरे की शकल देखी । किसी में भी साहस नहीं हुआ ।

तब चार ने स्ट्रेचर पकड़े । जिन्दों को कब्रों में उतार दिया गया । पादरी रोते हुए प्रार्थना पढ़ने लगा । वे दोनों देखते रहे । उनमें बोलने की शक्ति नहीं थी । उन पर हम लोगों ने जल्दी जल्दी मिट्टी डाल दी । और दोनों जवानों को दफना दिया ।

मेरा हृदय भीतर ही भीतर फटने लगा । उनकी पहचान ले ली गई । नक्शे पर कब्र का निशान लगाया गया ताकि बाद में रिश्तेदारों को सूचना दे दी जाय । कबरें ढँक दी गईं ।

ताकि शत्रु हमारी लाशों को अपमानित न करे ।

फिर हम वहाँ से पीछे भागने लगे । भीषण बमवर्षा हो रही थी । नागरिक मक्खियों की तरह मारे जा रहे थे । घर-घर लड़ाई हो रही थी, मशीनगनों चल रही थीं । आकाश से जापानी हवाई जहाज बम गिरा रहे थे ।

जापानी पीछे से आगये । हम शहर से अब दो मील आगे थे । पीछे एलाइज का दम टूट चुका था । ब्रिटिश रेजीमेन्ट ने ३०० आदमी मारे थे । पूर्व को छोड़कर वे सड़क के पश्चिम में रैफ्रिल्स कॉलेज के दक्षिण में चले गये थे । वहाँ एक मले-रिया नाशक नाला था । देखने में एक छोटी नहर सा लगता था । मैंने देखा उसमें धड़ पड़े थे, सिर नहीं थे । जापानियों ने हमें डराने को विभीषिका दिखाई थी । पास में मुण्ड पड़े थे, जिनकी नाकें कटी हुई थीं ।

रात को हम लोगों में किस्से चल पड़े कि पास के गाँव की खबरें क्या थीं ।

सिपाही कहने लगे ।

— जापानियों ने औरतों से बहुत बलात्कार किया है....

— बच्चों को संगीनों से टुकड़े टुकड़े कर दिया....

— यह भी कोई वीरता है....

— उन्होंने औरतों की छातियाँ काट डाली....

— उन्होंने औरतों की रानों में संगीनों से वार किये....

मैं क्रोध से फिर भन्नाने लगा ।

— जापानियों के तूफानी दस्तों में कोरिया के सैनिक हैं,

और उनकी दाढ़ियाँ बढ़ी रहती हैं, शराब से आँखें लाल रहती हैं, जीत की खुशी ने उन्हें पागल कर दिया है...वे लोगों के सिर पर शराब की बोतलें फोड़ते हैं...

— मैंने देखा है। एक चीनी बच्ची...अपनी मुर्दा माँ की बगल में पड़ी थी...बम फटने से उस औरत की एक तरफ की छाती फट गई थी...मर्द शायद था नहीं...सड़क पर पड़ी थी... जापानी ने उस बच्ची के गले को भारी बूट रख कर कुचल दिया...

एशिया ऐसे ही एशिया वालों का है ?

— और आज मैंने देखा ...

मेरा बेटा मेरे पास आया। बोला : 'सा'ब। वह बच्ची है एक।'

मैंने देखा। छोटी सी। चीनी बच्ची। थी वह दस साल की, पर वह बहुत छोटी सी लगती थी, प्यारी प्यारी,...

'क्या है ?'

'इसे मैंने अपने पास रखा है। अस्पताल के पास मिली थी। कभी नहीं रोती, कभी नहीं डरती। खाई में चुपचाप लेटी रहती है। मैं कपड़े धोता हूँ, यह खाना परोसती है...

मैंने स्नेह से बच्ची के सिर पर हाथ फेरा।

[बाद में जब समर्पण हुआ तब जापानियों ने उसे छीन लिया। वह उनसे बड़ी घृणा करती थी, मेरे पाँव पकड़ कर रोने लगी। मैं रुँआसा होगया। मैंने कहा : 'मेरे पास न कपड़े हैं, न खाना, इनके साथ जा...यह तुझे खाने को देंगे...वह चली गई। जापानियों ने उसे शराब पिलाने के काम पर रख

लिया था ।]

अब हम पर समुद्र से भी बार होने लगा, आकाश से भी । अब चुँगी लाशें नहीं उठाती थी । लाशें पड़ी रहती थीं । चोरों का राज होगया था । औरतों के कपड़े उतार लिये गये थे । वे सड़कों पर नङ्गी घूमती थीं, ऐसी जैसी पैदा हुई थीं । लज्जा खो चुकी थी । लाशें सड़ने लगी थीं । बदबू से नाक सड़ती थीं । कुत्ते भूखे थे, वे लड़ते हुए लाशों के टुकड़े टुकड़े करके फंलाते, उन्हें ही खाने लगे थे ।

इन दो दिनों में हमें खाने को कुछ नहीं मिला । नाले का पानी पीते थे, पेचिश से कई आदमी मरोड़े खाते थे और फिर भी युद्ध कर रहे थे...

अफ़वाह फैली कि पिनांग के पास अमरीकी सेना उतरी है

हम अफ़सर उस नाले और खाई के पानी में जिन मिला कर पीते थे ।



१४ तारीख की रात को अंधेरे में घंटी बजी ।

‘कौन बोलता है ।’ मैंने चोगा लेकर पूछा ।

‘मैं हूँ कर्नल ।’

‘यस सर ।’

‘कुछ जापानी तुम्हारे दाहिने घुस आये हैं...

‘हैडक्वार्टर पर ?’

‘हाँ वे यहाँ हमला कर रहे हैं...

फिर मैंने सुना... 'अंधेरा छा रहा है...'

'यस सर !'

'तुम पीछे हटे हो ?'

'कुछ लोग !'

'क्यों ? जो हटते हैं उन्हें गिरफ्तार करो....'

'यस सर !'

'गोर्डनस को अपना आधीन व्यक्ति भेजो, बिल्कुल तुम्हारे बाद का....'

'यस सर !'

मैंने कहा: 'तुम !'

'हाँ।' वह उन्नीस साल का अंगरेज़ लड़का था।

मैंने समझाकर कहा: 'जाओ।'

उसका चेहरा सफेद पड़ गया

मैंने कहा: 'क्या हुआ ?'

'कुछ नहीं', उसने कहा, 'मैं इन्कार नहीं करता....पर क्या यह व्यर्थ नहीं है ?'

'मैं तुम्हारे साथ सेक्शन ७ के आदमी भेजूँ ?'

'वे भी मारे जायेंगे।' उसने हताश स्वर से कहा।

मैंने कहा: 'ठीक है मत जाओ !' इस वक्त गिरफ्तारी से फायदा ही क्या ! आध घंटे बाद कर्नल से कह दूँगा, कोई नहीं मिला।'

उसने मेरी ओर कृतज्ञ दृष्टि से देखा।

'तुम यहीं रहना।' कहकर मैं खाई से निकला।

मैं अंतिम स्थान पर रखी मशीनगन तक गया, निरीक्षण करने ।

सिपाहियों ने मुझे देखा तो सलाम किया ।

मैंने कहा: 'खाना नहीं मिला ?'

'नहीं । आपने खाया !'

मैं हँसा । मैंने कहा: 'कभी तो मिलेगा न ?'

'हाँ सा'ब ! सिगरेट हैं ?'

'कहाँ हैं ?' मैंने धीरे से पूछा ।

फिर किसी ने नहीं पूछा ।

मैं नाले में उतरने लगा । नाला आगे जाकर दो भागों में बंट गया था । कहीं कहीं आग लग रही थी । अन्धकार में लूक सी उठती थी । उजाला हो उठता था ।

मुझे किसी के सरकने की आवाज़ आई । मैं पिस्तौल निकाल कर लेट गया । सरकने की आवाज़ पास आई । इधर उधर देखकर एक व्यक्ति बढ़ा ।

मैंने हठात् कहा: 'कौन है वहाँ ?'

'ह ह ह...' वह हकला गया । घबराहट के मारे बोल नहीं सका ।

मैंने कहा: 'दोस्त कि दुश्मन !'

उसने कहा: 'गोर्डन्स !'

मैंने उसे पकड़ लिया । उसकी पिस्तौल हाथ उठवा के ले ली और उसे ले आया ।

गोरा लड़का पास आया । उसने कहा : 'यह कौन है ?'

‘गौडन्स !’

‘तुम लाये हो !’ वह अवाक् था ।

मैंने कहा: ‘तुम छोटे हो ! जाओ । कर्नल के पास ले जाओ !’

हठात् उसने कहा: ‘यह कमाल का काम है । तुम लाये हो, तुम ले जाओ । मैं तो नहीं गया था ?’

मैंने कहा: ‘यह मेरा हुक्म है । तुम्हीं ले जाओ !’

वह गोरा मुझे क्षण-भर देखता रहा । फिर उसे ले गया । जब वह लौटा तो उसने कहा: ‘तुम एक अजीब दोस्त हो ।’

मैंने देखा । वह गोरा लड़का, अब पता चला वैल्स था । वेल्स का वासी । वह रोने लगा ।

‘क्यों रोते हो ?’ मैंने पूछा ।

‘तुम मुझसे सीनियर (बड़े) अफसर हो, तुम स्वयं मेरी जगह गये । कर्नल ने मुझे शाबाशी दी । मैं क्या करता ? देखो मुझे एक सिगरेट दी है ।’ ओयन ने कहा ।

‘सिगरेट !!’ मैंने कहा । मैं खुश हो गया । फिर हम दोनों ने कंबल ओढ़कर आधी आधी पी । मज़ा आ गया । शायद उतनी अच्छी सिगरेट दुनियाँ में न कभी थी, न शायद होगी ।

बम का एक बहुत भीषण धड़ाका हुआ ।

एक राजपूत जमादार मेरे पास भाग कर आया और बोला: ‘हुक्म दें !’

मैंने कहा: ‘अपनी जगह रहो ।’

‘गोरे भाग गये हैं । आप हमें मरवा देंगे ।’ उसने कहा ।

मैंने कहा: 'तुम इस गोलाबारी से बच कर जाओगे भी कहाँ ? क्या नगर के लोग नहीं मर रहे हैं ?'

मैं समझ गया, वह भागने की सोच रहा था ।

जब गोलाबारी कुछ रुकी मैं उसे देखने लगा । जमादार के होश उड़ रहे थे ।

हवलदार ने कहा: 'इसे हटा दीजिये । यह कायरता फैला रहा है ।'

हवलदार के मुँह से शब्द लोहे के से निकले ।

जमादार ने कहा: 'आप अफसर हैं, आप ही मुझे मार डालिये...' मुझे मार डालिये... वह चला गया ।

सुबह तीन बजे का वक्त था । मैं खाई में ऊँघने लगा था । कोई मेरी खाई में कूदा ।

बम फिर खूब फट रहे थे ।

जमादार !

मैंने कहा: 'क्या है ? अब क्यों आये हो ?'

'हुजूर ! बड़ी गोलियाँ आती हैं ।'

मैंने कहा: 'कितने मरे ?'

'अभी तो कोई गिनती नहीं ।'

'फिर क्यों डरते हो ? गोले बहुत पास गिरते हैं ?'

'जापानी बड़े खूँखार हैं, वे बहुत बुरी तरह मारते हैं...'

हवलदार ने मुड़कर देखा । कहा: 'सच ?'

मैंने कहा: 'जमादार ! एक मिनट में अपनी जगह लौट जाओ, वरना मैं तुम्हारे गोली मार दूँगा ।'

'मैं जाता हूँ, मैं जाता हूँ', जमादार ने हकला कर कहा ।

लेकिन वह गया नहीं । कांपने लगा ।

मैंने कहा: 'जाओ, वर्ना मैं गोली मार दूँगा ।'

हवलदार आगे बढ़ा ।

तभी एक बम कहीं फटा । मैंने उसे धक्का देकर खाई के बाहर कर दिया । जमादार पेट के बल भागने लगा ।

'कायर !' हवलदार बड़बड़ाया ।

❀

❀

❀

१५ तारीख को २ बजे थे ।

कुछ लोगों ने जापानी कार पर सफेद झंडा देखा था । तार पाकर मैं हेडक्वार्टर गया ।

कर्नल ने मुझे देखा । आज वह बोल नहीं पा रहा था ।

उसने कहा: 'बैठ जाओ ।'

मैं बैठ गया ।

'कंपनी कैसी है ? अच्छी तरह काम करना । हिम्मत न हारो ।'

उसने मेरी आंखों में झाँक कर देखा । फिर कहा : 'तुम बहुत अच्छा काम करते हो ।'

मैं देख रहा था कि वह नर्म हो गया था ।

उसने फिर कहा: 'अगर अच्छा समय होता तो मैं तुम्हारी तरक्की में मदद करता । लो पियो । यह सिगरेट लो ।'

उसने शराब की बोतल की तरफ इशारा किया और सिगरेट का पाकिट मेरी ओर बढ़ाया ।

मैंने शराब की बात पर ध्यान नहीं दिया । कहा: 'मुझे कम्पनी में लौटना है । मेरे आदमी भूखे हैं, उनके पास सिगरेट

भी नहीं हैं। मुझे दीजिये। मैं एक पीकर, बाकी सिगरेटें बांट दूँगा।'

कर्नल ने स्नेह से मेरी ओर देखा और कहा: 'तो तुम बाँटोगे?'

मैंने सिर हिलाया। उसने कहा: 'ठहरो।'

वह उठा और उसने मुझे १० पाकेट और दिये।

मैं सैलूट करके चलने लगा।

'ठहरो!' कर्नल ने रोका। 'बैठो।'

मैं बैठ गया। कर्नल ने खाई के पानी में कुछ अधिक जिन मिलाई और बड़ा सा मग मेरी ओर बढ़ाया।

मैंने दो घूँट पिये। बड़ी तेज़ थी। तब मैंने बगल के अफ़सर की ओर बढ़ादी। सब पीते चले।

कर्नल ने कहा: 'बहुत महत्वपूर्ण बात है। उसने मुड़कर कहा: 'एड्ज्यूटेन्ट वार्ड ! संवाद सुनादो !'

वह रुका और कहा: 'जी० ओ० सी० मलाया कमाण्ड-जनरल परसीवल का हस्ताक्षर है। १६०० घंटे पर सब हथियारों से गोलियाँ निकाल ली जायेंगी। सफ़ेद झंडे, रूमाल फौजी टुकड़ियाँ सामने लगायेंगी। कोई गोली नहीं चलेगी... और उसने अन्त में कहा: जापानियों पर हमला नहीं करना होगा।'

हमने एक दूसरे की ओर निस्तब्धता से देखा। लगा युद्ध समाप्त हो गया था। कर्नल रुआँसा हो गया था। मुझे लगा मैं रो दूँगा। हाँ, उस समय मैं भारतीय होने पर भी पराजय का अनुभव कर रहा था। मेरा साम्राज्यवादी स्वामी हारा

था, लेकिन यहाँ हमारा लहू बहा था! और आने वाले जापानी क्या वे मदांध साम्राज्यवादी नहीं थे ?

मैंने सिर झुका लिया । अफ़सर चुप बैठे रहे । कर्नल निस्तब्ध खड़ा था !

कर्नल समीप आया । उसने मेरी पीठ थपथपाई और भर्राए स्वर से कहा: 'यह अग्नि-परीक्षा है । लेकिन हम इससे पार होंगे । कम्पनी को समाचार देना ।'

मुझे लगा यह पूर्ण समर्पण नहीं था, वरना हम पार किससे होंगे ? मैं लौट आया । मैंने एक सीनियर सूबेदार और ओयन को बताया ।

ओयन बच्चे की तरह फूट फूट कर रोने लगा । मैं स्तब्ध देखता रहा । ओयन ने कहा : 'मैं घर से बहुत दूर हूँ'... 'बहुत दूर हूँ'...

जापानियों की बंदूकों ने पहले से भी जबर्दस्त हमला शुरू कर दिया था ।

कम्पनी में संवाद फ़ैल गया । आठ बजे तक सम्वाद फ़ैल गया । ६ घंटे बाद ४ बजे दोनों ओर से युद्ध रुकने वाला था । इस दौरान मैं हम शांत पड़े थे और शत्रु धुआँधार बम फेंक रहा था । यह क्या था !

'यह आत्महत्या है ।' ओयन बुदबुदाया ।

सी कम्पनी के एक एंग्लोइंडियन कमाण्डर को ख़बर मिली तो वह हेडक्वार्टर चला । कंटीले तारों की वजह से वह सीधा नहीं जा सकता था, हमारी तरफ़ आया ।

बोला: 'ऐच ब्यू मैं कर्नल ने बुलाया है ।'

मैंने कहा: 'खेल खत्म हो गया। आगो सिगरेट पी लो, यहीं बैठो।'।

वह नहीं माना। कहा: 'कम्पनी से कहदूँ।'।

वह, सूबेदार और फ्रेजर एक खाई में थे। उसी समय एक बम फटा। तीनों वहीं ढेर हो गये।

१५ मिनट बाद उसका अर्दली भागा हुआ आया। उसने कहा: 'सा'ब तो मर गया।'।

मैंने कहा: 'दूसरे मोर्चे के रास्ते में होगा!'।

ओयन को विश्वास नहीं हुआ। अर्दली काँप रहा था। उसके चेहरे पर मुर्दनी छा रही थी। ओयन चला।

मैंने कहा: 'बैठो, बैठो।'।

ओयन रोता हुआ लौटा।

मैंने कहा: 'बया हुआ?'

'वह मर गया!'

'मर गया!'

'हाँ उसका सिर मुझे नहीं मिला।'।

मुझे लगा, मुझे किसी ने जोर से घूसा मारा था। अनजाने ही मैंने अपने सिर को छुआ। वह तो वहीं कंधों पर था।

मैंने कर्नल को फोन किया। उत्तर आया, जो उचित समझो वही करो।

मैं उठ कर चला। ढूँढ़ने पर मुझे उसका सिर चार-पाँच गज की दूरी पर एक झाड़ी में मिला। मैंने धूल पोंछी और फिर सिर लाकर घड़ पर लगाया। फिर हमने धरती खोद कर उसे गाड़ा और नक्शे पर निशान लगाया।

मुझे खयाल आया । इसी ने मुझसे कहा था—शायद कुल चार पाँच दिन पहले, माँ का खत आया है, हम तीन भाई हैं । उसे आशा है कि हम जल्दी घर पहुँचेंगे । अगर एक भी पहुँच सका तो कितनी खुश होगी वह !

अब वह कहने वाला मर गया था । युद्धभूमि में घर का पत्र कितना सुख देता है । इंसान जहाँ गोलियों की भूख मिटाता है, वहाँ वह सुदूर घर की पाती मानव-जीवन के स्नेह का अक्षय संदेश, जीवित रहने की सार्थकता लेकर आती है । उसी घर के लिये तो हम बंदूक चलाकर किसी अनजाने व्यक्ति को शत्रु समझकर गोली मारते हैं ।

उस दिन उसे कितनी आशा थी !

माँ के नेत्र ! और फिर मुझे अपनी माँ की याद हो आई । वे नयन सुदूर समुद्र पार, विशाल मैदानों के पार पर्वतों के नीचे दिखाई दिये और फिर मेरे सामने आ गये ।

सीज़ फ़ायर के बाद इसी तरह चीनी कम्पनी-सिगापुर वालन्टियर कोर का साम्रोलिय कम्पनी कमाण्डर भी इसी प्रकार खाई के बाहर निश्चित बैठा था । बम फटा और लेट गया । बड़ी देर तक जीता रहा, तड़पता रहा । उससे मैने कहा: 'अस्पताल चलो ।'

उसने कहा: 'नहीं ।'

उस समय मैंने मनुष्य की वेदना सहन करने की शक्ति देखी । चीनी वीर की सहनशक्ति असीम होती है । इतना मैं जानता था कि चीनी और जापानी एक दूसरे से घोर घृणा करते थे, वे एक दूसरे की एक एक आँख फोड़ कर तड़पा

तड़पा कर हत्या करते थे । उनके लिये युद्ध कोई बड़ी बात नहीं थी । जापानी कहते थे कि चीनी लोग युद्ध में गौरव समझते हैं, वे ब्रिटिश और भारतीयों की तरह नहीं डरते । मुझसे एक जापानी ने कहा था: 'किसलिये हम मारते हैं जानते हो ? अपने आदमियों की हिम्मत बढ़ाने ।

[एक साल बाद मैंने खुद जापानी कैद में देखा था । जापानी अपने कैदी के हाथ पीछे बाँध देते थे और उसे घुटनों के बल बिठा उसकी गर्दन भुका कर तलवार से सिर काट देते थे । सिर सामने के खुदे गड्ढे में गिरता था । तब वे लाश धकेल कर गड्ढे को भर देते थे । वहीं मुझे एक जापानी अफसर ने बताया था कि उसका एक दोस्त युद्ध में चीन गया ! उसने वहाँ चीनी कैदी पकड़े । उस तक वक्त उसने किसी की हत्या नहीं की थी, नया था । चीनी कैदी ने उससे कहा: 'मेरी आँखें बन्द मत करो ।' तब वह हिम्मत करके आगे बढ़ा लेकिन ठिठक गया । उस वक्त तक उसने हत्या नहीं की थी । चीनी कैदी चिल्लाया: 'अगर तू बहादुर है तो मुझे जल्दी मार । कायर की तरह मुझे यातना मत दे ! चपटी नाक के दोगले जल्दी कर ।' वह फिर बढ़ा पर बेहोश होकर गिर गया । उस समय सब हँसने लगे । किसी और ने उसका कत्ल किया ।]

[क्वालालम्पूर में मुझसे एक जापानी गनर अफसर मत्सु-ओका ने पूछा था: तुमने कभी आदमी का कत्ल किया है ?]

मैंने कहा: 'बन्दूक से न ?'

'नहीं', तलवार से ?'

मैंने कहा: 'नहीं ।'

‘तुम तलवार से मारना अच्छा समझते हो कि बंदूक से?’
मैं उत्तर नहीं दे सका ।

उसने कहा: ‘तलवार से मारना अच्छा होता है । तुरंत मरता है । बंदूक में वह दुख पाता है । मेरे साथ आओ । मैं तुम्हें दिखाऊँ । उसके बाद तुम भी तलवार से मारना पसंद करोगे ! मैं तुम्हें दिखाऊँ कोमिन्तांग के लोग कैसे मरते हैं ।’

‘तुम कैदियों को मारते हो ?’ मैंने आतंकित होकर पूछा ।
मैं भी क्रौंदो था ।

‘क्यों ?’ उसने कहा: ‘यह तो जापान में वीरता में गिना जाता है !’

मैं थर्रा गया । किंतु वह मेरे पीछे पड़ गया । वमुश्किल जान छुड़ाई, पर दूसरे दिन फिर आगया । बोला: ‘देखो ! जब मैंने पहली बार हत्या देखी थी, तब मुझे नींद नहीं आई थी । दूसरी बार वह बात नहीं रही । तीसरी बार मुझे मज्जा आया । फिर मैंने चौथी बार मारा तो दिल ने कहा यह अच्छा नहीं हुआ । पर विचार आया, चला गया । फिर चीनी युद्ध में तो सब जायज हो गया, बहुत मारे मैंने । बड़ा मज्जा आता है । एक बार चलो । मैं चाहता हूँ तुम्हें भी वही सनसनी हो, वही मज्जा आये ।]

सचमुच जापानियों ने सिंगापुर में चीनियों के सिर काट काट कर टाँग दिये थे जो तीन तीन चार चार दिन तक लटके रहे ।

संवाद आया । जनरल परसीवल और जापानी सेनापति यामाशीटा की मुलाकात हुई । पूर्ण समर्पण हुआ । सिंगापुर

में यूनियन जैक—अँगरेज़ी सल्तनत का झंडा उतर गया और सिंगापुर के नये जापानी राज्य के दिये नाम शोनान में हीना-मोरो—जापानी साम्राज्य का झंडा फहराने लगा ।

प्रतिध्वनि सुनाई दे रही थी: एशिया एशिया वालों का है...बंदूकें नहीं चल रही थीं, जापानी हमारी तलाशी ले रहे थे...वे कईयों के कपड़े तक उठा ले गये...

और तब मैंने देखा...मैं भारतीय...दो साम्राज्यों के गिरने उठने में तब वेतन भोगी सिपाही था, और अब एक युद्ध बन्दी ।

और मैंने सोचा...शायद अब जीवन को वह भय नहीं रहा...अब युद्ध समाप्त हो गया...

महानगर में जापानी भीषण जयजयकार कर रहे थे...

❀

❀

❀

[मैं बच गया था ! क्या यह आश्चर्य नहीं था !

हम जिन खाइयों में बैठते थे, वहाँ ज़रा सा माथा निकलता था तब भड़ाक गोली लगती थी । उस वक्त पाँच मिनट में रिपोर्ट आरही थी । जमादार मेरी खाई में कूदा ।

दो जापानी भागने लगे ।

जमादार ने उँगली उठाकर कहा: 'वह देखिये...

तड़ से उँगली में गोली लगी । हड्डी टूट गई । वह कराह उठा । हम फिर खाई में छिप गये । थोड़ी देर बाद मैंने सिर उठाया । लगा किसी ने ज़ोर से सिर में हथौड़ा मार दिया । मुझे चक्कर आ गया । गोली लगी थी, मेरे लोहे के हेल्मेट (सिरस्त्राण) ने बचा दिया था ।

इसी हेल्मेट ने मुझे इमारत गिरते वक्त बचाया था । इसी

को मैंने खाइयों में तकिये की तरह लगाया था और सोचा था, जब कि गोलियाँ ऊपर भाग रही थीं और मुझे नींद आ गई थी ।

एक दिन इसी के भीतर का कपड़ा फाड़ कर मैंने इसमें खाना भी खाया था, क्योंकि जापानियों ने अपने कैंदियों को खाना बनाने को भी बर्तन नहीं दिये । उस समय मैंने बड़े गनशेल के ऊपर से आधा करके तोड़ा था और उसमें चावल पकाये थे ।

वही मैं बच गया था ।

आज तक बचा हुआ है ।

बहुत कुछ कह चुका हूँ । मुझे वह सब स्पष्ट याद नहीं है और बहुत से चित्र से याद हैं । उन्हें सुनाता हूँ ।]



१६ फरबरी १९४३ को हमें घुड़दौड़ के मैदान में हँडेल दिया गया । ब्रिटिश कैंदियों के साथ मुझे रखा गया । मैं अफ़सर था । एक ब्रिटिश सिपाही ने मुझे सलाम किया ।

एक जापानी मेरे पास आया । उसने कठोरता से कहा : 'इंगरिसु ? इंडी ?'

मैंने कहा : 'इंडी !'

जापानी ने कहा : 'इंडी सब काले होते हैं । तुम जासूस हो, ब्रिटिश ने सैलूट क्यों किया ?'

उस समय मुझे अनुभव हुआ कि मेरा गोरापन भी एक अभिशाप हो सकता था, वही जिस पर मुझे नाज़ था !

मैंने कहा : 'मैं अफ़सर हूँ ।'

‘कोई ब्रिटिश इंडी को सैलूट नहीं करता ।’ उसने कठोरता से फिर कहा । मुझे ग्लानि ने विक्षोभ दिया ।

उसने हठात् अपने हाथ की लकड़ी से मुझे दो बार मारा । मेरा खून खौल उठा ।

मैं लहू का घूँट पीकर रह गया ।

तभी दो तीन अंगरेज उधर से निकले । उन्होंने भी मुझे सैलूट किया ।

जापानी ने कहा : ‘पापा ब्रिटिश ! मामा इंडो ?’

मैंने कहा : ‘नहीं सूहर ! नो !’

वह ‘नो’ को समझा ।

उसने पलट कर कहा : ‘मामा ब्रिटिश, पापा इंडो !’

मैंने कहा : ‘नहीं ।’

तब वह चला गया । उसने एक जापानी अफसर से जाकर कहा । उसने मेरी ओर आश्चर्य और संदेह भरी दृष्टि से देखा ।

मेरे पास ही एक पठान था । उसकी भी इसी वजह से पिटाई हुई ।

१६ की रात किसी प्रकार कट गई ।

१७ के प्रातःकाल हम लोगों को चान्गी तक मार्च करना पड़ा । पन्द्रह मील का सफ़र था । दस बारह दिन तक मैं ब्रिटिश कैदियों के साथ रखा गया । अन्त में जब सफ़ाई हो गई तब वे मुझे हिन्दुस्तानी कैदियों में ले आये । उन दिनों आज़ाद हिन्द फौज में भरती शुरू हो गई थी । मुझे शाहनवाज़ ने ही हिन्दुस्तानी करार दिया और तब ही मैं छोड़ा गया ।

मैं और माथुर तथा बहादुर तीनों साथ बैठे ।

मैंने कहा : 'यह तो मुसीबत खड़ी हो गई ।'

'चलो !' बहादुर ने कहा: 'आई० एन० ए० में भर्ती हो जायें ।'

माथुर ने कहा : 'नहीं । पहले अँगरेजों की गुलामी को, अब जापानियों की करोगे !'

प्रश्न बहुत बड़ा था ।

मैंने कहा: 'मेरी राय है भाग चलो ।'

'कहाँ जाओगे ? घर बहुत दूर है ।'

घर बहुत दूर था । लेकिन मन उसे पास ही मानता था ।

मैंने कहा: 'मेरे पास कम्पस है, नक्शा है, खाना, नागरिक कपड़े और यह सामान पैसों से मिल सकते हैं । पैसा हम लोगों के पास काम-चलाऊ है ही ।'

नक्शा देखकर बहादुर ने कहा: 'यार ! यह तो एक इंच का मैनूवर मैप है ।'

फिर हम लोग भागने की योजना बनाने लगे ।

५ मई १९४३ को तय किया गया कि हम भागेगे । हमने सिपाहियों से माँग कर कपड़े तैयार कर लिये । माथुर दूसरे कैम्प में था । मैं और बहादुर साथ साथ थे । एक वो० सी० ओ०, एक लान्स नाइक को भी हमने मिला लिया ।

इस प्रकार हम पाँच व्यक्ति हो गये ।

जापानियों ने रेल बनाली थी । कौजवे की मरम्मत हो गई थी । उन्होंने लकड़ी लगाकर काम-चलाऊ रास्ता बना लिया था ।

तीन तारीख को मुझे पेचिश हो गई । ४ को मैं बहुत निर्वल हो गया । एक नागरिक को पटाकर टिकट ले लिये गये । बारह बारह डौलर के मलाया के उत्तरी भाग के अलोर-स्टार के टिकट थे । हमने इंडियन इंडिपेन्डस लीग से मिलकर जाली पास ले लिये थे ।

बहादुर ने कहा: 'सुनते हो ?'

मैंने पूछा: 'क्या है ?'

'तुम बहुत कमजोर दिखाई देते हो ।'

मैं मुस्कराया ।

उसे शायद मेरी मुस्कान में करुणा की झलक मिली ।
आँखें भुकाते हुए बोला: 'कैसे चलोगे ।'

'नहीं जाऊँगा ।'

'फिर ?'

मैं समझ गया कि वह सारी योजना के बारे में पूछ रहा था । मैंने कहा: 'तुम लोग चले जाना ।'

'यह कैसे होगा ?'

'और करोगे भी क्या ?'

'मैं नहीं जाऊँगा ।'

'क्यों ?'

'मैं नहीं बता सकता ।'

मैंने कहा: 'तुम मौका खो दोगे । यहाँ ममता नहीं काम देगी । यहाँ इंसान मुरब्बत पर नहीं, अपनी किस्मत पर ज़िदा रहता है । जानते हो, मैं व भी ईश्वर को नहीं मानता था, अब मानता हूँ ।'

‘क्यों ?’

‘मुझे उसके सिवाय कहीं सहारा दिखाई नहीं देता ।’

‘मुझे दिखता है ।’

‘कहाँ ?’

‘स्नेह में ।’

मेरे सामने जैसे बिजली सी कौंधी, फिर बुझ गई ।

सचमुच वे तीन भाग गये, बहादुर नहीं गया ।

यह सच है कि हम दोनों भाग कर अलोरस्टार पहुँचे भी; किंतु हम फिर पकड़े गये । माथुर पिनाँग में लेबर क्लर्क हो गया था । वह वहाँ सस्ती लड़कियाँ पाकर बह निकला । लेकिन उसे जासूस समझकर जापानियों ने मार डाला ।



क्वालालम्पूर से पकड़ कर मुझे सिगापुर लाया गया । उस समय १७ बरस से ३० बरस तक की औरतों के लिये हुक्म हो गया था कि वे जापानी सिपाहियों के विश्रामागारों में सन्ध्या को पहुँच जाया करें, जहाँ डाक्टर उनका मुआयना करता था और तब वे वेश्यावृत्ति करने को मजबूर की जाती थीं ।

बाहर यह हालत थी कि जहाँ जापानी संत्री मिलता था उसके सामने झुककर जाना पड़ता था । अगर कोई मोटर में हो तो उसे दस क़दम पर, गाड़ी रोक कर पाँव जोड़ कर ४५ डिग्री का कोण बनाकर सिर झुकाना पड़ता था ।

वे बच्चों का भी सिर पकड़ कर झुकवाते थे, उन बच्चों का भी जो मासूम थे; क्योंकि वे इम्पीरियल टेन्नोहेक्का के

प्रतिनिधि थे। बच्चे उन्हें बार बार सलाम करके छेड़ते भी थे। कुछ बच्चों को उन्होंने नाराज़ होकर मार भी डाला था।

[मुझे याद आया। क्वालालम्पूर के एक चौराहे पर एक यूरोशियन लड़की जा रही थी। जब वह जापानी सन्त्री के पास से गुज़री, उसने सिर झुकाया और चली गई।

जापानी ने कहा: 'इधर आओ !'

पास बैठा गार्ड उठा।

उसने कहा: 'तुम झुकी नहीं।'

'मैंने झुक कर सलाम किया था।' लड़की ने कहा।

वह खूबसूरत थी। गार्ड ने उसके शरीर पर हाथ डाला। क्षण-भर वह स्तब्ध खड़ी रही, पर ज्यों ही उसने उसके वक्ष को छुआ, लड़की ने तड़ाक से चाँटा दिया।

गार्ड पागल की तरह चिल्लाया। उसका साथी भी आ गया। उन्होंने उसे नंगी कर दिया, बिल्कुल नंगी। फिर चौराहे पर खड़ा कर दिया। कोई सड़क पर चलते समय यदि विक्षोभ और लज्जा से मुँह फेर कर निकलता तो जापानी उसके मुँह पर चाँटा मार कर कहते—इधर देखो।

चाँटा खाकर मैंने वह भी देखा था।]

उनके दफ़्तर में ज़रा देर से पहुँचने पर ही उन्होंने कहा: 'हम जुर्माना नहीं करते।'

देर से गया क्लर्क प्रसन्न हुआ। किंतु तब जापानियों ने उसे पेट्रोल पिलाया।

एक क्लर्क ने नमक चुराया। जापानियों ने उसे एक बाल्टी भर कर समुद्र का खारी पानी पिला दिया। वे देर तक

हँसते रहे ।

मैंने देखा कि वे घर की लड़कियाँ पकड़ ले जाते थे, उन्हें बेइया बनाते थे । घर वाले देखते थे, मगर संगीनें हिम्मत तोड़ देती थीं । भय के कारण भाई ही अपनी बहनों को ले जाते थे ।

सिनेमा-घरों में औरतें नित्य ही छेड़ी जाती थीं ।

एक साठ वर्ष की बूढ़ी अँगरेज़ मिशनरी महिला को पकड़ कर जापानियों ने मज़ाक किया और उससे करीब दस बारह आदमियों ने बलात्कार किया ।

एक बहुत बूढ़ा गोरा पादरी था । उसकी सफेद सी दाढ़ी थी । वह रिक्शे में जा रहा था । संत्री के सामने थोड़ा ही रुका । संत्री ने उसे लौटाया ।

पादरी उतरा ।

संतरी ने कहा: 'भुको !'

वह फिर भुका ।

संत्री ने कहा: 'ऐसे नहीं, ऐसे....'

उसने दाढ़ी पकड़ कर उसे भुका दिया । बूढ़ा मुँह के बल गिर गया । संत्री ने उसके मुँह पर ठोकर दी । वे सब ठठा कर हँसने लगे ।

मैं सोचने लगा ।

क्या यह एशिया की मुक्ति थी कि यह कल तक मदांग घूमने वाले यूरोपीयन लोगों को सज़ा दे रहे थे ? लेकिन मुझे खयाल आया । कोरिया एशिया का ही तो देश है । वहाँ इन्होंने बच्चों को ज़बरन जापानी पढ़ाई है । और दादी अपने

नाती से सरलता से बात नहीं कर पाती ? और चीन ! चीन की हत्याओं का उत्तर कौन देगा ? क्या यह जापानी भारत को मुक्ति देंगे ? क्या यह हमें अपने दाँव-पेचों में खिलौना नहीं बना रहे थे ?

मैं सोचना नहीं चाहता था । यह सब मुझे पागल बनाता था ।



सन् १९४३ ई०

मुझे अपनी वह हालत देखकर कुछ ताज्जुब नहीं होता था ।

उन्होंने मुझे एकांत में कैद रखा । मेरी तरह ही एक कैदी और था । वह नवें दिन पागल हो गया, क्योंकि वह बिना बोले सोचते सोचते घबरा गया था या वह सोचना नहीं जानता था....

मैं पागल भी नहीं हुआ ।

जीवन में मुझे आस्था थी ।

आस्था ने ही सदैव जीवन को शक्ति दी है ।

मैं नहीं जानता कि यदि आस्था नहीं होती तो जीवन क्या होता !



लेफ्टिनेंट मत्सुओका । जापानी ! उसने दिया है मुझे यह दण्ड ! क्यों ! क्योंकि मैंने उससे सिगरेट मांगी थी ! और यह उसका अपमान था !

अकेला हूँ । अकेला ।

हूँ !

अकेला रखा है !

यह भी कोई सजा है ।

मैं अकेला रह सकता हूँ ।

उम्र भर अकेला रह सकता हूँ ।

इस तरह रहने में कष्ट हो क्या है ?

कुछ नहीं,

कुछ नहीं ।

वे समझते हैं, मैं नहीं रह सकता ।

लेकिन नहीं रह सकने का कारण क्या हो सकता है !

मैं क्या निर्बल हूँ ?

आखिर वे मुझे समझते क्या हैं ।

बहुत से साधु मौनी होते हैं ।

कैसे रहते हैं वे ?

असल में यह लोग जानते नहीं ।

जानेंगे भी कैसे कि भारत क्या है !

मन का संयम और मौन दोनों साथ साथ चलते हैं ।

बोलने से तो मन की शक्ति ही क्षीण होती है ।

जो चुप नहीं रहता उसे लोग अच्छा भी तो नहीं समझते ।

अब यह मुझे थोड़ी सी आदत भी पड़ जायेगी ।

चलो किसी की भिकभिक तो नहीं सुननी पड़ेगी । न किसी की डाँट ही । अपने एकांत रहेगा ।

यह कौन है ?

खाना लाया है ।

सोचता होगा, मैं इससे बोलूँगा ।

और फिर इसे मौका हाथ आयेगा कि यह या तो मुझे डाँटे या मेरी उपेक्षा करे ।

ऐसी क्या मीठी बात करेगा ये जो मैं इससे बोलूँ ।

बला से अपनी ।

तो मैंने यह मग रख दिया है, यह खाने की प्लेट है ।

आज ठीक दे रहा है सब !

अच्छा यह मुझे टटोल रहा है ।

आज इसकी आँखें भी कुछ नर्म हैं ।

क्यों ?

मुझे देख रहा है ।

देख रहा है मेरी हिम्मत यह मेरा रक्षक, मेरा भक्षक ।

चला गया ।

मुस्करा कर ।

मैं मुस्कराहट का जवाब मुस्कराहट से क्यों दूँ ?

सज़ा देने वाले से सज़ा पाने वाले का क्या ताल्लुक !

यह इंसान है ही कहाँ ?

दर्दिदा !

अरे समझते हैं कि अकेला मैं नहीं रह सकता !

मुझे इन्होंने समझा क्या है ?

मेरे तो भीतर ही इतना है कि मैं सारी ज़िदगी उसी से बोलता रहूँ, उसी को सुनता रहूँ ।

फिर जिस जीवन में कष्ट ही कष्ट है, उस में कोमलताओं

की आशा भी क्यों की जाये !

बड़ी हवा चलरही है ।

सारे पेड़ हिल रहे हैं ।

कैसे गा रहे हैं ।

मैं भी गाऊँ ?

अरे कोई सुनेगा ।

सुनेगा तो क्या कर लेगा ?

जापानी सोचेंगे कि बड़ा दिल वाला है ।

मुसीबतों में गाता है ।

हाँ हाँ गाते हैं । यह जिंदगी है ही क्या ?

पानी का बुलबुला !

चिड़िया गाती है ।

उससे कौन कहता है गाने को ! उसकी बला से कोई
सुने या सुने !

वह काली चिड़िया थी न जो रोज़ मेरे कमरे में आती
थी । दुम कैसी नीचे ऊपर करती थी । ऊपर नीचे……

ऊपर नीचे……

छोटी सी……

बड़ी प्यारी थी……

उस दिन मैंने चुमकारा था……

देखा था उसने मुझे !

कैसे देखा था ! क्या था उसकी आँखों में ?

मुझे मारोगे ?

मैंने क्या बिगाड़ा है, तुम्हारा !

मैं हँसा था ।

भला इसे मैं क्यों मारूँगा !

वह किताब भी क्या मुसीबत थी । सेंफो की वासना भरी कविताएँ । सेंफो की गमकती जवानी थी, ठीक जैसे अपने यहाँ थी अपनी सहपाठिनी .. नाम न लूँगा सच !

अब उसका नाम लेकर होगा भी क्या ?

अब तो वह जाने कितने बच्चों की माँ होगी ।

अरे मरने भी दो ।

गुलाम थी....

गुलाम पैदा किये होंगे ..

हम जैसे....

लेकिन गुलामी आज़ादी तो वक्त की बात है ।

असल में सभ्यता और संस्कृति की धार में इतिहास तो मागेगा इंसान....

अच्छा यह ले खा लूँ ।

आज चावल पका अच्छा है ।

पहले साले ककड़ बहुत डालते थे ।

अब नहीं डालते क्या ?

यह रहा !

निगलूँ कि थूकूँ ।

थूकने में फिर ऐसा लगेगा जैसे चावल कम थे । कमी बुरी-होती है । पेट माँगता है और ।

अरे कंकड़ मैं निगल गया । कहीं पेट में पथरी न हो जाय !

पथरी....

हो जायेगी तो...

दर्द होगा....

फिर मैं चिल्लाऊंगा ...

क्यों ?

आदमी दर्द से चिल्लाता क्यों है ?

दूसरों की हमदर्दी लूटने ?

आदमी अपने दुख में दूसरों की हमदर्दी क्यों चाहता है ?

हिम्मत का आदमी चुप रहता है ।

लेकिन चुपचाप सहते जाने में तो जिदगी नहीं ।

वनस्पति की सी सत्ता है ।

लेट क्यों न जाऊँ ।

आज का खाना अच्छा रहा ।

एक बात है । न बोलने से ताकत सी इकट्ठी हो रही

है । कितने दिन के लिये रखा है मुझे उन्होंने इस तरह ।

किस तरह ?

एकान्त में !

अट्ठाईस दिन के लिये !

अट्ठाईस का साला क्या हिसाब है ।

पूरे तीस कर देते ।

मालूम देता है उसके बाद मेरा तबादला होगा ।

गोया कैद न हुई नौकरी हुई ।

अच्छा ! क्या ऐसा हो सकता है कि मैं ठीक से रहूँ तो यह लोग खुश होकर मुझे छोड़ दे ।

छोड़ दे ! ! !

अरे वाह ! ! !

कोई व्यक्तिगत शत्रुता से उन्होंने थोड़े ही पकड़ा है ।
तो बेकार ही ?

बेकार नहीं । मैंने बंदूक उठाई थी ।

किनके खिलाफ़ ।

किसी के खिलाफ़ नहीं ।

तो क्यों आये थे तुम !

अपनी तनख्वाह सीधी करने ।

पता नहीं अब तनख्वाह का क्या होगा ?

मैं जैसा भागा हूँ, अपने लोगों को क्या पता कि मैं
कहाँ हूँ ।

उन्होंने सोचा होगा, मैं तो मर गया ।

पर मैं मरा तो नहीं हूँ ।

यह जीना क्या मौत नहीं है ?

नहीं । मौत भयानक है ।

ज़िंदगी किसी भी हालत में हो, मौत से बेहतर है ।

भूँठ !

तकलीफ़ नहीं पाई तुमने !

शायद !

वर्ना वे लोग क्यों आते सामने जिन्होंने मौत को ज़िंदगी
से अच्छा समझा ।

ज़िंदगी तब तक अच्छी है जब तक देह को कोई घोर-
कष्ट नहीं है ।

तो जीवन देह का सुख है ?

ऐसा भी कहाँ होता है !

यह तो खैर लड़ाई का जमाना है, लेकिन जो घरों पर
अमन के वक्त रहते हैं, उन्हें बेचेनी क्यों होती है ?

तो दो तरह के दुख हैं !

एक भूखे और घायल का ।

एक खाये पेट वाले का, तन्दुरुस्त का ।

मौत पहले वाले को अच्छी लगती है । और ज़िंदगी की
जो कशमकश वह उठाता है, उसको नाम देता है, वह इन्क-
लाब । और जिसके खिलाफ वह उठता है, वह उसे नाम देता
है बगावत ! लेकिन बगावत क्या है ? जो नहीं है, उसको पाने
के लिये, उसतक पहुँचने के लिये का फैलाव एक बगावत है ।
मसलन एक बीज है । धरती में है । वह बाहर निकलना चाहता
है । भारी मिट्टी में से वह सिर उठाता है, और पत्तों को इधर
उधर करता निकल आता है । ऊपर और देता है खुले आस्मा-
ओर नंगी हवा को सलामी । हवा उसे अपने हाथों से थपथ-
पाती है तो वह मजलूम, मिट्टी के अंधेरे में ज़िंदगी का चिराग
बन कर मुस्कराता है और आँधीपानी तूफानों को भेलने के
लिये तैयार होजाता है ।

कोन देखता है उसे ?

इतनी फुसंत दुनिया में है कहां ?

अरे मरने दो ।

नींद आरही है ।

थोड़ा सो क्यों न लूँ ?

थोड़ा वक्त नींद में ही निकल जायेगा ।

नींद आती इतनी कि मैं उन्तीसवें दिन उठता । लेकिन देह की थकान पूरी हो जाने पर नींद नहीं आती । थकान हो तो आती है ।

मैं एक काम करूँगा ।

अब सो लूँ

फिर नींद खुलने पर कुछ देर तक बैठूँगा ।

फिर अपने काँटेदार तारों के इसी घेरे में थोड़ा भागूँगा ।

नींद आजायेगी, क्योंकि भागने से थकन आजायेगी ।

पढ़ाई लिखाई भी क्या चीज़ है !

आदमी निकाल लेता है हल ।

हल ! ! कब नहीं निकाला उसने । उसने ज़िंदा रहने के लिये कितने तरीके नहीं अपनाये ।

अपनाये तो कैसे ?

सहानुभूति की छाया में ।

तरक्की की तो क्यों ?

इंसानों में कुछ ने बढ़ावा दिया, कुछ ने ताज्जुब करके उसके आगे बढ़ते रहने की आग को भड़काया ।

अच्छा, क्या अगर कोई न सुने तो ?

तो आदमी नहीं बढ़ेगा ?

क्या प्रकृति से लड़ना ही उसके लिये काफ़ी नहीं है ।

उफ़ ! नींद आरही है ।

सो लूँ !

नींद जानं कब आयेगी ?

आही जायेगी किसी दिन...

क्या उम्दा था यह शेर....

लेकिन अब याद नहीं आ रहा है....

जाने भी दो....

शेर के खिलाफ़ थी माँ !

जाने क्यों ? चिढ़ थी ।

माँ क्या कर रही होगी ?

सोचती होगी रनवीर नहीं आया....

रोती होगी....

अकेलापन महसूस करती होगी....

मै रहता था तो देखती भी नहीं थीं जैसे ..

देखती थी इतना मुझे जितना शायद मैं अपने को नहीं देखता था....

क्यों होती है माँ को अपने बच्चे से इतनी मुहब्बत....

स्नेह से गीली आँखें...

अरे ! मेरी आँखें क्यों गीली हो गईं !

माँ ! तू फिर क्यों करती है ? मुझे कोई तकलीफ़ थोड़े ही है ।

माँ इस तरह न सोच कि तूने मुझे अन्याय से हटाया है ।

पाल पोस कर...बड़ा करके....

भेज दिया....

बलि के बकरे सा....

कटने को....

माँ तूने लहू और मांस तो नहीं बेचा....

लेकिन मैं तो लहू और मांस ही हूँ...

छिः ! तू क्या करती ? और भी तो थे....

उनका क्या होता....

जीवन तब ही बनता है मां ! जब सब एक दूसरे के लिये भुक्त हैं....

मां मैं घबराया नहीं हूँ....

मुझे कोई चिंता नहीं है....

अरे यह जापानी मेरा क्या कर लेंगे....

जब तक साँस है जब तक तो कोई कुछ कर सकता नहीं।

पर जब साँस नहीं, तो कोई कुछ क्या कर सकता है ...

आदमी क्या घर पर नहीं मरते ...

शायद मैं सो गया था....

साँझ हो चली है....

सूरज पेड़ों के पीछे हो गया है....

किरनें छन-छन कर आ रही है....

आदमी चाहे हो न हो, प्रकृति अपना सुन्दर गीत गाती रहती है, और इसे जैसे किसी की अपेक्षा नहीं....

जब पृथ्वी पर मनुष्य नहीं था, तब भी यह सुन्दर पन्ने के रंग वाली हरियाली जगमग किया करती थी....

किया करती थी और इसे किसी की चिंता नहीं थी....

हर काम एक नियम से होता था....

बीज फूटता था....

वृक्ष बढ़ता था....

बड़ा होता था, छाया फैल जाती थी....

तब इसके नीचे कोई जंगली जानवर आकर बैठता था....
हो सकता है कभी दो आते थे, फिर वे खेलते थे और अपने
जैसे नये प्राणी को जन्म देने वाला खेल खेलते थे, पेड़ रहता
था....हो सकता है कोई विशालकाय जन्तु अपनी गर्दन उठा
कर इसकी पत्तियाँ चबा जाता था, पानी बरसता था, या
इसकी ऋतु आती थी और फिर इसमें पत्ते फूट निकलते
थे, फिर आते थे फूल और तब फल....

जिंदगी एक चलता फिरता पेड़ है, उम्र में इस पर आफतें
आती हैं, चली जाती हैं, जवानी इसका फूल है और बच्चा
है फल....

सैकड़ों पक्षी आकाश में उड़े जा रहे हैं....

कहाँ ?

घरों की तरफ....

इनका भी घर होता है....

घर कितनी प्यारी चीज़ है....

जिसके समझ आती है, वह घर रखता है....

यह परिंदे इस पूर्व के हैं, हमारे पक्षी यहाँ से पछांह
के उनके इतिहास की किसे याद है.... किसी को
नहीं । जीते हैं मर जाते हैं....

और आदमी क्या करता है....

जीता है मर जाता है....

मरने से डरता है,

जीता है तो दुख पाता है ।

कोई भी ऐसा इंसान न हुआ, न है, न होगा जिसे कभी दुख नहीं होगा, आदमी भी- औरत भी । बच्चा भी दुख की जानकारी रखता है, उसके अपने दायरे होते हैं, डर होते हैं ...

फिर यह जीवन क्या है ?

इस अतृप्त वेदना को ढँके रहने के लिये मनुष्य एक आदर्श बना लेता है...

कॉलेज में हम बहसें करते थे...

फ्रायड...

माक्स ...

ईसा...

मुहम्मद ...

बुद्ध ...

कृष्ण...

काना प्याऊ वाला उस सबको बकवास समझता था ।
वहाँ सब थे, यहाँ एक कुत्ता भी नहीं ।

कुत्ता कितना बफ़ादार जानवर होता है ? रौबिन्सन क्रूसो जब अकेला था, तब कुत्ते ने उसे कभी अकेलापन महसूस नहीं होने दिया ।

अकेलापन क्यों होता है ?

अकेलेपन में चिड़चिड़ाहट आती है ।

बेकन कहता था कि अकेलेपन में दो ही रह सकते हैं...

या तो जन्तु...

या भगवान...

एक क्योंकि समझता नहीं, उसका शरीर है एक, उसकी भूख प्यास है... बस वही काफ़ी है, अगर वह जन्तु मादा है तो, अगर वह नर है तो, जोड़ा बनते ही काम होगा एक दूसरे को सूँघना, चाटना और...

लेकिन भगवान !

वह इसलिये कि वह पूर्ण है...

मनुष्य न नितान्त पशु है ..

न पूर्ण ही...

इसलिये उसे साथ चाहिये ...

चाहिये बोलचाल...

चाहे वह घृणा करने वाले से ही हो...

चाहे अत्याचारी से ही ...

बोले न बोले... उससे क्या ...

आदमी को तो हँसना चाहिये...

हँसने से भूख लगती है...

मैं हँस लूँ, सच मुझे अपनी बेबकूफी पर हँसी आरही है...

लेकिन...

लेकिन हँसना ठीक नहीं है...

क्यों ?

भूख लगेगी तो उतना खाने को कहाँ से आयेगा...

वे तो नपा तुला भात देंगे...

कमीने जाने कैसा भात देते हैं उसमें एक मेलापन रहता है

सच जब खाकर देखता हूँ कुछ बाकी बचे हुए को तो

उबकाई आने लगती है.... पर उगलता नहीं कुछ....

सब खा जाता हूँ....

आँतें....

बड़ी राक्षसी हैं यह आँतें...

बेईमान पेट ..

मेरी शिक्षा एक फूल है, मेरी संस्कृति एक देवी, मेरी सभ्यता एक पुजारिन, लेकिन यह मेरा पेट एक नरक है ; सूहर न मेरी इज्जत देखता है, न मेरे जीवन का गौरव , मुझे तोड़ देता है यों ही ...

इस पेट का भी अभी तक आदमी इतजाम नही कर सका है ...

कर ले तो ...

युद्ध बन्द ।

मगर किस तरह करे ?

माक्स कहता था....

मगर वहाँ देखा किसने है अभी.... वह तो कॉलेज की बहसों थीं....

चावल तो वाकई घर पर बनता था....

देहरादून वाला, लंबा, और एक एक नग खिला हुआ, उसमें से सोंधी सोंधी खुशबू आती थी....

थोड़ा उठ कर धीरे धीरे घूम न लूँ ?

पेड़ों की छायाएँ लम्बी होगई हैं । जैसे अब यह जायेंगी ।
कहाँ जायेंगी पता नहीं । शायद यह अब अपनी सीमाएँ छोड़े

देंगी और सबमें व्याप्त होजायेंगी....

और अंधेरा छा जायेगा, बियाबान अंधेरा....डरावना....
और में आदिम मनुष्य जैसा इस निर्जन में रह जाऊंगा, क्या
डर है ...

क्या जंगल में रातें नहीं काटीं....अरे जब तक रहना है,
तब तक तो रहना ही है....

लेकिन वह दिन भी तो थे जब कहते थे हम, कि पर-
मात्मा नहीं है, क्योंकि विज्ञान नहीं मानता...

विज्ञान की अकल हो कितनी....

फिर आदमी को मुसीबत में सहारा ही क्या है ?

तो गोया परमात्मा एक कमजोरी को बहलाना है, जिससे
यह महसूस किया जाये कि नहीं हमारा भी एक बचाने वाला
है

हमारा ?

हम हैं क्या....

पहले हम थे कहाँ

आदिम कालों में जब तक यह पेड़ धरती में दब कर
कोयला भी न हुए थे, तब भी अंधेरा होता था....अंधेरा और
उजाला एक ही चीज के तो दो पहलू हैं। सूरज में कभी
अंधेरा नहीं होता....

एक चीज जब दूसरी से मिलती है, तब समय का जन्म
होता है, समय अपने आप में कुछ है ही नहीं।

अब कितना समय हो गया होगा ?

शाम को खाने को क्या है ?

हवा है ?

कुछ कन्द या जड़ी बूटी मिल जाती ?

लेकिन यहाँ तो काँटेदार तार हैं ...

पहले तो आराम से चोरी करने का मौका था ..

क्या मजे में मारमाइट के टिन उड़ाये थे..

इस्साले ! ढूँढते थे !

मैं भी धरती में गाड़ के बैठा रहता था उस पर । गये और खाये

लेकिन चोरी तो बुरी बात है न....

सब कहते हैं ...

यहाँ तक कि पेंग्विन जैसा पक्षी भी चोरी करते में पकड़ा जाता है तो दूसरे पक्षी के सामने आँखें नीची करके भेंप जाता है

पर चोरी भी तो कितने ही तरह की है....

एक है अपहरण डकैती....जो अपना नहीं है, उसे छीनना, क्योंकि मुझ में बल अधिक है और तू इसे अपने पास रख सके वह बल तुझ में नहीं है, अतः मेरी तृष्णा जायज है, और वह राजा है.... साम्राज्य....

एक है लूट...न्याय के आडंबर में निकलवा लेना, धर्म के, या जात के, या सेक्स के, या किसी भी वस्तु के छद्म में निकलवाना यह है कि उस्तादी, अक्लमन्दी का नाजायज फायदा

पर यह भी चोरी है ? कि—मुझे भी ज़िंदा रहने की चाह है, जीने दो मुझे मुझे बेकार मत मारो, मेरी बेकसी

का इतना फायदा न उठाओ—कि—तुम नहीं मानते तो लो मैं तुम्हारे क़दमों में पड़ा हूँ—उठा हुआ हाथ रोक दो—अब यह जो मेरी देह है, इसके अणुओं को इकट्ठा रहने दो—इन्हें अलग अलग मत करो—मुझमें एक चेतन है, वह कैसा भी हो—पर इन अणुओं के अलग अलग होने की बात से उसे डर लगता है, क्योंकि उसे इस अणु-संगठन से बड़ा प्यार होगया है—पर तुम नहीं मानते—तुम ऐसा छूता पहने हो जो सिर्फ़ कुचलता है, पर मैं कीड़ा नहीं हूँ, मुझमें बगावत का माद्दा है। जानते हो बगावत क्या है ? बगावत हमेशा लुटे हुए की चुनौती है कि मुझे कमज़ोर मत समझ। बगावत एक बुद्धिमान व्यक्ति की वह बात है जो अपने से बड़े और ताक़तवर लगने वाले हमलावर को ऐसा बेवकूफ़ बना देती है, कि वह अपने बचाव की तरफ़ लगता है और इस तरह उसका फ़ंलाव अन्त में संकोचन में बदल जाता है, बगावत की इस बुद्धिमत्ता के कई पहलू हैं। वह नेता की जीभ पर भाषण बनती है, और औसत आदमी इंकलाब न कह कर ज़िंदाबाद चिल्लाया करता है—और इसी में है यह चोरी—

हिस्ट—

कैसी चोरी—

पर इन जापानियों में इतना गर्व क्यों है ?

गर्व घृणा बन जाता है !

यूरोप के अहंकार का बदला है यह ? साम्राज्य को साम्राज्य काटता है ! ! !

साम्राज्य की तृष्णा में आदमी आदमी क्यों नहीं रहता !

शक्ति मिलने पर आदमी कुचलता क्यों है ?

लेकिन यह जापानी क्या सदा ऐसे ही कुचलेगे ?

भारत तो एशिया का है, फिर भारतियों से इन्हें घृणा क्यों है

नेताजी ने आज़ाद हिंद फौज बनाई है ..

देश-भक्तों की सेना है...

पर जापान की एड़ी के नीचे यह देश-भक्ति....

अरे मरने दो सालों को ..

कैसा घेरा लग गया है ...

चलो एक बात है

इन तारों में कँटीले तारों के घेरे में मैं चैन से सो सकता हूँ

यहाँ कोई दरिन्दा जानवर नहीं आसकता, लेकिन मैं स्वयं ऐसा बन्द हूँ जैसे पिंजड़े में कोई दरिन्दा रखा जाता है, अधपेट

क्या सर्कस के शेर को भी मुझ जैसा ही महसूस हुआ करता होगा

यही क्रोध

यही विक्षोभ

‘कोन है वहाँ ! !’

‘बोलते क्यों नहीं ?’

‘अरे बोलो !’

‘चोरों की तरह क्यों खड़े हो !’

‘चोर ! ! ! चोर ! ! ! !’

कोई नहीं ।

मेरा पुकारना शायद किसी को सुनाई नहीं देता ।

फिर कोई आवाज देता है जापानी में ।

फिर पेड़ों के पीछे दो आदमी दूटी फूटी अंगरेजी में बातें करते हैं—

‘वही है इंडियन ।

‘चिल्लाता क्यों है ?’

‘अकेला है । घबराने लगा है……’

‘पहले ही दिन ?’

‘वह हँसता है : ठीक हो जायेगा !’

‘कितने दिन की सज़ा है ?’

‘अट्ठईस दिन !’

‘तब तो पागल हो जायेगा !’

दोनों हँसते हैं ।

बड़ा क्रूर हास्य है !

यह नई बर्बरता है ।

मुझे क्रोध आ रहा है !

किस पर ?

अपने पर ?

दोष किसका है ?

मेरा !

क्यों ?

यहाँ चोर है ही कौन ? होही कौन सकता है !

फिर हो भी तो, मैं तो चौकीदार नहीं ।

मुझे चिल्लाने की जरूरत ही क्या थी !

मैं क्यों चिल्लाया था ।

वह कहता था—घबरा गया हूँ !

घबरा गया हूँ ? क्या सचमुच मैं घबरा गया हूँ ?

पर मुझे तो ऐसा नहीं लगता ?

उसने कहा था कि मैं पागल हो जाऊँगा

पागल

ह ह ह ह ह पागल... और मैं ... क्योंकि यहाँ कोई बात करने वाला नहीं है

मुझे किसी की क्या जरूरत है ... मैं जब बात करना चाहूँगा तब मुझे बात करने वालों की क्या कमी है.... मैं इस पेड़ से ही बात कर लूँगा । इस धरती से बोलूँगा ...

माता धरती

तू जो हमें धारण करती है ...

तू बड़ी बुरी है....

भला हमें धारण क्यों करती है

हममें ऐसे क्या सुखाव के पर लगे हुए हैं

और सचमुच क्या जरूरत है हमारी.... हम न हों तो

तो कोई बात नहीं

लेकिन साला कहता था कि मैं पागल हो जाऊँगा । साले पागल बना दूँगा सबको.... सूहर के बच्चो ! देखते रह जाओगे कमीनो.... तुम समझते हो मेरी अक्ल बिगड़

जायेगी इससे । अरे तुमने अभी देखा क्या है ?

मैं पेड़ों से बातें कर लूँगा पर तुमसे नहीं करूँगा....

पेड़ों से बातें करने का मज़ा तो तब है जब उन्हीं की बोली में बात की जाये ...

क्यों ? डॉक्टर जगदीश चन्द्र बोस ने प्रमाणित किया है कि पेड़ में जान होती है वह साँस लेता है तो क्या काटे जाने पर उसे दर्द भी होता होगा... तो क्या वह बोलता भी है ...

ज़रूर बोलता है ...

सर... सरररर... सरररररररर...

निरर्थक ध्वनि...

शब्द कहाँ बना...

शब्द !

तब बनता है जब ध्वनि में अर्थ मिलता है । अर्थ से मस्तिष्क में चित्र बनता है ...

कब ...

जब मनुष्य से मनुष्य मिलता है ...

अन्यथा वह रहता है... जैसे मैं हूँ ...

क्या मैं अकेला हूँ ...

मुझमें वह तो है... जिसे जुग कहता था—Collective Consciousness—सामूहिक चेतना । वह जब जाग उठती है और मनुष्य अन्तर्मुखी होजाता है ... और उसे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं होती ...

वह दुख जिसे व्यक्ति स्वयं स्वीकार कर लेता है, मनुष्य

की असीम शक्ति बन जाता है । सहनशीलता की वह सीमा बन जाता है, जब दुःख के समुद्र में सत्य बूँद बूँद बन कर समा जाता है, जहाँ वह दुःख में अपने सुखों का विसर्जन कर देता है, वही है मनुष्य का संयम, तब वह घृणा का कारण रहते हुए भी घृणा नहीं करता, जब वह अपने व्यक्तित्व में ऐसी करुणा पाता है कि अत्याचारी पर दया करता है और हिंसा का उत्तर हिंसा से नहीं देता, जैसा था ईसा.... उपवास और प्रार्थना ... एकान्त, मौन और चिंतन ... उसने मनुष्य को नयी शक्ति दी थी ...

मे कहता है....

सुनो !

ओ अंधेरे में गायब हो जाने वालो ! सुनो !

मैं नहीं हारूँगा....

तुम मुझे इस तरह नहीं मार सकते....

दूर से आवाज़ आती है, कठोर—चुप रह सूहर के बच्चे
वर्ना गोली मार दूँगा....

मार दे गोली, मैं नहीं डरता....

पर कोई कहता है वही—जवाब मत देना । इतनी देर की उसकी खामोशी की तड़पन बेकार हो जायेगी । अगर उसके कानों में भी इंसान की आवाज़ दूर से पड़ती रहेगी तब भी वह अपने को अकेला महसूस नहीं करेगा, उसकी बात मत सुनो, उसे जवाब न दो....

आवाज़ खत्म हो गई है....

तो यह है रहस्य....

मनुष्य की वाणी की इतनी शक्ति है...अत्याचारी जानता सब है....

अगर उसके कानों में भी इंसान की आवाज़ दूर से पड़ती रहेगी, तब भी वह अपने को अकेला महसूस नहीं करेगा....

अकेला महसूस नहीं करेगा....

अकेलापन....

अकेलापन....

हिश !

मैं कभी अकेला नहीं रह सकता....

वह कीट्स की कविता क्या है....

तू हमेशा दौड़ता रहेगा और वह हमेशा खूबसूरत लगती रहेगी....

शाश्वत सौंदर्य....

तो क्या मैं लड़ाई का क़ैदी नहीं हूँ ?

यह नयी तरह की यातना, मेरे व्यक्ति को, दी जा रही है, यह किसलिये ?

क्या है मेरा अपराध...

मैं सोचना नहीं चाहता....

मैं सोचना नहीं चाहता....

यह कँटीले तार मुझे नहीं रोक सकते...

मैं इनमें से निकल जाऊँगा....

उफ़ ! गचक गया कांटा....

तो मांस का दर्द भी एक अलग दर्द है ! नहीं ।

मैं बाहर नहीं जाऊँगा....

बाहर ही मुझे क्या मिल जायेगा....

वे मुझे फिर पकड़ कर बन्द कर देंगे....

क्या कहा था शालिब ने....

मैं गा रहा हूँ....

पहले आती थी हालेदिल पे हँसी

अब किसी बात पर नहीं आती....

गीत बढ़ता जा रहा है....

प्यास लग रही है, प्यास से गला चटक रहा है ।

मेरा मग कहाँ है ?

कितना गहरा स्याह अंधेरा है....

यह रहा, यह रहा....

पानी ! अरे वाह रे पानी !

यार पानी ! तू न होता तो कसम से ज़िदगी न रहती !

पानी बड़ी अच्छी चीज है....

क्या लिखा है बायरन ने....

Roll on, Roll on....

गरजता रह भीम समुद्र और उमड़, प्रचण्ड निर्घोष के साथ....

विजन में भरदे अपना हाहाकार...

शून्य में तेरी हिलोरों के थपेड़े गूँजते रहें....

निकल आये हैं तारे....

कितने प्यारे हैं....

कमबख्त दूर हैं न, तभी अच्छे लगते हैं ।

कौन जानता है इन पर कितनी सृष्टियाँ हैं, और कौन जानता है, वहाँ भी सृष्टि का अर्थ है, वेदना, पीड़ा, दुःख और यातना.... एक ही के अनेक पर्याय, क्योंकि दुख हो गया है असीम.... उसका कहीं अन्त नहीं लगता, वह निरंतर बढ़ता जा रहा है,....

वह कब तक बढ़ता रहेगा....

इसी तरह चलता रहेगा....



रनवीर ! दो दिन बीत गये हैं ।

नहीं तीन दिन ।

यह कोई तरीका नहीं है । तब क्या करूँ ?

कौन ?

मत्सुओका ।

क्रीड़ा कैसी खड़ी है उसकी वर्दी में । उसके चेहरे पर कैसा मत्त भाव है । वह देख रहा है मुझे दूर से । जैसे कोई शिकार का जन्तु हूँ । वह जैसे मुझे मनुष्य नहीं समझता । कैसी विचित्र वृत्ति है, उसके मुख पर । हिंसा कैसी स्थिर होगई है उसकी आँखों में ।

उसे देख कर जापानी सोलजर सैलूट देते हैं । उत्तर देता है, वह सिर हिला कर ।

मेरी ओर क्या देख रहा है, वह इतनी गौरसे ।

सोचता होगा कि इसका क्या हाल है ?

अगर यह आकर मुझसे बोल ले तो ।

नहीं बोलेगा !

तो क्या अब जीवन-भर न मुझसे कोई बोलेगा, न मैं किसी की बात सुन सकूँगा ।

इसे क्यों न चिढ़ाऊँ ?

मैं अगरेजी में चिल्लाता हूँ : ओ कुत्ते । इधर आ !

लेकिन उसे क्रोध नहीं आता ।

मुस्करा रहा है ।

कोई बढ़ना चाहता है, उसे वह हाथ के इशारे से रोक देता है ।

फिर कोई नहीं बोलता ।

मैं चिल्लाता हूँ आओ ! मुझे मार डालो । तुम मुझे समझते क्या हो ? तुम मुझे मार डालना चाहते हो, तो फिर एक ही बार मैं गला क्यों नहीं काट देते ।

यह क्या मेरा ही स्वर है ! !

क्या यह विकृत स्वर मेरा ही है ?

नहीं, यह मैं नहीं हो सकता ।

पर वे लोग मुस्करा रहे हैं ।

मैं पिंजड़े में बंद एक जानवर हूँ और वे मुझे देख रहे हैं । बोलता कोई नहीं है ।

मैं तारों पर झपट पड़ा हूँ

चिल्ला रहा हूँ

मैं मर जाऊँगा, तुम मुझे तड़पा तड़पा कर देखते रहो,

यह मैं नहीं सह सकता नहीं सह सकता

पर वे नहीं बोलते

कांटे गड़ते हैं

और मैं भयानक आर्त्तनाद करके कहता हूँ— गड़ जाओ,
गड़ जाओ, मेरे शरीर में

यह दुख अच्छा है ...

अच्छी है यह वेदना ...

साकार तो है यह

पर यह खामोशी

मत्सुओका नहीं सुन रहा है, नहीं सुन रहा है

केवल देख रहा है

मैं भयाक्रान्त सा पीछे हट कर गिर पड़ा हूँ

‘मुझे यहाँ से निकाल लो निकाल लो’

पर वे सब चले गये हैं

तारे भाँय भाँय करते निकल आये हैं . . .

अंधेरा मुझे खाये जा रहा है ...

‘ओ तारो तुम गिर पड़ो ...’

‘और अंधेरे ! तू मुझे पीजा’

मेरा माँस दर्द कर रहा है

यह दर्द कितना अच्छा है

सूरज निकल आया है

कितना उजाला है

सूर्य उजाला

क्या मैं पशु हूँ...

जापानी सिपाही खाना लाया है...

मे खड़ा हूँ...

उसका हाथ भीतर घुसता है....

मैं पकड़ लेता हूँ, वह कुढ़ता है....मैं चिल्लाता हूँ, बर्बर...
जंगली...भेड़िये....

वह जोर लगा रहा है....मैं उसे काट खाता हूँ....एक संगीन
मेरी जाँघ में घुसती है....

मैं गिरता हूँ....

‘एक बार एक शब्द तो बोल जा कसाई....

‘ओ जल्लाद....एक बार एक गाली तो दे जा....

पर नहीं....

वह चला गया है....

खून बह रहा है....

लाल खून....

मैं तड़प रहा हूँ....

आज खाना भी नहीं है....

पानी....गंदला पानी....

उफ़ ! गला चटक रहा है....

उठा नहीं जाता....
 'पानी !!! पानी !!!!....
 कोई नहीं सुनता....
 एक सिपाही बढ़ता है....
 देखता है, फिर लौट जाता है....
 फिर आ जाती है अंधेरी....
 मैं अपने बाल नोंच रहा हूँ....
 चिल्ला रहा हूँ....
 लेकिन उत्तर कोई नहीं देता....
 आज तो हवा भी नहीं बोलती....

फिर आया है मत्सुग्रोका....
 आज कितने दिन हो गये हैं....
 मुझे याद नहीं है....
 क्यों आया है तू कमीने, मुझे इसी तरह घुट घुट कर मर
 जाने दे ।

मैं उससे उलझा हूँ....
 पीछे आहट सुनाई देती है....
 सिपाही चुपचाप खाना रख गया है....
 भूख लग रही है मुझे....
 मैं खा रहा हूँ....
 वे मुझे देख रहे हैं....

मत्सुओका मुस्कराता है....
 मैं खाकर उठता हूँ....
 वह मेरी ओर कुछ फेंकता है....
 चाकलेट !!!
 मैं उसे उठाकर हर्ष से खोलता हूँ ..
 पत्थर का घिसा टुकड़ा....
 जितनी शक्ति है उससे उसे मैं उसी पर फेंकता हूँ....
 पर तारों में वह उलझ कर गिर जाता है....
 मैं उसे चिल्ला चिल्ला कर गालियाँ देता हूँ....
 और वह मुस्कराकर चला गया है....
 मे धरती पर पड़ा छटपटा रहा हूँ....
 कितने दिन बीत गये हैं....
 यह सब कितना शून्य है....
 इस दुनियाँ में एक आस्मान है, वह सूना है, एक धरती
 है, वह एक कैदखाना है....
 इस धरती और आस्मान के बीच में मैं चिल्ला रहा हूँ—
 ज़िदगी एक वेवकूफ़ की पुकार है....
 लेकिन कोई नहीं बोलता....

नहीं जानता, कितने दिनरात बीतगये हैं, नहीं जानता
 कितने और बाकी हैं । ऐसा लग रहा है जैसे किसी पहाड़ के
 नीचे दबा पड़ा है

घाव फिर फट गया है निकल आया है खून

‘डॉक्टर ! ‘मैं चिल्ला रहा हूँ’, मेरा घाव पक गया है, मेरे घाव में बड़ा दर्द हो रहा है, मेरा घाव सड़ गया है, मुझे डॉक्टर को दिखाओ’

देखता है....

लेकिन कोई नहीं आरहा है

यह शायद हाथ काट खाने की सजा है

मवाद अब चपका चला रहा है.... मुझे घाव में से बदबू आरही है देही तप रही है....

‘डॉक्टर ! अच्छा हो जायेगा यह ?’

कोई उत्तर नहीं ।

‘देखो डॉक्टर ! रानों में कैसी गिल्टी उछल आई है ?’

कोई उत्तर नहीं ।

‘डॉक्टर ! इसमें सूई लगाओगे, मेरे दर्द तो न होगा ? देखो मैं बहुत कमजोर होगया हूँ, डॉक्टर ! मेरे केस को रिक-मेन्ड करो ज़रा मुट्ठी भर भात से क्या होता है डॉक्टर ! माँ तो मुझे बहुत खिलाती थी’

कोई उत्तर नहीं

अब सूरज भी डूब गया है

फिर छागया है वही अंधेरा । हवा नहीं है यह, यह किसी बहुत काले और भयानक घाव में मवाद के चपके की थप थप सुनाई दे रही है.... और इस मरीज की तकलीफ़ को भी कोई जवाब नहीं देता । यह सूना आस्मान.... बियाबान, यह बादल

रेत के बगूले हैं, यह विस्तार है, एक कठोर दुर्दमनीय विजन मरुभूमि-सा, अपने ही हाहाकार में बिक्षुब्ध, पागल सा... नोंच-रहे हैं यह पेड़ अपने बाल ...

‘मुझे बचाओ... मैं मर रहा हूँ... सचमुच मैं भूँठ नहीं बोलता... मेरे बड़ा दर्द हो रहा है...’

कराह मेरे पास लौट आई है ...

‘हे भगवान ! मैंने बहुत पाप किये हैं . क्या मैंने पहले जन्म में किसी को इसी तरह तड़पा तड़पा कर मारा था ... क्या इसी तरह मैंने भी उसे कहीं विजन में बंद कर दिया था ... क्या वह भी अनजान सा हाँफ हाँफ कर कराह कराह कर मर गया था ... क्या उसको भी चील और गिद्ध चोंच मार मार कर खा गये थे ... मेरी रक्षा करो भगवान . अब कभी पाप नहीं करूँगा ... अब कभी भूँठ नहीं बोलूँगा ...’

‘अरे मुझे बचाओ ... मेरी जाँघ दर्द से फटी जा रही है ... आह ... अरे कोई मुझे पानी पिला दो ...’

कोई उत्तर नहीं ...

यह क्या है ...

पत्थर ...

मैं पत्थर चाट रहा हूँ ...

पर क्या पत्थर से भी पानी निकलता है ...

पत्थर से भी कभी प्यास बुझती है ...

‘मुझसे उठा नहीं जाता ... मुझे उठाओ ! मुझे दो घूँट पानी तो पिला दो ...’

‘वृक्षो नहीं बोलते ! कोई नहीं बोलता ! इतनी बेदर्द

है यह दुनिया !

‘माँ ! तेरा बेटा यहाँ अकेला तड़प रहा है माँ ! उसे पानी पिलाने को भी कोई नहीं है…… माँ ! पानी पिलादे माँ…… धीरे माँ ! धीरे ! जाँघ में बड़ा दर्द है…… जल्दी चली जा माँ · कहीं वे तुझे न पकड़ लें…… माँ वे दरिंदे हैं…… वह तेरे प्यार की इज्जत नहीं करेंगे माँ…… बहुत दूर……पहाड़ों नदियों, जगलो, और समुद्रों को पार करके आई है न माँ ! इस तीनों लोकों के विराट आडम्बर में मेरे लिये सिवाय तेरी आँखों के कहीं भी आँसू नहीं हैं माँ ! माँ ! प्यास लग रही है……

‘माँ ! देख ! जिसे तूने अपनी छाती का दूध पिलाया था वह आज घायल कराहता हुआ पत्थर चाट चाट कर दम तोड़ रहा है……और किसी को भी उसकी मौत की चिन्ता नहीं है……नहीं है यहाँ……नहीं है यहाँ……अरे वही अंधेरा है……

‘अरे मैं मर रहा हूँ, कोई तो आओ । एक बार इस मरते हुए की बात तो सुन जाओ । माँ से कहना कि उसका बबुआ चला गया है……सदा के लिये चला गया है……वह क्यों बैठी रहे दरवाजे की ओर आँखें लगाये ‘वह तो कभी नहीं आयेगा…… उसकी हड्डियाँ किसी अनजान कठोर धरती पर सदा के लिये छितर जायेंगी और शायद उन्हें कुत्ते छिछोड़ छिछोड़ कर फेंक जायेंगे……

‘माँ ! यह सिर है न ! यह भी सिर्फ हड्डी बन जायेगा—गोल……गोल……और इस देह का मूल्य ही क्या है……कुछ नहीं मौत……मौत आ रही है……अरे दर्द ! रुक जा ! माँ से आखिरी

बार तो मिल लेने दे ! वह मेरी जननी है... उसी ने मुझे यह आकार दिया है... मेरी माँ... वही है वह ममता का समुद्र जिसने मुझे दुलरा दुलरा कर बड़ा किया है... क्या इसीलिये कि यह पत्थर चाट चाट कर उसका बेटा यहाँ एकांत में तड़प तड़प कर मर जाये...

छोटे... देख तेरे भैया को क्या हो गया ...

नीलम... आ मेरे पास आ बच्चे... तू हँसता रह... और मैं मरते में डरूँगा नहीं बच्चे...

आ मेरी बच्ची सुषमा... अपनी प्यारी प्यारी आँखों से दमदुमाती मेरी तरफ़ देखती रह... मुस्कराती रह मेरी लाड़ली... भैया... हूँ... तेरा बड़ा भैया... मेरी दुध-मुँही... बड़ी होइयो तेरा ब्याह हो ... तू दुल्हन बने ... पर वह सब देखने तेरा भइया तो नहीं रहेगा मेरी राजरानी बिटिया... किसी दिन याद करेगी कि वह एक बियावान जंगल में पत्थर चाट चाट कर मर गया था... उसकी बात का जवाब देने वाला तक कोई न था ... वह चिल्लाता था, लेकिन हवा तक उसकी बैरिन होगई थी...

‘अम्माँ मैं जारहा हूँ ... में अब जारहा हूँ... जहाँ पिताजी गये थे...’

तो क्या यह खबर सुन कर तुम फिर बुक्का फाड़ फाड़ कर रोओगी ...

‘मत रोना माँ ...

‘जीवन का मोल ही क्या है...

‘हमतो जानवर हैं ...

‘जानवर के लिये भो कोई रोता है ...’

‘अरे मुझे कोई पानी पिला दो मुझसे उठा नहीं जाता’

अंधेरा कितना गहरा होगया है । इस अंधेरे में मुझे कुछ भी नहीं दिखाई देता ।

अम्मा ! तुम बिस्तर बिछाती थीं और मैं सोता था, पर यहाँ उन्होंने मुझे नंगी धरती पर पटक रखा है, कंकड़ चुभ रहे हैं ।

उनके क्या हृदय नहीं है सचमुच ... या उनके माँ नहीं है ? माँ ही नहीं होगी ... नहीं तो वे इतने निर्दयी कैसे हो सकते थे एक बार भी मुड़ कर नहीं देखते एक माँ का दुलारा इस तरह दर्द से चिल्ला रहा है, पर कोई भी भाँक करके नहीं देखता

क्या मैं जाग रहा हूँ, या सो रहा हूँ मैं ..

तू कौन है ? अरे छोटे ! यह कहाँ लगा लाया तू ! अरे कपड़े बदल डाल !

भैया मुझे मारा है लिली ने

अच्छा ! लिली ने मारा है, मारंगे उसे कीचड़ लगा

लाया है.... जा धोले भैया....

भैया मैंने उसके मुँह पर कीचड़ मल दी खूब ...

फिर बड़ी बड़ी आँखें....

सब ठठाकर हँसते हैं....

माँ कहती है—बबुआ ! तू भी बड़ा शैतान था, ऐसा ही.... तुझे तो मैं जानती हूँ....

‘ओहो....’ ताली बजा रहा है छोटे—‘भैया भी बड़े ऊधमी थे’

‘चल पापी! हाथ मुँह धो !’ माँ स्नेह से डाँटती है—‘बड़े भैया का अदब नहीं करता....’

रनवीर हँसता है....

और यह कौन हँस रहा है

चारों तरफ धूल छा रही है, धूँआ उठ रहा है....अगरेज है रीबर्ट....सारी चमड़ी इसकी जल गई है, पर हँस रहा है.... क्योंकि पागल होगया है अन्तिम क्षण में, वेदना की अति से ...सिंगापुर में हाहाकार मच रहा है ...

एडजूटेन्ट आँखें फिरा लेता है

शायद उसकी आँखों में आँसू आगये हैं

‘हाल्ट ! !’ कठोर स्वर सुनाई दे रहा है

‘कौन होगा यह ?

उठ कर देखूँ

पर उठा तो नहीं जाता

‘माँ ! प्यास लग रही है.... पानी पानी अरे कोई मुझे पानी पिलादो,....खून में घड़कते हुए दिल की तुम्हें सौगंध

है इंसान के बेटो अपने जैसी ही एक लहू और मांस की एक देह को जरा पानी पिला दो ... मैं भारतीय नहीं हूँ, मैं जापानी नहीं हूँ ... मैं कोई नहीं हूँ ... तुम चाहो तो मेरा नाम मुझसे छीन लो मुझे कपड़े उतार कर देखो मेरे दिल को देखो मैं भी तुम्हारा ही जैसा एक इंसान हूँ ... अम्मा ! आदमी आदमी को क्यों नहीं चाहता ! कौन बना देता है उसे इतना पत्थर कि उसमें करुणा नहीं जागती ...

दृश्य बदल गया है

चारों ओर घना जङ्गल है । कहीं साँप रेंग रहा है, कहीं कोई विचित्र सा कीड़ा दिखाई दे रहा है ...

रनवीर उसे कुचलता है क्योंकि वह उसे काट लेना चाहता है इसी वन में सोना है साँय साँय ... साँय साँय पत्ता भी खड़कता है तो लगता है कि आस्मान टूटा आरहा है ।

अँधेरे में ही भयानक स्वर से बन्दूकें धाँय धाँय करती हैं ।

कभी कभी कोई चीत्कार अपनी मुट्ठी में सारे सन्नाटे को भींच कर निचोड़ने लगता है तब लगता है सारा जङ्गल घुट रहा है

धरती पर लोहू है, लाशें पड़ी हैं

उन लाशों पर गिद्ध बैठे हैं

गिद्ध ने मुर्दा सैनिक का दिल खा लिया है ...

लेकिन अभी तक फटी कमीज़ से एक चिट्ठी भाँक रही है ।

रनवीर देखता है

उसकी पत्नी की प्यार भरी चिट्ठी है

रनवीर ! गिद्ध प्रेम-पत्र नहीं पढ़ता

उसने तो पढ़ने वाले का हृदय ही कुतर कुतर कर खा लिया है

कब तक बैठी रहेगी इसकी पत्नी, इस पत्र का उत्तर पाने के लिये आस्मान की सी आँख जैसे भोर और साँझ सी फैला देगी अपनी दोनों पलकें, और काल के शून्य में बैठी रहेगी वह प्यारे की प्रतीक्षा में

माँ ! वह मेरी लाश नहीं है ...

मैं तो अभी चल रहा हूँ माँ ! तुम्हारा रनवीर तो ज़िंदा है ।

माँ ! मैं किसी को नहीं मारना चाहता, पर ज़िंदा रहने के लिये मारना पड़ता है । माँ ! तुम स्त्रियाँ अच्छी नहीं होतीं । अच्छी होतीं तो तुम्हारे सब ही बेटे अच्छे क्यों न होते ! वे आपस में इस तरह लड़ते ही क्यों

सुषमा ! क्या बात है !

मुझे !

हाँ बोल तुझे ।

मुझे लेल ताइये (रेल, चाहिये ।)

‘अच्छा हमारी सुषमा रेल का क्या करेगी !’

‘हम थवाली थवाली खेलेंगे थवाली थवाली’

ऊपल थाली, नीचे थाली ...

बीच में बैथा मदाली

घाव फिर फट गया है निकल आया है खून

‘डॉक्टर ! ‘मैं चिल्ला रहा हूँ’, मेरा घाव पक गया है, मेरे घाव में बड़ा दर्द हो रहा है, मेरा घाव सड़ गया है, मुझे डॉक्टर को दिखाओ’

देखता है....

लेकिन कोई नहीं आरहा है

यह शायद हाथ काट खाने की सजा है

मवाद अब चपका चला रहा है.... मुझे घाव में से बदबू आरही है देही तप रही है....

‘डॉक्टर ! अच्छा हो जायेगा यह ?’

कोई उत्तर नहीं ।

‘देखो डॉक्टर ! रानों में कैसी गिल्टी उछल आई है ?’

कोई उत्तर नहीं ।

‘डॉक्टर ! इसमें सूई लगाओगे, मेरे दर्द तो न होगा ? देखो मैं बहुत कमजोर होगया हूँ, डॉक्टर ! मेरे केस को रिक-मैन्ड करो ज़रा मुट्ठी भर भात से क्या होता है डॉक्टर ! मां तो मुझे बहुत खिलाती थी’

कोई उत्तर नहीं

अब सूरज भी डूब गया है

फिर छागया है वही अंधेरा । हवा नहीं है यह, यह किसी बहुत काले और भयानक घाव में मवाद के चपके की थप थप सुनाई दे रही है.... और इस मरीज की तकलीफ़ को भी कोई जवाब नहीं देता । यह सूना आस्मान.... बियाबान, यह बादल

रेत के बगूले हैं, यह विस्तार है, एक कठोर दुर्दमनीय विजन मरुभूमि-सा, अपने ही हाहाकार में बिक्षुब्ध, पागल सा... नोंच-रहे हैं यह पेड़ अपने बाल

‘मुझे बचाओ... मैं मर रहा हूँ ...सचमुच मैं भूँठ नहीं बोलता... मेरे बड़ा दर्द हो रहा है...’

कराह मेरे पास लौट आई है ..

‘हे भगवान ! मैंने बहुत पाप किये हैं ..क्या मैंने पहले जन्म में किसी को इसी तरह तड़पा तड़पा कर मारा था .. क्या इसी तरह मैंने भी उसे कहीं विजन में बद कर दिया था... क्या वह भी अनजान सा हाँफ हाँफ कर कराह कराह कर मर गया था ... क्या उसको भी चील और गिद्ध चोंच मार मार कर खा गये थे.... मेरी रक्षा करो भगवान .. अब कभी पाप नहीं करूँगा... अब कभी भूँठ नहीं बोलूँगा ..’

‘अरे मुझे बचाओ ... मेरी जाँघ दर्द से फटी जा रही है ... आह... अरे कोई मुझे पानी पिलादो...’

कोई उत्तर नहीं....

यह क्या है

पत्थर....

मैं पत्थर चाट रहा हूँ....

पर क्या पत्थर से भी पानी निकलता है ..

पत्थर से भी कभी प्यास बुझती है....

‘मुझसे उठा नहीं जाता... मुझे उठाओ ! मुझे दो घूँट पानी तो पिलादो...’

‘वृक्षो नहीं बोलते ! कोई नहीं बोलता ! इतनी बेदर्द

है यह दुनिया !

‘माँ ! तेरा बेटा यहाँ अकेला तड़प रहा है माँ ! उसे पानी पिलाने को भी कोई नहीं है…… माँ ! पानी पिलादे माँ…… धीरे माँ ! धीरे ! जाँघ में बड़ा दर्द है…… जल्दी चली जा माँ ! कहीं वे तुझे न पकड़ लें…… माँ वे दरिंदे हैं…… वह तेरे प्यार की इज्जत नहीं करेंगे माँ…… बहुत दूर……पहाड़ों नदियों, जगलो, और समुद्रों को पार करके आई है न माँ ! इस तीनों लोकों के विराट आडम्बर में मेरे लिये सिवाय तेरी आँखों के कहीं भी आँसू नहीं हैं माँ ! माँ ! प्यास लग रही है……

‘माँ ! देख ! जिसे तूने अपनी छाती का दूध पिलाया था वह आज घायल कराहता हुआ पत्थर चाट चाट कर दम तोड़ रहा है……और किसी को भी उसकी मौत की चिन्ता नहीं है……नहीं है यहाँ……नहीं है यहाँ……अरे वही अंधेरा है……

‘अरे मैं मर रहा हूँ, कोई तो आओ । एक बार इस मरते हुए की बात तो सुन जाओ । माँ से कहना कि उसका बबुआ चला गया है……सदा के लिये चला गया है……वह क्यों बैठी रहे दरवाजे की ओर आँखें लगाये……वह तो कभी नहीं आयेगा…… उसकी हड्डियाँ किसी अनजान कठोर धरती पर सदा के लिये छितर जायेंगी और शायद उन्हें कुत्ते छिछोड़ छिछोड़ कर फेंक जायेंगे……

‘माँ ! यह सिर है न ! यह भी सिर्फ हड्डी बन जायेगा—गोल……गोल……और इस देह का मूल्य ही क्या है……कुछ नहीं मौत……मौत आ रही है……अरे दर्द ! रुक जा ! माँ से आखिरी

बार तो मिल लेने दे ! वह मेरी जननी है...उसी ने मुझे यह आकार दिया है...मेरी माँ...वही है वह ममता का समुद्र जिसने मुझे दुलरा दुलरा कर बड़ा किया है...क्या इसीलिये कि यह पत्थर चाट चाट कर उसका बेटा यहाँ एकांत में तड़प तड़प कर मर जाये...

छोटे...देख तेरे भैया को क्या हो गया...

नीलम...आ मेरे पास आ बच्चे...तू हँसता रह...और मैं मरते में डरूँगा नहीं बच्चे...

आ मेरी बच्ची सुषमा...अपनी प्यारी प्यारी आँखों से दमदुमाती मेरी तरफ़ देखती रह...मुस्कराती रह मेरी लाड़ली... भैया... हूँ... तेरा बड़ा भैया...मेरी दुध-मुँही...बड़ी होइयो तेरा ब्याह हो ... तू दुल्हन बने ... पर वह सब देखने तेरा भइया तो नहीं रहेगा मेरी राजरानी बिटिया... किसी दिन याद करेगी कि वह एक बियावान जंगल में पत्थर चाट चाट कर मर गया था... उसकी बात का जवाब देने वाला तक कोई न था ... वह चिल्लाता था, लेकिन हवा तक उसकी बैरिन होगई थी...

‘अम्मा मैं जारहा हूँ ... में अब जारहा हूँ... जहाँ पिताजी गये थे...’

तो क्या यह खबर सुन कर तुम फिर बुक्का फाड़ फाड़ कर रोओगी ...

‘मत रोना माँ ...’

‘जीवन का मोल ही क्या है...’

‘हमतो जानवर हैं ...’

‘जानवर के लिये भो कोई रोता है ...’

‘अरे मुझे कोई पानी पिला दो मुझसे उठा नहीं जाता’

अंधेरा कितना गहरा होगया है। इस अंधेरे में मुझे कुछ भी नहीं दिखाई देता।

अम्मा ! तुम बिस्तर बिछाती थीं और मैं सोता था, पर यहाँ उन्होंने मुझे नंगी धरती पर पटक रखा है, कंकड़ चुभ रहे हैं।

उनके क्या हृदय नहीं है सचमुच ... या उनके माँ नहीं है ? माँ ही नहीं होगी ... नहीं तो वे इतने निर्दयी कैसे हो सकते थे एक बार भी मुड़ कर नहीं देखते एक माँ का दुलारा इस तरह दर्द से चिल्ला रहा है, पर कोई भी भाँक करके नहीं देखता

क्या मैं जाग रहा हूँ, या सो रहा हूँ मैं ...

तू कौन है ? अरे छोटे ! यह कहाँ लगा लाया तू ! अरे कपड़े बदल डाल !

भैया मुझे मारा है लिली ने

अच्छा ! लिली ने मारा है, मारेंगे उसे कीचड़ लगा

लाया है.... जा धोले भैया....

भैया मैंने उसके मुँह पर कीचड़ मल दी खूब...

फिर बड़ी बड़ी आँखें....

सब ठठाकर हँसते हैं....

माँ कहती है—बबुआ ! तू भी बड़ा शैतान था, ऐसा ही.... तुझे तो मैं जानती हूँ....

‘ओहो....’ ताली बजा रहा है छोटे—‘भैया भी बड़े ऊधमी थे’

‘चल पापी ! हाथ मुँह धो !’ माँ स्नेह से डाँटती है—‘बड़े भैया का अदब नहीं करता....’

रनवीर हँसता है....

और यह कौन हँस रहा है

चारों तरफ धूल छा रही है, धूँआ उठ रहा है.... अंगरेज है रीबर्ट.... सारी चमड़ी इसकी जल गई है, पर हँस रहा है ... क्योंकि पागल होगया है अन्तिम क्षण में, वेदना की अति से ... सिगापुर में हाहाकार मच रहा है ...

एडजूटेन्ट आँखें फिरा लेता है

शायद उसकी आँखों में आँसू आगये हैं

‘हाल्ट ! !’ कठोर स्वर सुनाई दे रहा है

‘कौन होगा यह ?

उठ कर देखूँ

पर उठा तो नहीं जाता

‘माँ ! प्यास लग रही है.... पानी पानी ... अरे कोई मुझे पानी पिलादो,.... खून में घड़कते हुए दिल की तुम्हें सींगंध

है इंसान के बेटो अपने जैसी ही एक लहू और माँस की एक देह को जरा पानी पिला दो ... मैं भारतीय नहीं हूँ, मैं जापानी नहीं हूँ मैं कोई नहीं हूँ तुम चाहो तो मेरा नाम मुझसे छीन लो मुझे कपड़े उतार कर देखो मेरे दिल को देखो मैं भी तुम्हारा ही जैसा एक इंसान हूँ अम्मा ! आदमी आदमी को क्यों नहीं चाहता ! कौन बना देता है उसे इतना पत्थर कि उसमें करुणा नहीं जागती ...

दृश्य बदल गया है ..

चारों ओर घना जङ्गल है । कहीं साँप रेंग रहा है, कहीं कोई विचित्र सा कीड़ा दिखाई दे रहा है ...

रनवीर उसे कुचलता है क्योंकि वह उसे काट लेना चाहता है इसी वन में सोना है साँय साँय ... साँय साँय . पत्ता भी खड़कता है तो लगता है कि आस्मान टूटा आरहा है ।

अंधेरे में ही भयानक स्वर से बन्दूकें धाँय धाँय करती हैं ।

कभी कभी कोई चीत्कार अपनी मुट्ठी में सारे सन्नाटे को भींच कर निचोड़ने लगता है तब लगता है सारा जङ्गल घुट रहा है

धरती पर लोहू है, लाशें पड़ी हैं

उन लाशों पर गिद्ध बैठे हैं

गिद्ध ने मुर्दा सैनिक का दिल खा लिया है ..

लेकिन अभी तक फटी कमीज़ से एक चिट्ठी भाँक रही है ।

रनवीर देखता है

उसकी पत्नी की प्यार भरी चिट्ठी है

रनवीर ! गिद्ध प्रेम-पत्र नहीं पढ़ता

उसने तो पढ़ने वाले का हृदय ही कुतर कुतर कर खा लिया है

कब तक बैठी रहेगी इसकी पत्नी, इस पत्र का उत्तर पाने के लिये आस्मान की सी आँख जैसे भोर और साँझ सी फैला देगी अपनी दोनों पलकें, और काल के शून्य में बैठी रहेगी वह प्यारे की प्रतीक्षा में

माँ ! वह मेरी लाश नहीं है ...

मैं तो अभी चल रहा हूँ माँ ! तुम्हारा रनवीर तो ज़िंदा है ।

माँ ! मैं किसी को नहीं मारना चाहता, पर ज़िंदा रहने के लिये मारना पड़ता है । माँ ! तुम स्त्रियाँ अच्छी नहीं होतीं । अच्छी होतीं तो तुम्हारे सब ही बेटे अच्छे क्यों न होते ! वे आपस में इस तरह लड़ते ही क्यों

सुषमा ! क्या बात है !

मुझे !

हाँ बोल तुझे ।

मुझे लेल ताइये (रेल चाहिये ।)

‘अच्छा हमारी सुषमा रेल का क्या करेगी !’

‘हम थवाली थवाली खेलेंगे थवाली थवाली’

ऊपल थाली, नीचे थाली ...

बीच में बैथा मदाली

माँ कहती है : अरी रहने दे ! भैया को पढ़ने दे । तू
यहाँ आ ! मैं तुझे एक चीज़ दूँगी ।

ना मैं तो भैया के पाछ लहूँगी ।

अब सुषमा भैया की गोदी में बैठी है और वह पढ़ रहा
है और वह गोद में सोगई है

माँ देखती है, कितनी प्रसन्न है कितनी तृप्त

कहती है—जब तेरा ब्याह हो जायगा रनवीर तब

‘माँ ! !

कहाँ हो माँ !

देखो ! रनवीर का कैसा ब्याह होरहा है !

‘अरे मेरी जॉघ फटी जारही है

‘अरे कोई मेरी बात तो सुनो

इन समुद्रों को तुम लेलो, मुझे तो एक घूँट पानी पिलादो ..

सुनो ! मैं और कोई नहीं तुम्हारा भाई हूँ

तुम मुझे एक बार ध्यान से तो देखो

कितना अंधेरा छारहा है

जापानी प्रहरी के बूट कितनी दूर पर भी बज रहे हैं
धरती से कान लगा कर सुनने से कितनी दूर की आवाज़
सुनाई देरही है

विकराल बंधन

हृदय-हीन,.... पिशाच की सी कठोरता....

वज्र का सा सन्नाटा छाया हुआ है ।

कहीं घंटा बज रहा है ...

शायद सिपाहियों की ड्यूटी बदल रही है ।

घंटों की आवाज फैलती जा रही है, फैलती जा रही है....

मौत की सी खामोश है फिजा ..

मैं सूखे होठों पर जीभ फिरा रहा हूँ

एक अज्ञात भय से मेरे रोंगटे खड़े होगये हैं

मैं कहाँ आया हूँ

यह कौन पड़ा है

अरे यह तो मेरा ही शव है

तो क्या मैं मर गया हूँ

यह लो यह गिद्ध आगया है

गिद्ध ! तू कहाँ से आया है ?

मैं घरती के इस छोर से उस छोर तक उड़ता आया हूँ ।

तो क्या तुझे यहाँ के सिवाय और कहीं भी लाश नहीं
दिखी ?

गिद्ध हँसता है ।

कहता है : लाश ! सारी दुनिया पर लाशें पड़ी हैं । इतनी
लाशें कि हवा उस सड़ांध से घबरा कर इधर उधर भटक
रही है । मेरा पेट भर गया है । मुझे इंसान का मुर्दा खाने में
मजा नहीं आता अब ।

तो क्या तू मुझे नहीं खायेगा ?

सिर्फ थोड़ा सा दिल कुतर कर खाऊँगा ।

दिल ही क्यों ?

इसलिये कि इंसान के इस दिल में ही मुहब्बत होती है और उस मुहब्बत की वजह से ही यह मुझसे नफ़रत करता है । अब मेरा वक्त आया है तो मैं जितने दिल कुतर सकूँगा, कुतर डालूँगा, ताकि फिर इंसान मुहब्बत का दावा नहीं करेगा और फिर मुझ जैसे ही इंसान इस धरती पर शासन करेंगे

गिद्ध ! तू कब पनपता है ?

जब इंसान, धन के लोभ में अपने भाई की हत्या करने को न्याय के आडंबर में ढँकता है । जब औरत की पाक इज्जत को—माँ की पाक इज्जत को वह दरिंदे की तरह फाड़ खाना चाहता है, जब बच्चों का क़त्ल करने में वह गुनाह नहीं समझता, जब अधिकार की प्यास बड़े बड़े शब्दों की आड़ लेती है, तब मेरा ही शासन होता है ,

गिद्ध ! तू कब मरेगा !

मैं क्यों मरूँगा । जब तक दुनिया में आदमी अपनी युग-सीमा में जन्मे किसी विशेष विचार को असहिष्णुता से पकड़ कर दूसरे आदमियों को गाली देगा, तब तक मैं हमेशा ज़िंदा रहूँगा और कला और विज्ञान को हड्डियों की भूँठन फेंकता रहूँगा ।

अब मेरे पंख निकल आये हैं और मैं उड़ रहा हूँ । बहुत दूर तक उड़ता चला जा रहा हूँ ।

ऊपर से देखता हूँ समुद्र लहू के होगये हैं और गर्मी से

खोल रहे हैं धरती ज्वालामुखियों की तरह अं॥रे उगल रही है और आकाश में सूरज निकल आया है लेकिन वह काला है उसमें से उजाला नहीं निकलता मेरे चारों तरफ़ भयकर हवाई जहाज़ चिंघाड़ते फिर रहे हैं मेरे कान फ़टे जा रहे हैं नदियाँ उनके कठोर शब्द से रुक गई हैं क्योंकि वे शब्द भस्म के पहाड़ बन कर गिर रहे हैं....

मैं आगे बढ़ गया हूँ

माँ पुकारती फिर रही है— मेरा बेटा मुझे लौटा दो, मेरा बेटा मुझे देदो, मैं उसे बहुत अच्छा आदमी बनाना चाहती थी मैंने बड़े जतन से उसे पेट में रख कर बड़े बड़े मीठे सुपने देखे थे ...

लेकिन अब तेरा बेटा कहाँ है

किसी धरती के टुकड़े पर उसके खून के क्रतरे मवाद बन कर सड़ गये हैं और उसकी लोथ पड़ी है। अरी मेरी लाश ! तू चिल्ला क्यों नहीं उठतो कि माँ ! रनवीर यह रहा यह रहा रनवीर देख ! तेरे लाड़ले को गिद्ध खाये जा रहे है, भागते सिपाहियों के बूट उसकी लोथ को ऐसे कुचल कर भागते चले जा रहे हैं जैसे वह सिर्फ़ कीचड़ का लौदा था.... और वह अब अपनी रक्षा नहीं कर सकता ... तेरा बेटा मर गया है....

मैं चिल्लाकर कहता हूँ,—माँ ! मैं आगया हूँ पर वह सुनती

हजारों स्त्री पुरुष चले आ रहे हैं। वह पागलो की भीड़ है। उसमें बच्चे भी हैं। बर्मीज़, जापानी, रूसी, इतालवी, अंगरेज़, पैरैगुआ-वासी, अफ़्रीका-वासी, अमरीकी, एस्किमों,

भारतीय, चीनी... और न जाने कहाँ कहाँ के लोग हैं। वे सब आर्त स्वर से चिल्ला रहे हैं। माँ! बच्चों को फेंक कर पुकारती हैं ... रोटि दो... तब देखता हूँ खेतों और खलिहानों से आग की लपटें उठ रही हैं ... नंगी औरतें कटी छातियों से खून टपकाती रोती हैं ... कपड़ा दो ... तुम्हारी माँ नंगी है। तुम्हारी बहिन नंगी है ... और मैं देखता हूँ कि कारखानों की ईंटें बिखर बिखर कर गिर रही हैं ... भीड़ का सोग एक भयानक हाहाकार बन कर धकधका रहा है और एक विक-राल राक्षस उसी गिद्ध पर बैठा नरकपाल में रक्त पीता अट्ट-हास कर रहा है ... और हज़ारों कंकाल नाच रहे हैं...

तभी माँ आकर पुकारती है— अरे मेरे बच्चे भूख से तड़प तड़प कर मर रहे हैं .. अरे कोई भीख देदो... अरे कोई भीख देदो ...

मैं भयानक स्वर से चिल्लाता हूँ : माँ ! मैं आ रहा हूँ .. में आ रहा हूँ ...

मैं जाग गया हूँ ...

और न जाने क्यों असह्य यंत्रणा से फूट फूट कर रो रहा हूँ... माँ... भिखारिन ... अरे युद्ध ! रुक जा रे सर्वनाश... छोटे, नीलम और सुषमा सड़क पर भिखमंगे होगये है ...

मैं बाल नोंच कर बारबार धरती पर सिर पटकता हूँ .. और रोना नहीं चाहता पर मेरा रोना नहीं रुक पाता और फूट-फूट कर बार बार रोता हूँ ...

माँ ! यह क्या सोच रहा हूँ मैं ...

क्या यह मैंने सुपना देखा था ...

कहाँ है वह क्रूर गिद्ध

आ मेरे सामने आ रे राक्षस...आ मुझसे बात कर ... मैं तुझे मार डालूँगा

और वह फिर आगया है कहता है : मार डालेगा ? हाहाहा...वह कठोरता से हँसता है यही तो मुझे ज़िंदा रखेगा.... तू झूठ कहता है...माँ की आँखें चमक रही हैं...वह हाथ उठा कर कहती है तुझसे युद्ध पाप नहीं है नीच ! तू अधिकार और धन की तृष्णा है लोलुप यह विद्रोह है ।

माँ की आँखें

मुझे देखो माँ

किसे देखूँ बेटा

मुझे ! मैं तुम्हारा बेटा हूँ....

मेरे बेटे तो हज़ारों हैं, लाखों हैं । वे सब घायल से छटपटा रहे हैं

फिर घोर अंधेरा छागया है

कुछ भी तो दिखाई नहीं देता, जैसे अब न दिशा है, न आकाश ही । कुछ भी नहीं है

माँ !

कोई नहीं है

मुझे फिर याद आरहा है

तू कौन है ?

मुझे नहीं पहचानते ?

नहीं !

वही हूँ जिसे तुमने ज़िंदा गाड़ दिया था । याद है ? मैं बड़ी देर में भीतर घुट घुट कर मरा था रनवीर ! वह यातना अभी तक मुझे छोड़ नहीं पाई है ।

घुट घुट कर घुट घुट कर

और तुम कौन हो....

वही हूँ जिसकी अन्तड़ियाँ बाहर गिर गई थीं और मरा नहीं था तब पिस्तौल की गोली ने याद आया आओ ! हमारे साथ चलो

कहाँ चलना होगा

मुर्दों की दुनिया में जहाँ ज़िंदगी नहीं है

लेकिन मुझे तो ज़िंदगी से प्यार है

ज़िंदगी से प्यार है ! ! !

एक क्रूर हँसी, पतले स्वर की । स्त्री है नंगी उसकी जांघों के बीच बहुत बड़ा घाव है पेट कटा है । गले में उसका गर्भ का बच्चा टंगा है वह हँस रही है । ज़िंदगी

से प्यार है

मैं फिर काँप उठता हूँ

पसीने से मेरा रोम रोम भीग गया है

मैं भयानक स्वर से चिल्लाता हूँ....

दूर कहीं कुत्ता रोता है ...

मेरा स्वर उस कुत्ते के रोने में ऐसा मिल गया है जैसे मैं
भी कुत्ता बन कर रो रहा हूँ

और मैं नहीं जानता फिर क्या होरहा है मैं अब
कहीं भी नहीं हूँ ।

भोर हो रही है ।

ठंडी हवा से होती है थोड़ी सी चेतना की थपथपाहट....

कितना थक गया हूँ मैं

पानी

पानी मुझे कोई पिलादो ।

अरे मुझे कोई पिलादो

और मैं कहता हूँ : माँ ! अब भी नहीं जाने देगी ? कब
तक रोकना चाहती है मुझे ?

और मैं रोने लगता हूँ....

आकाश में अनेक हवाई जहाज उड़ते चले जा रहे हैं ।
उनकी घर-घर से सबकुछ गूँज रहा है ।

मैं चाहता हूँ कि एक बम ही गिर पड़े ।

पर वे जापानी जहाज हैं ... सब चले जाते हैं ... दूर निकल जाते हैं ।

और मैं फिर कुत्ते की तरह हाँफने लगता हूँ ।

हाँफने लगता हूँ ।

सुबह एक उजाला है, शाम है एक अन्धेरा और फिर
इसके अतिरिक्त कुछ नहीं । सिर्फ दर्द है, तन का, मन का ...
रोम रोम में ऐसा व्याप गया है ... जैसे मुझे मौनके भीतर
ऐसा सीं दिया गया है जैसे मैं कोई ज़िंदा लाश हूँ ...



मत्सुओका दूर घूम रहा है ।

मैं उसे देख रहा हूँ ।

वह इधर ही आ रहा है ...

मैं पड़ा हूँ ...

वह पास खड़ा है ... तारों के उधर ...

और कौन हैं वे लोग ...

दो कैदी ही हैं ...

मैं ... उन्हें ... पहचान नहीं पार रहा हूँ ...

एक तो अजहर सा लगता है

दूसरे की मेरी तरफ पीठ है ।

वे दोनों कुछ बोझा ढोकर ले जा रहे हैं....

मत्सुग्रोका मुझे देखता है

उसके मुख पर एक विचित्र भाव है....

मैं कुत्ते की तरह उल्टा होकर खिसक रहा हूँ और
ध्रुविया कर कह रहा हूँ .. मुझे ... मुझे

वह सुनने को रुका नहीं है ...

चला गया है

नहीं सुनेगा

मेरी बात भी नहीं सुनेगा

सचमुच वह चला गया है

फिर वही सन्नाटा ...

और मैं धरती पर सिर टेक देता हूँ

कोई नहीं सुनता

मैं शायद हूँ कि नहीं

कहीं ऐसा तो नहीं है कि मैं मर गया हूँ और यह मेरी
आत्मा की वेदना है । कहते हैं आत्मा औरों को नहीं देखता....
कहीं इसीलिये तो मत्सुग्रोका को मैं नहीं दिखाई दिया
लेकिन फिर मेरा शरीर वहाँ गया ...

वह तो यही पड़ा होना चाहिये

और यह फोड़ा जो दर्द कर रहा है

पता नहीं ...

कुछ पता नहीं

मैं कुछ नहीं जानता ।

बूटों की आवाज़ आरही है ।

फिर तारों के पास जापानी ने खाना लाकर रख दिया है ।

वह चला गया है ...

पर वह जगह मुझसे दूर है । मैं कैसे पहुँचूँ वहाँ

मैं नहीं जा सकता....

पर खाना रखा है

और उस तरफ़ से कौन देख रहा है....

एक परिदा ।

तू खायेगा इसे ?

खा ले !

तू भूखा है ?

खा ले

लेकिन रनवीर ... तू भी तो भूखा है ।

लेकिन मुझसे तो उठा भी नहीं जाता

परिदा बढ़ रहा है

हिश हिश श श श

परिदा रुक जाता है...देख रहा है...मेरी ताकत...अगर मैं पहुँच सकता हूँ तो वह खाना मेरा है । वर्ना .. वही उसे खायेगा ।

उठ रनवीर ...भूखा मत रह । तू मर जायेगा । तू आत्मा नहीं है, आदमी है...अगर मर गया होता तो यह जापानी खाना किसके लिये रख कर जाता

करोड़ों प्राणियों में इस समय यह भोजन मेरे लिये है रे पक्षी ! इसे मैं खाऊँगा ! तू किस अधिकार से खाने आया है इसे ?

उड़ । उड़ जा । दूर हट ...

नहीं जायेगा

ठहर जा

अरे मर गया...मैं आह

अरे मेरा पाँव फटा जा रहा है ।

कोई इस परिदे को तो उड़ादो...यह मेरी दुनिया लूटने आगया है हत्यारा .. यह मेरी जिंदगी छीने लेता है ...

नहीं ले जाने दूँगा इसे मेरा जीवन

यह मेरा है...इसे मैंने पाया है...सदियों की सुन्दरता ने इसे बनाया है ... मैं इसे प्यार करता हूँ...उतना ही जितना ओ परिदे ! तू अपने को प्यार करता है ..

असह्य पीड़ा में भी मैं रनवीर खिसक रहा हूँ...

व्योंकि पीड़ा मृत्यु होने पर भी मेरे मन को नहीं जीत पा रही है । जीवन से जीवन जन्म लेता है, जीवन जीवन की ओर जाता है

जीवन एक चेतना है और उसने अचेतन में से सिर उठाया है

वह मुझमें है

जीवन ।

कितनी तीव्र है यह चाहना...

मैं आगया हूँ अपने गन्तव्य पर, मैं अपने लक्ष्य पर आगया हूँ...ओ पक्षी ! अब तू कुछ नहीं कर सकता...

देखो ! जीवन धारा है, परन्तु उस धारा में वह प्रत्येक भाग में भी अत्यंत उत्कट है

ठहर जा इसे खालूँ ।

पक्षी ! तू देखता मत रह ।

ले यह दाने तू भी खाले

आ हम दोनों जीवित रहें ...

खा रहा है बावले ...

और दूँ ?

लेगा

ले और ले...

मैं अग्रपेट ही था मेरे लाड़ले, पर मेरी इतनी भूख से अगर तेरा भी पेट भरता है तो ले हम तुम बाँट कर ही खालें

मैं फिर लेट गया हूँ ...

पक्षी ! अब मेरे पास कुछ नहीं है ...

देख ! अब जब मैं मर जाऊँगा, और मेरे भीतर सांस नहीं रहेंगी, जब मेरी यह मशीन धड़कना बन्द कर देगी, जब यह सुनहले सपनों का ससार मेरे भीतर नष्ट हो जायेगा, तब तू अपने दोस्तों के साथ भले ही मुझे चुग लेना, लेकिन अभी नहीं

अभी तो मैं जी रहा हूँ....

पक्षी !

देख मेरे कितना दर्द हो रहा है ?

तू सुनेगा मेरे दर्द की कहानो !

अरे ! अभी से मत उड़ । तेरे सिवा इस दुनिया में मेरा कोई भी साथी नहीं है

तू मेरा सदेसा ले जायेगा ? कहेगा जाकर मेरे घर
वहाँ माँ बैठी होगी । बाँह उठाकर तुझे उस पर बिठा लेगी
माँ

पक्षी ? आ ! मेरे पास आजा !

माँ से कहना ! माँ तूने रनवीर को जो दिया है, उसे
रनवीर ने बहुत प्यार किया है । उसने इसीलिये कभी अन्याय
नही किया, क्योंकि अन्याय से सुन्दरता विगड़ जाती है ।
अन्याय और अत्याचार मनुष्य की कुरूपता है जो मनुष्य को
विकृत बनाती है ...

उफ़ ! कितना चपका चल रहा है

माँ ! !

पक्षी ! डर मत ! क्या मैं चिल्ला रहा हूँ ? क्या मैं घबरा
रहा हूँ

एक बार कोई आजाता एक बार कोई मुझे सहला
जाता भूल जाता मैं सारी पहाड़ सी यातना को ...

मत्सुओका ! क्या तू सचमुच इतना निर्दयी है ? किसलिये
होगया है तू इतना कठोर ! क्या साम्राज्य की प्यास इतने लोहू
से भी नहीं बुझी ? क्या है वह वैभव जिसकी नींव इंसान की
हड्डियों और मांस की बलि पर लगाई जाती है तू नहीं
जानता मत्सुओका ! हम जानते हैं हमने यूरोपीय लुटेरों
और अंगरेजों की इस तृष्णा का विष पिया है अभागे
हमने लाखों की कुर्बानी दी है और मैं यह फल भोग
रहा हूँ कि अपने पेट के लिये देश के लाखों को छोड़ आया
गुनामी में मैं एक पुर्जा बन गया इसलिये सीख रहा हूँ

साम्राज्यों के वैभव की असलियत ... भूख से मेरे पेट ने कीमत चुकाई है ...

माँ ! न्याय क्या उन्हीं को मिलता है जो मरते हैं, कटते हैं ... तू तो कहती थी कि न्याय अवश्य होता है, देर से अबेर से ... और सारे अभिमानी एक न एक दिन अवश्य धूलि में छटपटाते हैं ... उसका दिन तब आता है जब गुलामी भोगने वाले अपनी कायरता का पूरा प्रायश्चित्त कर डालते हैं ...



रात होगई है । मैं पड़ा पड़ा कराह रहा हूँ । प्रब भी कोई पास नहीं है ।

‘पानी ! ! पानी ! !’

स्वर गूँज उठता है ...

पर नहीं रहा जाता ...

मैं खिसकता हूँ ...

घाव छिल गया है ...

उफ़ ... भयानक पीड़ा हो रही है ...

पर मवाद निकल रहा है ...

मैं लिसड़ता जा रहा हूँ ...

फोड़े के फूट कर निकलने से पीड़ा के बाद एक अजीब-तरह का चैन आरहा है मुझे .

यह तारों के पास कौन है ...

चुप ! ! चुप ! !

खामोशी ।

मैं नहीं जानता यह कौन है
 पर अगर जापानी होता तो ऐसे क्यों आता
 वह शरूस पास आगया है रेंगता हुआ
 अब अँधेरे में हम दो हैं
 एक नहीं ... दो
 यह मनुष्य नहीं हो सकता स्वयं भगवान हैं
 'कैसे हैं' पूछता है वह
 पास आगया है
 उसका हाथ मेरे कंधे पर है
 कौन है देखूँ तो सही यह मसीह कौन है
 घुटने तमाम छिल गये हैं हुजूर ! काँटे छिद्र गये हैं
 तमाम मैं हूँ अजहर ... सूबेदार अजहर
 मैं उसे सीने से लगा कर रोता हूँ, जैसे माँ आगई है
 'हुजूर चौदह दिन से आने की ताक लगा रहा था यहाँ'
 पर आज मौका लगा है
 तो क्या मुझे अकेले पड़े चौदह दिन हो गये हैं, और तभी
 एक भयानक विचार आता है
 क्या अभी चौदह दिन बाकी हैं
 हुजूर घबराइये नहीं । अल्लाह ने चाहा तो सारी मुसी-
 बतें कट जायेंगी । तनहा हैं तो खुदा पर यकीन लाइये । उसी
 में लौ लगाइये, वह बहुत बड़ा सहारा देगा हुजूर । यह खूनी
 दरिदे हैं, आपका रात-रात-भर तड़प-तड़प कर चिल्लाना
 सहा नहीं जाता था हुजूर
 मैं उसे चूम लेता हूँ

मेरे हाथों में इंसान आगया है ...

‘कुछ खाने को भी है अजहर ...

‘हुजूर ! दाएडेकर को तो आप पहुँचानते हैं । अपनी ही यूनिट का है, वह तो आप पर यह जुल्म देखकर पागल होरहा है...मैं किसी तरह उसे चुप करके यहाँ आ पहुँचा हूँ...खाना कल लाने की कोशिश करूँगा, घबराइये नहीं हुजूर ! हम पास ही हैं और आपका सबसे बड़ा साथी अल्लाह तो आपके भीतर है... गिड़गिड़ा कर दुश्मन का हाँसला नहीं बढ़ाइये हुजूर... कभी वह दिन भी आयेगा जब यह नफ़रत ख़त्म हो जायेगी... कही बूट बज रहे हैं...’

‘तुम जाओ अजहर...तुम जाओ ‘ कही कोई देख लेगा ... वह अँधेरे में रेंग जाता है ...

फिर वह मुझे दिखाई नहीं देता ।

और मैं धरती पर सिर टेक देता हूँ ...

मेरे सामने कुछ नहीं है ।

सिर्फ अजहर है ...

कुछ नही लाया वह खाने को ...

न लाये ... पर वह आया...’

अपनी जान पर खेल कर आया ...

क्या था जो उसे खींच लाया था...’

दर्द ।

इंसान का प्यार ...

अजहर ! तुम कभी दुख मत पाना...’

अजहर ! तेरे सारे दुख मुझे मिल जायें ...

अज्ञहर ! जन्मजन्मान्तर तक जब तक तेरे हृदय में यह वेदना का दीपक जलता रहे, मैं तेरे पापों का दुख भोगा करूँ ।

चौदह दिन बीत गये !

और मुझे पता भी न चला . .

अज्ञहर ! यह सारा दुख तेरे आने से कैसा उड़ गया अज्ञ-हर । अज्ञहर तू मेरा भड्डा है ! मैं तुझे हमेशा प्यार करूँगा । अज्ञहर ! मैं तेरे इस प्यार को सदा ही प्यार करूँगा । जैसे मेरा गांधी प्यार करता है इंसान के प्यार को । माँ ! छोटे ही अज्ञहर बन कर आया था । माँ अज्ञहर ही छोटे, नीलम और सुषमा बन कर आया था । माँ ! तुम्हारा बेटा आया था माँ । भारत माता का एक और बेटा आया था माँ । अपने भाई की दद भरी पुकार सुन कर अपनी जान को हथेली पर रख कर आया था माँ । वह मुझे इंसान की आवाज़ देकर प्यार की सैकड़ों सदियाँ दे गया है, उस शुरूआत से माँ ! जब इंसान ने इंसान के सामने अपने भीतर घुमड़ती दुनिया को निकाल कर, अपना दुख हल्का करने के लिये शब्द बनाया था, जिसमें उसकी सारी सत्ता एक ध्वनि बन कर समा गई थी । जननी ! नाद के प्रेम में सृष्टि की समरसता रहती है, यह तो मैंने आज ही जाना है । तुमने भी तो मुझे तभी पहचाना था, जब मैं पहली बार इस दुनिया में आकर तुम्हारी बगल में लेट कर क्वाँ क्वाँ कर रो उठा था । उसी को सुन कर तो तुम्हारा लहू तुम्हारी छाती में दूध बन कर छलकने लगा था । अम्मा ! अब मैं तुमसे दूर नहीं हूँ । इस दुनिया के सारे आदमी एक ही माँ के बेटे हैं । जो तुम्हें याद रखता है, वह अपने भाई को नहीं मारता, पर जिसकी

आँखों पर पट्टी बँध जाती है, वह तुम्हें भूलकर जानवर बन-जाता है। उसे माफ़ करदो माँ ! क्योंकि तुमने उसे इसलिये नहीं पाला था कि एक दिन वह किसी बाप की आँखों की रोशनी को छीनले, कि वह किसी दिन किसी भाई के दूसरे हाथ को काट डाले, कि वह किसी दुल्हन के रंगीन सुपनों में आग लगा दे, कि वह किसी बहन की अस्मत् को पैरों से रोद डाले, कि वह आनेवाले नन्हें दुधमुहों की दूध को मिठास से सनी मुस्कराहट को ज़बर्दस्ती घोंट डाले।

रनवीर शायद नहीं बचे यह कहने को, लेकिन माँ अपने बच्चों को यही सिखाना कि वे गुलाम रहें या आज़ाद, पर कभी भी किसी पर जुल्म नहीं करे।

अज़हर चला गया है, लेकिन एक बात मुझे वह बता गया है कि धर्म, मज़हब, सिद्धांत, सबकुछ इंसान के लिये है। और हर ज़माने में इंसान इंसान है। जब भी इस इंसान से नज़र हट जायगी, तब तब स्वार्थ अपने अपने नये रूपों में जागेगा और हर स्वार्थ एक आर्थिक आधार ढूँढ़ लेगा ... सिद्धान्त बनते हैं मिट जाते हैं, लेकिन उनसे ऊपर है इंसान... और इंसान को ज़िंदा रखना है ... कह गया है न अज़हर ... वही जो अताउल्ला ने मरते वक्त दुहराया था ... 'यकीन रखो' ... घबराओ नहीं ... नहीं अज़हर ... अब मैं नहीं घबराऊँगा ... बहुत दर्द हुआ था घिसटने में, लेकिन मवाद बह निकला था। बहुत प्यार दिया है तुमने अज़हर ... अब डर भी दूर होता जा रहा है ... मैं नहीं घबराऊँगा ...

अम्मा ! सुन रही हो न ? अब घबराने की कोई ज़रूरत

नहीं है। अब रनवीर मर भी जाये तो दुख न करना, क्योंकि तुम्हारा एक और बेटा है अजहर। अजहर है, दाढ़ेकर है। तुम्हारा बेटा बियाबान में जब चिल्ला रहा था, तब किन्हीं के दिल में तूफान करबट ले रहे थे, किन्हीं बँधे हुए गुलामों के दिलों में आज्ञादी अपनी मशाल जला रही थी, किन्हीं अँधेरे से मायूस दिलों में इज्जत और मुहब्बत के समन्दर हिलोरें लेने लगे थे ... प्रोमिथियस की आग उनके दिलों में फरफराने के लिये ब्रेचन से उन शहीदों के लोहू में भोगे हुए झड़े की तरह बलबला रही थी .. देख रही हो न माँ ! सदियों का लोहू चुल्लू में उठा लो और खड़ी हो जाओ, और इतिहास के अँधेरे से ललकार कर पूछो कि इस चुल्लू में जो सैकड़ों हजारों लाखों नौजवानों का खून है, इसका बदला मुझे कौन देगा, क्योंकि इस चुल्लू के लहू की हर बूँद लाखों दुलहनों के आँसू लाखों माँओं के दूध और लाखों बच्चियों की मुस्कान से तुली है, और करोड़ों मसोहा और पैगंबरों की कुर्बानियों ने इस लहू की हर एक बूँद को सचाई का उज्जाला दिया है, यह उगते हुए सूरज की ज्योति है। माँ अजहर तब आया था जब मैं डूब रहा था, एक ऐसे समन्दर में जिसमें नफ़रत का खार था, और खामोशी सब के उपर मौत बन कर छागई थी। वह एक ऐसा बियाबान था जिसमें हर ज़र्रा हातिम की तरह पुकार पुकार कर चिल्ला रहा था, लेकिन वहाँ कोई भी सुनने वाला नहीं था ... माँ, वहाँ कोई भी सुनने वाला नहीं था। जब मैं कराह कराह कर थक जाता था, तब भी कोई नहीं बोलता था, तब मुझे लगता था मेरा सिर फट जायेगा...

मैं ज़िंदा नहीं हूँ, मैं मर गया हूँ...लेकिन इंसान ज़िंदा है माँ !
 इस नफ़रत, इस हुक्मत, खुदगर्जी से बड़ा है इंसान का दुख,
 और दुख ने जनम दिया एक रोशनी को, जो शायद हमेशा
 दर्द की तपिश में पिघल पिघल कर, लोह बन कर, इंसान के
 दिल की हर धड़कन में गमका करेगी । माँ तुम नहीं समझोगी
 क्या, कि अज़हर ने मुझे क्या दिया ? तुम समझ सकती हो माँ,
 क्योंकि तुमने दर्द की शुरूआत में ज़िंदगी का सुपना सहेजना
 सीखा था ।

सुबह होगई है ।

मैं मुश्किल से उठ कर बैठ गया हूँ ।

कोलाहल सुनकर देखता हूँ ।

दाण्डेकर को तीन जापानी पकड़े ले जा रहे हैं और अज़हर
 को चार पकड़े रोक रहे हैं और अज़हर चिल्ला रहा है : नहीं,
 मुझे छोड़ दो, दाण्डेकर का कुसूर नहीं है... मैं ही उन्हें खाना
 पहुँचाने जा रहा था ...

मेरे रोंगटे खड़े होगये हैं ...

मैं चिल्लाता हूँ । क्या हुआ अज़हर ... क्या हुआ ...

दाण्डेकर चिल्ला रहा है : नहीं मैं ले जा रहा था । करो
 तुम मेरा क्या कर लोगे ? तुम हमें कुत्ता समझते हो, अत्याचा-
 रियो ! हम नहीं सहेंगे ...

'क्या हुआ दाण्डेकर ...' मैं चिल्ला रहा हूँ ।

दाण्डेकर चिल्लाता है : 'सर ? मैं आरहा था आप के लिये खाना लेकर ! इन्होंने मुझे पकड़ा है । मार डालो । मार डालो मुझे

‘उससे मत बोलो !’ जापानी गरजता है ।

उसके मुँह पर भयानक क्रोध है

‘मैं बोलूँगा !’ चिल्लाता है दाण्डेकर— ‘तुम मुझे नहीं रोक सकते ! तुम उसे घोट घोट कर मार डालना चाहते हो ... लेकिन तुम उसे नहीं मार सकते ... तुम उसे नहीं मार सकते ... यही है एशिया वालों का एशिया ... तुम

जापानी सभभता नहीं । अंगरेजी में चिल्लाता है :—‘चुप रहो वर्ना गोली मार दूँगा

दाण्डेकर कमीज के बटनों को तोड़ कर सीना खोल कर चिल्लाता है : ‘मार दे ! मार दे ! डरता क्यों है ? मार ! मैं भारत का निवासी हूँ ! हम गोली से नहीं डरते, जंगली ? निहत्थे पर गोली चला देगा

और न जाने कहाँ से एक आवाज, उस हरे-भरे मैदान में उठती है—

महात्मा गांधी की

और न जाने कहाँ से अनेक कैदी सुन कर दिगंतों को हिला देने वाला गंभीर गर्जन करते हैं—जय !

वही बगावत की पुकार; वही आजादी की ललकार, वही सताये हुए की ईमान की चुनौती, वही गाँधी जी इंकलाब का फहरता झंडा है , जहाँ भी नफ़रत है वहाँ वह बड़ा एक पहाड़ है मुश्किल का जहाँ भी तड़पती कराह है, वहाँ वह मुस्क-

राता हुआ एक इन्द्रधनुष है, यह एक पुकार नहीं, साम्राज्यों के वैभव को टुकड़े टुकड़े करके फेंक देने वाली बीन की भंकार है, जो हजारों बरस के मोटे फौलादी इतिहास की छाती में प्यार की सुलगन बन कर काँपने लगती है

और आवाज़ आती है—धाँय !

धाँय ! !

दाण्डेकर चिल्लाता है : भारतमाता की...

मैं चिल्लाता हूँ : जय...

और फिर उस की लाश गिर जाती है। अज़हर नहीं रोता। मैं नहीं रोता। इतना ठंडा खून ! दाण्डेकर अब दम तोड़ रहा है, क्षण भर वह छटपटाता है, और फिर वैसा ही खामोश होगया है, वैसाही मुस्करा उठा है, जैसे एक दिन ईसा सूली पर सो गया था ...

और अज़हर बड़बड़ाता है : दाण्डेकर ! दाण्डेकर !

मगर दाण्डेकर अब कहाँ है ?

अज़हर फूट फूटकर रोने लगता है और जापानी उसे घसीटते हुए ले जाते हैं और अज़हर चिल्लारहा है—मुझे भी मार डालो जालिमों ! मुझे भी मार डालो

अब सबकुछ फिर खामोश हो गया है।

मैं बैठ गया हूँ।

मैं रो रहा हूँ।

मुझे नहीं मालूम मैं कब से रो रहा हूँ, मैं कब तक रोऊँगा, मैं कितना रो चुका हूँ और न जाने अभी कितना और रोऊँगा

माँ! उन्होंने दाण्डेकर को ऐसे मार डाला जैसे वह आदमी ही नहीं था। क्या दाण्डेकर में जान नहीं थी। क्या उसमें वही जान नहीं थी, जिसे आइन्स्टाइन और सारे वैज्ञानिक भी नहीं बना सकते.... भरा पूरा जवान था, सुती हुई देह थी, भूख से करख हो गया था तो क्या ? क्या यही उसकी सत्ता की सार्थकता थी ? क्या इस धरती के टुकड़े पर अनजान में मरने के लिये उस मासूम ने सुदूर महाराष्ट्र के किसी गाँव में जन्म लिया था ! मैं रोऊँगा नहीं माँ ! पर यह हवा में आज अभी तक कैसी बगावत गूँज रही है ! वही आवाज है....गांधी की जय बापू ! सुना तुमने ! दाण्डेकर मारा गया ! तुमने कहा था कि यदि सेवा नहीं करना चाहते हो तो सेना में मत जाओ, पर उसमें रहकर अपने विश्वास पर आघात न करो ! लेकिन दाण्डेकर तो बन्दी था । उसने तो कोई बिश्वासघात नहीं किया । वह तो विश्वास के लिये मर गया ! क्या कभी ऐसा भी दिन आयेगा जब ठंडे दिल से हत्या करने का यह उन्माद सदा सदा के लिये मनुष्य के भीतर से भाप की तरह उड़ जायेगा वह उसकी लाश को ऐसे खींच ले गये है जैसे वह कोई आदमी ही नहीं था.... जैसे वह कोई जानवर था....



भोर की पहली किरन फूट रही है....

पहली चिड़िया बोल रही है....

मीठी आवाज

हां मैं सुन रहा हूँ....

घास की पत्ती भी ओस को अपनी कनपटियों से झाड़कर

मुझसे धीरे धीरे कुछ कह रही है...

क्या कह रही है वह लाजो...

सुनू तो

मैं लेटा हूँ, दाने बिखरे हैं कुछ चावल के.... मैं देखता हूँ यह कौन आगया है मेरे पास ...

पहले भिभका, दूर से देखता रहा, फिर आ रहा है पास, और मैं हिलडुल भी नहीं रहा हूँ ...

छोटा सा, आगया आगया ... और अब अपने अगले पंजों में दबा कर खा रहा है चावल का दाना ...

चूहा

यहाँ भी न जाने कहाँ से आगया ...

तू यहाँ कब से रहता है रे ?

संसार के किस बादशाह ने तुझे यहाँ भेजा है । बागी! तू मेरा साथी है, दुश्मन को क्या तेरा इस तरह मेरे पास आना अच्छा लगेगा ...

वह खा चुका है, और अब मेरे पास आरहा है, पहले डर से, फिर चौकन्ना सा पर मैं कुछ नहीं कहता फिर भी वह सर से भाग जाता है । और मैं देख रहा हूँ तुझे, तू घास में छिपा देख रहा है मुझे लालची !

अच्छा मैं आँखें बन्द कर लेता हूँ, आज्ञा आगया ? अच्छा ! जनाब ऐसे मस्त होगये कि मेरे ऊपर ही चहल-कदमी कर रहे हैं...

फिर भाग क्यों गया ...

अच्छा आखें खोलूँ यह बात है ...

पीली चिड़िया आगई है । मगर यह तो बहुत छोटी है, यह तेरा क्या करेगी ?

और चिड़िया फुदक कर देखती है । चूहा मेरे बगल में से भाँक रहा है । बेझिझक बैठ जाती है मेरे कंधे पर । कान में कुछ कह भी दिया ! अच्छा बच्ची ? बिल्कुल सुषमा जैसा ऊधम ! क्यों रे चूहे ! तू तो बिल्कुल नीलम सा चुलबुला है ।

अच्छा देखो, कल छोटे और माँ को भी ले आना, कहना मेरा घाव अब ठीक हो गया है ।

क्यों री चिड़िया ! मुझे यहाँ कितने दिन हो गये ।

चिड़िया कहती कुछ नहीं । मुझे अचरज से देखती है ।

ठीक ही तो है !

समय है ही क्या ? अपने आपमें वह कुछ नहीं है, वह तो दो के संबंध से बनता है, मेरा भी तो संबंध बन गया है तुम दोनों से । रोज़ ही आते रहना तुम दोनों !

जीवन में मैंने एक सत्य और जाना है...

वेदना से ऊपर है मनुष्य की जीने की इच्छा...

और उससे भी बड़ा सत्य यह है...

कि जो प्राणी होता है, उसे प्राणी से प्रेम होता है...

इफ़रात में नफ़रत होती है...

मैं इन दोनों को खा सकता हूँ, दोनों मेरी हथेलियों पर

खेलते हैं, बल्कि दोनों मेरी वजह से एक दूसरे के भी दोस्त हो गये हैं...लेकिन मैं नहीं खा सकता इन्हें...दुनिया लड़ रही है, इंसान की अक्ल ने जो बहुत बड़े पैमाने पर यह हत्याकांड फैला रखा है, उससे भी बड़ा है मेरा जीवन की शक्ति का यह प्रयोग...दोनों ही मेरी तनहाई के साथी हैं...इनकी हरकतों में मुझे ज़िदगी की मासूम सचाई दिखाई देती है... अभी तो चूहेसाहब के खेल देखने लायक हैं। चिड़िया मुझे बहुत हँसाती है...चूहा चला दाना लेने...चिड़िया ने फुदक कर चोंच में भर लिया, मगर चोंच है छोटी, पूरा दाना कहाँ समाये...सो चूहेसाहब लगे हैं फिराग में, बड़े चौकन्ने से, कि चिड़िया ज़रा चूके तो वे हाथ मार जायें...मगर चिड़िया भी आस्मान में उड़ती है...आ गई मेरे कंधे पर...

दोनों कितने मासूम हैं, मगर कितने मतलबी, कितने चालाक, मगर कितने विश्वासी...

सचमुच प्राणी के मूल में प्राणी का प्रेम जीवित है...

कहते हैं एण्ड्रोक्लीज़ ने सिंह को भी मित्र बनाया था... क्या सिंह भी मित्र बनता है ?

मत्सुओका दिखाई देता है...

वह मुझे देखता है।...कठोर...

फिर वह जापानी में चिल्लाता है : उसे बाहर करो !

मुझे वे बाहर ले जाते हैं।

‘कुछ मज़ा आया ?’ वह व्यंग्य में पूछता है, अंग्रेजी में।

मैं कहता हूँ, ‘बहुत !’

‘कब तक रह सकते हो ?’

‘चाहे जब तक ।’

हठात् वह कठोर बन कर गरजता है—‘ले जाओ इसे !’

वे मुझे ले जाते हैं । मुझे लगता है मत्मुओका क्रुद्ध हो गया है । लेकिन अब यह मुझे क्या सजा देगा ?

सहसा ही मेरी आँखों के सामने अंधेरा छाने लगता है...

मौत....विकराल....भयानक....

पता नहीं मुझसे कोई कह रहा है: सीधे चलो...

लेकिन मुझे कुछ नहीं दीख रहा है...

मैं लुढ़कता जा रहा हूँ....अंधेरा छागया है....कोई बोलता है तो वह आवाज़ मुझे बहुत दूर सुनाई देती है...

कोई बंदूक का कुंदा मारता है...

मैं गिर जाता हूँ और तब मुझे फिर कुछ भी याद नहीं रहता ।

जब आँख खुलती है मैं देखता हूँ मैं अकेला पड़ा हूँ । मगर अब चारों तरफ़ तार नहीं हैं । कुछ जापानी सोल्जर पास बैठे बातें कर रहे हैं...

एक बढ़कर आता है... वह अंग्रेजी टूटी-फूटी बोल लेता है...

‘क्या हाल है ?’

‘ठीक हूँ । मैं कहां हूँ । मैं मर गया हूँ ?’

वे सब ठठा कर हँसते हैं । फिर एक कुछ जल्दी-जल्दी

कह जाता है ।

पास वाला मुझे सिगरेट देकर कहता है : 'जल्दी पीलो ! अभी कोई अफसर नहीं है ।'

मैं सुलगाता हूँ उसे ।

जिदगी की गर्मी फिर लौटती सी आ रही है । मैं अत्यंत कृतज्ञता से उसे देखता हूँ । पता नहीं, वह भी कौसी दृष्टि से मुझे देख रहा है....

सिगरेट पीकर मैं उठ बैठता हूँ । कहता हूँ—'पानी !'

एक मुझे पानी पिलाता है ।

चारों ओर देखता हूँ ।

फिर वह सिपाही मेरी कुहनी को देखता है । बंदूक का कुंदा शायद वहीं लगा था । सूजन आ गई है । शायद यह चोट इसी ने दी थी । फिर वह कुछ नहीं कहता और साथियों में मिल कर बैठ जाता है ।

शाम हो आती है । मैं वहीं सो जाता हूँ । मगर एक सोल्जर मुझे उठाता है और वहाँ ले जाता है जहाँ और कौदी सो रहे हैं । वहाँ कई हैं और मुझे लगता है कि दुख बहुत से लोग बाँट कर भोग रहे हैं । मेरा अकेला ही बहुत बड़ा नहीं है ।

मैं अफसर हूँ, यहाँ मुझे खयाल आता है, मगर यह जिस्म अफसर नहीं है । मैं वहीं पड़ कर सो जाता हूँ ।

दूसरे दिन मत्सुओका फिर आता है और मुझसे कहता है—'तुम अफसर हो ! लेफ्टिनेंट ! इनको काम में लगाओ । सेना के लिये साग-सब्जियाँ पैदा करो !'

हमें कुदाल वगैरा मिलती हैं, बीज भी ।

और सिपाही मेरे पास आजाते हैं ।

‘हुजूर ! इन सालों के लिये सब्जियाँ हम उगाय ?’
पूछता है एक ।

‘अजहर का भी कुछ पता है ?’

‘हुजूर ! उसे इन लोगों ने बहुत मारा । बहुत मारा !
सारे जोड़-जोड़ ढीले कर डाले जालिमों ने । मगर बचाने वाले
ने सिर्फ एक जान बचादी, वरना उसमें बचा ही क्या था !’

तो मरा नहीं है । दहशत से जो रोंगटे मेरे खड़े होगये
थे, उनमें खुशी की एक लहर दौड़ गई है ।

‘वह है कहाँ ?’

‘क्या जाने ? बोट में रखकर लेगये उसे !’

मे फिर काँप उठता हूँ । पूछता हूँ—‘क्या उसे डुबा दिया
उन्होंने समन्दर में ?’

‘कौन जानता है, हुजूर !’

तभी एक जापानी कर्कश स्वर से चिल्लाता है : ‘काम करो
काम ! बैठे मत रहो !’

मेरे सिपाही क्रोध से देखते हैं, मगर मैं कहता हूँ—
‘खोदना शुरू करो । वरना वे एक एक को भून देंगे । उन्हें कोई
रहम थोड़े ही है कि जो तुम ज़िद करोगे तो वे मनाने बैठेंगे ?
यहाँ क्या तुम्हारी माँ बैठी है ।’

माँ का नाम सुनकर वे कुछ विचलित हो जाते हैं ।

वे ज़मीन खोदते हैं ।

एक कहता है : ‘हुजूर ! सचमुच माँ नहीं है ।’

फिर फ़ावड़े चलने की आवाज़ आती है ।

मैं बैठा हूँ ।

दूसरा कहता है : 'हुजूर ! बहुत दूर है अपना देस ! घर के लोग क्या जानते होंगे, हम किस हालत में हैं । पर हुजूर ! हमारा कुछ भी हो, तनखाह का हिस्सा जो हम लिख आये हैं, वह तो घर पहुँच जाता होगा न ?'

बड़ी आस है उसमें ।

मैं कहता हूँ : 'अगर हम मरों में शामिल नहीं हैं तो वह जरूर पहुँचता होगा ... खोने के शक पर वह रोका नहीं जायेगा, चाहे सरकार को हमारा पता चला हो या नहीं ...'

फिर वे मेरी तरफ़ देखते हैं जैसे हम सब मर गये हैं , या खोगये हैं ...

मैं कुछ नहीं कहता

और वे खोद रहे हैं ...

धरती की पतों के पलटने से आवाज़ आती है माटी घोला बदल रही है, नया बीज धारण करने को

कौन कहता है माँ यहां नहीं है



शिन्तोमारू ने दूसरे दिन दुपहर को यात्रा शुरू की । यह एक कार्गो था । इसमें ३००० कैदी थे, अब मैं भी उन्हीं में से एक था ।

कैदियों को गन्दगी से छाजन हो रही थी । बहुतों को पेचिश थी । हम सब को डैक के नीचे भर दिया गया । नीचे हवा नहीं थी, कूए जैसी जगह थी । बेहद गर्मी थी । उसमें

हिन्दुस्तानी थे, इंडोनेशिया के कैदी थे। चीनी थे। चौबीस घंटों में केवल एक एक मग पानी दिया जाता था। हम प्यासे मरते थे। ग्यारह बजे खाना मिलता था। और एक बजे जापानी जङ्गलों के पार खड़े हँसते हुए मेज़ पर कुर्सियाँ लगा कर बैठ कर डट कर खाना खाते थे, उनके खाने की गन्ध आती थी, हम सूँघते थे। हम लोगों के मुँह फट चले थे; क्योंकि हममें विटामिन सी की कमी पड़ गई थी।

जापानी उशी (गाय), बूता (सूहर) और घोड़े का माँस खाते। हम केंचुओं जैसी सब्जी खाते, जो कि कारखानों में सुखाकर लाई गई थी। उसके टीनों में कीड़े पड़ गये थे। मुट्ठी भर से भी कम और गन्दा चावल मिलता था। उसमें मक्खियाँ और कंकड़ पड़े रहते थे। उसमें चूहे की खाल और टाट भी मिली रहती थी। हमें पता नहीं चलता था। हम लोग पोटे जाते थे। बारिश हो, कुछ हो, हम खुली हवा के लिये ऊपर भागते थे। वे हमारे सिर फाड़ कर भीतर धकेल देते थे। एक कौने में बीबरिल की पुरानी डिब्बियाँ पड़ी थीं, हमने उसमें चावल मिला कर खाया। उसके भीतर टीन का ज़हर व्याप गया था।

जहाँ जहाज़ की भाफ़ चुचाती थी, हम वहाँ अपने मग लगा देते थे और पानी की एक एक बूंद जमा करते थे।

सिंगापुर से बटाविया, बटाविया से सौराबाया—मक्कासर स्ट्रेट के पास से फिलीपीन—पलाओ द्वीप हो कर—न्यूगिनी के उत्तर में— फिर वहाँ से रबौल और न्यूब्रिटन द्वीप।

हमारे शरीर साबुन जैसे भीगे हुए से चिपकते थे। एक

दिन में औसतन १५ आदमी भूख और प्यास से मरते थे पलाओ कैरोलीन द्वीप में काफी कैदी उतारे गये । १५०० फिर भी बच गये । सात दिन में रबौल पहुँचे, केवल एक मरा । हर बीमारी के लिये कुनैन दी जाती थी ।

फिर कारगो चली ।

१५०० आदमी उसी छोटे से स्थान में बैठे थे । पानी नहीं था । जापानी जँगलों के पार खड़े थे । उन्होंने चॉकलेट छीलना शुरू किया, फिर ऐसा लगा कि वे उसे भीतर फेंक रहे थे । हम सब टूट पड़े । जापानी ऊपर अट्टहास करने लगे । लेकिन हम लोग पशुओं की भाँति लड़ रहे थे । जिसमें जितनी शक्ति थी, लगाये दे रहा था । एक कैदी जो दुबला सा था, पेचिश में जिसके आँव जारहा था, किसी प्रकार उठा और टूट पड़ा । बड़ी देर तक छोना-भपटी होती रही । किसी की आँख कुच गई, किसी का पाँव कुचल गया । दो व्यक्तियों ने एक दूसरे को काट खाया ।

जापानी चिल्लाया : देखो !

हमने ऊपर देखा ।

वे चॉकलेट खा रहे थे । अब पता चला ।

उन्होंने हमारे लिये ऊपर का कागज छील कर गुड़ीमुड़ी करके नीचे फेंक दिया था ।

हमने देखा ।

आँखें जलने लगीं ।

वे अट्टहास करके हँसे ।

हम सब अपनी अपनी जगह बैठ गये ।

पेचिश वाले ने आराम से बीचों-बीच पड़े पड़े आँव निकाल दिया । बदबू आने लगी ।

एक व्यक्ति ने गुस्से से कहा : सूहर के बच्चे !

रोगी ने कुछ नहीं कहा ।

घृणा से एक चीनी ने खखार कर उस पर थूका । वह इतना निर्बल हो चुका था कि उसने कुछ नहीं कहा । फिर वह ऐंठन से मरोड़े खाने लगा, उसकी आँखों में अजीब पथरील दृष्टि थी, गोया वह तो मर चुका था । उसके मुँह पर दाढ़ो बढ़ी हुई थी । मेल उसके हाथों पर जमा हुआ था ।

मैंने अपने घुटनों पर हाथ रखा । मुझे चिपकतापन लगा । मैंने अपना थूक निगला और तभी सामने से एक व्यक्ति ने उठकर अपना मग जहाज की चुचाती भाफ की बूंदों को पकड़ने को लगा दिया । अब दूसरा पास आगया ।

पहले ने उसे आँखें फाड़ कर देखा ।

उसने निडर होकर अपना मग बढ़ाया ।

दोनों घूरते रहे ।

बूंदें नीचे गिरने लगीं । एक तीसरे ने चुपचाप अपना मग ऊपर पकड़ा । जब अचानक उधर दृष्टि गई, पहले ने तीसरे के मुँह पर घूँसा मारा । सारा पानी फैल गया ! अब वे तीनों गुत्थम-गुत्था में पड़ गये । वे टकरा कर उस तनिक से स्थान में गिरे तो चार व्यक्तियों के चोट आगई । वे चारों बुरी तरह चिल्लाते हुए गालियाँ देने लगे । फिर मारपीट होने लगी ।

और तब वे अलग होगये ।

फिर अपनी अपनी जगह बैठ गये ।

फिर उसकी आँखों में चमकती तारा ज्वालामुखी में से निकलती आग की लपट की तरह दिखाई देने लगी ।

पेचिश वाला व्यक्ति एक बार धनुष की तरह अकड़ गया । फिर वह तड़पने लगा । उसने फिर आँव निकाल दिया । इस बार उसमें रक्त भी था । किसी माँ का लाड़ला, किसी बहन का दुलारा आज भेड़ियों के बीच में बैठा था ।

हम सब आदमी थे ।

लेकिन कैसे आदमी !

हम ज़िंदा रहना चाहते थे । और ज़िंदगी सबसे हमदर्दी करती है, मौत से नहीं करती ।

उसका छटपटाना देख कर हमें गुस्सा आने लगा । वह हमें कायर बना रहा था । वह हमारी दया क्यों माँग रहा था । क्यों वह हमारी कठोर छाती को पिघलाना चाहता था ! क्यों वह दिखाना चाहता था कि दुश्मन हमें कुचल कर सुख पा सकता था ।

‘साला मरता भी नहीं ।’ एक चिल्लाया ।

वह कौन था ?

मैं नहीं जानता ।

पर वह हम में से ही एक था ।

‘साले मरना है तो जल्दी मर ! इतनी बीमारी का सहारा तो खुदा ने तुझे दे दिया । अब तो बेशर्मी न कर !

हठात् हम सब चैतन्य हो गये ।

एक और ने कहा : अब ये मरेगा ।

‘यह कौन है ?’ कह कर एक ने अपने नीचे से एक कीड़ा खींच निकाला । और भटके से मरते आदमी पर फेंका ।

‘ले यह तेरी मदद करेगा ।’

कुछ देर में जब वह मरीज उछला और उसने तीन उल्टी साँसें लीं और एकदम सिर लुढ़क गया, कई लोग एकदम उत्साह से चिल्ला उठे : मर गया ! मर गया ! शाबाश ! शाबाश ! !

हम लोग कितने हमदर्द थे । क्या हम इंसान नहीं थे ! क्यों नहीं थे । हम सच्चे इंसान थे । हम भूँठी सहानुभूति नहीं दिखाते थे । मौत उसकी निजात थी । वह आज्ञाद हुआ । हमने अपने पाँव फैला दिये । बड़ी देर से घुटने मुड़े मुड़े दरद करने लगे थे । हमारे पाँव उसकी लाश पर गिरे । पर न उसने हटाने को कहा, न हमने हटायें । अब उसे कोई तकलीफ़ न थी, न वह क़ैदी था । बिचारा मर कर हमें पैर फैलाने की जगह दे गया ।

एक बजने वाला था । ऊपर मेजें लग गईं थी । तरह तरह के लज़ीज़ खानों की खुशबुएँ आने लगी थीं ।

जापानी खाने बैठ गये । उनके सामने एक अधनंगी इन्डो-नीशिया की लड़की थी । वह एक कुर्सी पर बैठ गई । उसने अत्यन्त करुण नेत्रों से हमें देखा । वह दृष्टि हमें बहुत बुरी लगी ।

एक चिल्लाया : साली रंडी है ।

और फिर वह गालियाँ शुरू हुईं कि वह शर्मा कर भाग गई । जापानी उसे छेड़ने लगे । फिर वे खाने लगे । हम जंगले

के पास खड़े होगये, हमने अपने हाथ जंगलों के बाहर निकाल कर फैला दिये । पास खड़े जापानी ने बाहर से संगीन चलाई । हमने जल्दी से अपने हाथ भीतर कर लिये, वर्ना कोई कट गया होता ।

एक जापानी ने कहा : बदबू आती है ।

‘कोई मर गया है ?’ एक जापानी ने चिल्ला कर हम से पूछा ।

मगर हम उस वक्त मरे हुए की याद नहीं चाहते थे । हमारे मुर्दे में कोनों से निकल कर कीड़े लग चुके थे ।

हठात् एक जापानी करीब आया । उसने ऊपर से ठोकर मारी, हम नीचे गिरे । कई के चोटें आईं ।

कई चिल्लाये

लाश चली गई ।

हममें से जो जहाज में समुद्र में मरता था, वह समुद्र में फिक जाता था, जो ज़मीन पर मरता था, वह मिट्टी में दबा दिया जाता था । उस असह्य गर्मी में प्यास से हम तड़पते थे । एक मग पानी ! क्या होता था उससे । हम एक दूसरे के पसीने को चाटते थे । और वह समुद्री खार होता, जिससे गला और सूखने लगता । लेकिन फिर हम लोग संधन लगे । हम हिलते नहीं, डुलते नहीं, हम बोलते नहीं, हम न गम करते, न शक्ति का क्षय करते । जीवित रहने के नये सत्य ने बताया कि जो लड़ते थे, चिल्लाते थे, वे पहले मर गये थे, वे समुद्र के जन्तुओं का आहार बन गये थे । तब हमें चुप बैठना था । हम उन कीड़ों को जो हमारे खाने में आते थे, जो चूहों की

पकी खाल आती थी, उसे सबको बिना विद्रोह के खाने लगे । अब कीड़े चावल के दाने होगये, उनका गंदापन हमें गंदा नहीं लगता था । चौबीस घंटों में एक बार वह हमें बहुत ही स्वादिष्ट लगता था । अब मैंने किसी को क़ै करते नहीं देखा । अब चूहे की खाल को भी हम टाट का टुकड़ा समझ कर खा लेते थे । मैंने एक क़ैदी को क़ै करते देखा । हम आश्चर्य करने लगे । वह लज्जित हुआ । कहीं ऊपर से मक्खियाँ आगई थीं । उन्होंने भिनभिनाना शुरू किया । वह व्यक्ति अपने भीतर से निकली अन्न की उस शक्ति को ललचाया सा देखता रहा । बौवरिल वाला टीन का ज़हर उसके पेट से सब निकाल लाया था । उसे घोर परिताप था । अब उसके भीतर कुछ नहीं था । आँतें अभी से अकड़ने लगीं थीं । पता नहीं कि उसमें आग थी या क्या था ! अब कल तक उसे बैठे रहना था । उसने दो घूंट पानी पिया । जैसे इसी से वह अपना काम चला लेगा । लेकिन जब एक बजे वहाँ मेज पर खाना लगा उसने सीढ़ी चढ़ कर जंगले पकड़ कर थूका । थूक जापानियों के खाने में पड़ा । तब वे क्रुद्ध हो उठे ।

उन्होंने उसे अकेले को बाहर खींच लिया । एक क़ैदी विद्रोह में बढ़ा । बाकियों ने उसे पीछे खींच लिया । वे व्यर्थ लड़ कर मरना नहीं चाहते थे । एक ने धीरे से कहा : शायद अब करबट बदलने की जगह जल्दी ही हो जायेगी ।

सबने मनही मन दुहराया । करबट की जगह !

जापानी बाहर उस चिल्लाते क़ैदी के हाथ पाँव पकड़ कर हवा में झुला रहे थे । उन्होंने उसे झटका दिया और ज़िंदा

ही समुद्र में फेंक दिया । वह कूँदी तैराक था । वह भूखा भी उसी जहाज़ पर लौटने के लिये चिल्लाता हुआ तैरने लगा । एक जापानी अफसर ने पिस्तौल का निशाना साधा और आवाज़ आई : धाँय ।

समुद्र की लहरों पर रक्त की ललाई दिखाई नहीं दी । उसकी शहादत का लहू काश धरती पर गिरता, तो शायद एक रंग छोड़ता ।

तिरसठ दिन की उस गाथा को कहने के लिये मुझे अभी रास्ते में मर जाने वाले लोगों की साक्षी चाहिये ।

लेकिन वे मर गये हैं और उनका नक्शे पर कोई भी निशान बाकी नहीं है । वे कब थे, यह भी नहीं कहा जा सकता । वे किस लिये जन्म लेकर आये थे कौन जानता है ।

मेरे सामने तो दूसरी बात है मैं जब करबट लेता हूँ तो बगल का व्यक्ति मुझसे कहता है सरक कर लेटो

कहाँ यहाँ जगह नहीं

उफ़.... गर्मी के मारे दम घुट रहा है

हम लोग पेशाब क्यों फेंकते हैं

क्यों ? पीने की राय देते हो ?

हाँ वह पानी ही तो है ...

फिर सन्नाटा छा गया ।



क्या हम ज़िंदा हैं ?

हाँ ।

तब ही ऐसा लगता है ।

कैसा ?

कि हमें अभी सब अनुभव होता है ।

❀

❀

❀

कोरल द्वीपों के सौंदर्य को मैं देखता रहा । नीले, बेंगनी, फिर जल की एक पतली सी भिल्ली । और एक ऊँचा भाग, फिर हरियाली और फिर साँभ की छाया—दक्षिणी समुद्र का विस्तार ..

अपूर्व सौंदर्य था वह ।

सचमुच प्रकृति सुन्दर थी, मनुष्य क्रूर था ।

हम बन्दी क्यों थे ?

कितनी अपरूप मरकत सी थी वह हरियाली ।

किन्तु तभी मैं उदास होगया !

यह सब सौंदर्य भी मनुष्य का अपना नहीं रहा है ।

क्यों ?

क्योंकि यहाँ भी इन्हीं बर्बर लुटेरों का राज्य है ।

[मुझे याद आया । जर्मन और अमरीकन मिशनरियों ने यहाँ के लोगों के नाम तक बंदल दिये हैं । ऐसी वह लड़की आइडा थी । रंग की सांवली । कनाका । और उसे जापानी वेश्या की भाँति काम में लाते थे । उसके पड़ोसी की पत्नि से उन्होंने उसके पति को बाँधकर सामने ही बलात्कार किया था । सात व्यक्तियों ने । जब खंबे से खोला गया था तब उसका पति इन बर्बताओं से अपमानित होकर इतना भीषण धक्का खा चुका था कि वह मर गया था । कौन जाने उसके गले पर बँधी रस्सी की गाँठ ने उसके गले की साँस लेने की नली को

दबा दिया था । इंसान की जान उसके गले में बहुत ही नाजुक होती है । लेकिन तब जापानियों ने उस स्त्री को लात देकर उठाया था । वह उठ खड़ी हुई थी और अपने मृत पति की और उसने मुड़ कर भी नहीं देखा था । बाद में जब वह अकेली रह गई थी तब उसने संभोग के समय अपने बर्बर भोगी की पसालियों में छुरा घुसेड़ दिया था और स्वयं भी उठ कर नदीमें कूद कर मर गई थी । इसका बदला लेने के लिये जापानियों ने एक दूसरी ही गर्भवती स्त्री को पकड़ लिया था, जिसका इस घटना से कोई संबंध नहीं था । उन्होंने उसकी रानों में तलवार डाल कर उसके पेट तक काटा था, और बच्चेदानी में से बच्चे को निकाल दिया था । वह उनका राजधर्म था !]

लेकिन हरियाली मरकत सी चमक रही है । उसमें नीलम की छाँह है । एक अवर्णनीय सौंदर्य है ...

प्रशांत जैसे निर्लिप्त

निरासक्त ...

ओ हरियाली ! मैं कैदी हूँ

हरियाली ने पुकारा आओ आओ

मेरी शरण में खो जाओ....

मैं स्फुरित सा देखता रहा

कैसा आवाहन था

अपरिचित अव्यक्त ...

तो क्या वहाँ यह सब नहीं होगा

नहीं....आओ....आओ....

मैं समुद्र में कूद पड़ा ।

‘वह कूदा !’ कोई चिल्लाया ।

‘इण्डी था !’ शोर मचा ।

‘कैदी था !’ कोई गरजा ।

‘पकड़ो पकड़ो ।’ फिर रोर उठने लगी ।

जापानी रैफ्ट पर पीछा करने लगे । रैफ्ट मेरी ओर आने लगा । उस पर चार व्यक्ति थे

मैंने चिल्लाकर कहा : बचाओ....बचाओ....

मैं अकेला था ।

निर्बल था । यहाँ मुझसे तैरा नहीं जा रहा था । यहाँ मैं कहाँ आगया । अब मुझे जहाज़ ही अच्छा लगने लगा । मैं उनके पास पहुँच गया । उन्होंने मुझे धक्का दिया ।

तब मुझे पता चला । वे बचाने नहीं आये थे, वे मुझे सता-सता कर डुबाने आये थे...

मुझसे किसी को प्यार नहीं था....

अंधेरा छा गया था । अंधेरा । पहले बैंगनी, फिर नीला, ऐसा नीला जैसी स्याही होती है

रैफ्ट लौट गया था ।

मैं चिल्लाने लगा ?

किन्तु वहाँ था कौन ? कोई नहीं ?

तो क्या अब मरना होगा ?

न जाने मुझमें इतनी शक्ति कहाँ से आगई थी । मरने की बात मेरे लिये अज्ञात थी । मेरे भीतर यह विचार ही नहीं आता था कि मैं भी मर सकता हूँ । इतनी बार बच जाने पर मुझे लगता था कि मृत्यु मेरे लिये है ही नहीं । अचानक मुझे

एक तख्ता मिला । मैंने उसे पकड़ लिया । फिर उस पर मैंने अपना भार डाल दिया ।

सचमुच मैं नहीं मरूँगा, मैंने सोचा ।

तो फिर वह जो कि तख्ता भेजता है, वह समुद्र में क्यों डुबाता है....

इतनी यातना मैं क्यों भोग रहा हूँ...

और शायद विश्वास में यह बात न आये...

जब कि मैं समुद्र में एक तख्ते के सहारे अथाह लहरों पर भूल रहा था, जब अन्धकार के कारण केवल सुदूर आकाश के नक्षत्र दिखाई देते थे तब मुझे तब की याद आने लगी जब मैं सेना में नहीं था घर पर था.... तब मैं निश्चिन्त विद्यार्थी था.... और वे दृश्य मुझे बड़े सुहाने बनकर याद आने लगे.... जीवन अब अपनी मुक्ति के लिये फिर जैसे मेरे अहं को सचेत करने के लिये अपना सुन्दरतम पक्ष दिखा रहा था....

मैं एक ओर बहने लगा । शायद लहरों का कंपन मुझे फेंक रहा था...

मैं....असीम आकाश.... अनन्त जल.... अगाध अंधकार .. विदेश.... अनजाना स्थान.... समुद्री जन्तु.... फिर मैं और मेरी सत्ता में निहित जीवन का संघर्ष....

एक व्यापक रोर

मैं चिल्लाऊँ ?

क्या होगा पुकार कर ? कौन सुनेगा ?

सुबह पानी में से सूरज निकलता हुआ दिखाई दिया । ऐसा लगता था जैसे वह पानी में डूबा हुआ था ।

उसकी ज्योति जल पर फैली । लहरें मचल उठीं ।
चिड़ियाँ आकाश में चहचहा कर उड़ने लगीं । सफेद पक्षी उड़े ।
लाल मोटी चोंच के पक्षी फरफराये....

लेकिन.... सहसा.... यह क्या हुआ कि मैं आर्त होगया....

मुझे प्यास सताने लगी

चारों ओर समुद्र

किन्तु खारी

गला चटक रहा था

क्या करता

अथाह समुद्र में पानी नहीं था

उस समय इस सबमें पहली बार मुझे लगा मैं दूट
जाऊँगा

मैं नष्ट हो जाऊँगा

क्या होगा अब जी कर....

अब मेरा मन घुट रहा है

मैं मरना चाहता हूँ

तख्ता बह कर किनारे से टकराया

यह कौनसी जगह है.... मैं कहाँ आगया हूँ....

यह तो धरती है.... धरती.... आसरा है....

पानी भी धरती में है....

लेकिन प्यास सर्वत्र है....

मैं मूर्च्छित होगया । या सो गया नहीं जानता ।

मुझे पता नहीं

मैं जग रहा था या सोच रहा था, मैं नहीं समझ सका ।

क्या है वह संबल जो मुझे खींच रहा है.... क्या उसी का नाम जीवन है ? क्या मैंने सुपना देखा—

मेरे भीतर वह इतना विश्वासी कौन था

एक अत्यन्त सुन्दर द्रोप है । वहाँ घनी हरियाली है....

मरकत और नीलम की छाया है....

ओह.... लाल चिड़िया ने अपनी पीली चोंच उठा दी है ...
अतीव सुन्दर....

मैं निश्चिन्त घूम रहा हूँ....

अब मैं धरती पर चल रहा हूँ....

अचानक मेरे पाँव एक दीवाल से टकराये ।

किसी ने झटका दिया ।

अब मैं फिर जाग उठा

मैंने देखा चेतना जागने लगी

वह एक जहाज था जिसने मेरे स्वप्न को तोड़ दिया था । वह स्वप्न तोड़ दिया था, जिसमें जीवन मृत्यु को पराजित कर रहा था । और मेरी वह अपराजितावस्था फिर सभ्यता (! !) में लोट आई थी ... जहाँ इंसान था वह इंसान जिसकी इतनी स्तुति गाई गई है ।

मुझे ऊपर खींचा गया ।

कौन थे मेरे प्राण-रक्षक ! !

किन्होंने बचाया था मुझे ?

जापानी !

वे मुझे घूर रहे थे !

फिर जापानी !

मुझमें कंपन भर गया । मैं न जाने किस तरह खड़ा था ।
जिंदगी फिर खड़ी होगई थी ।

जापानी ने मुझमें लात दी ।

‘सूहर ! इंडी !’ वह चिल्लाया ।

दूसरा चिल्लाया : ‘कंदी है ! कपड़े देखो । भागा हुआ है ।’

मैं लुढ़क गया ।

‘भागा है ?’ एक लात और ।

जिंदगी की इज्जत !

तब उन्होंने मुझे लात मार मार कर डेक पर लुढ़का दिया ।
वे हँसे ।

मैंने गुस्सा नहीं किया । शायद मुझे अपने बचाने की
चिन्ता थी । बिद्रोह की नहीं । तब मैं एक कोने में पड़ा रहा ।
‘पानी !’ मैंने कहा ।

एक आदमी ने मुझे गन्दा सा पानी पिलाया । मैंने उसका
हाथ चूम लिया । वह देखता रहा । छः दिन तक मैं एक आर्त
पशु की भाँति वहाँ पड़ा रहा ।

वे खाते, खेलते, बोलते, हँसते....

लेकिन मैं पड़ा रहा सुनता देखता न रोता....
न हँसता मैं निश्चेष्ट था

लेकिन मैं मर नहीं रहा था

वे मुझे खाने को कुछ नहीं देते थे

दो दिन मैं रेंग कर उन के पास गया था

मैंने भूखी आँखों से उन्हें खाते देखा था

पर उन्होंने मुझे लात मारी थी

मेरे भीतर कुछ था जो फिर मुझे वहाँ जाने से रोक लेता था

कहीं से दो क्रुं दी आगये थे । दोनों इन्डोनीशिया-वासी थे, मुझे देखा तो उनको दंद सा आया ।

वे मुझ से बोले नहीं । दुपहर को जब जापानी खाना खा रहे थे तब नज़र बचाकर एक ने मुझे चुपचाप अपने खाने में से दो मुट्ठी भात दे दिया ।

भात !!

मैंने आँखें उठा कर देखा ।

उसने इङ्गित किया—खाओ ।

वह स्नेह देखकर मैं बिलबिला उठा ।

मैं बिना बोले कुत्ते की तरह बिना हाथ लगाये उसे निगल गया ।

फिर लेट गया ।

एक ने मेरे माथे पर हाथ फेरा । मुझे वह स्पर्श एक नये जीवन का सा स्पर्श लगा । तो अभी तक मनुष्य का स्पर्श सुख दे सकता था ?

मैं लेट गया । आज अन्न मेरे पेट में भारी सा लगा । लगा मैं और निर्बल हो गया हूँ । मैंने हिलने की चेष्टा की । हिल नहीं सका ।

वे मुझसे कुछ दूर बैठे यह दिखा रहे थे कि उन्हें मुझ से घृणा है ताकि जापानी सन्देह न करें । वे बातें करने लगे ।

एक ने कहा : मेरे सामने इन्होंने एक चीनी लड़की को

रंडी बनने को मजबूर किया। उसने कहा: मैं इस लायक नहीं, मुझे बीमारी है। लेकिन डाक्टर ने—जापानी था वह, कहा कि 'यह इस योग्य है। चीनी लोग भूँठे होते हैं। उनका यक्रीन नहीं करना चाहिये।' तब वह लड़की गले में फाँसी लगाकर मर गई।

दूसरे ने कहा : अपढ़ !

'हाँ,' पहले ने कहा, 'तब जापानियों ने लड़की के चाचा को क्रौंद किया।'।

'क्यों !'

उन्होंने कहा : तुमने सिपाहियों को अपनी लड़की देने से इच्छा करके हिरोहितो का अपमान किया है। उन्होंने असह्य यातना देकर चाचा को मार डाला। उस लड़की की बड़ी बहिन तो उनके पास खूब जाती थी। उसका भाई रो दिया था। मुझ से बोला। मैंने कहा : मारो या मरो ! वह बोला : मैं मरने से नहीं डरता। लेकिन मैं ही अपने घर का एकमात्र पुरुष हूँ। बाकी बच्चे हैं। इन सबका क्या होगा ? वह लड़की बड़ी शरीफ़ थी। कभी उसे तम्बाकू मिल जाती तो मुझे लाकर ज़रूर देती। वह कहती, 'तुम हम दोनों एक से हैं, तुम भी कैदी, हम भी कैदी, हम कुत्ते से भी गये बीते। मैं तो मर जाऊँ पर यह मेरे भाई छोटे हैं, बहनें बच्ची हैं... और मैं कुछ नहीं कहता : चुप रहता। वह कपड़ों की कमी के कारण इतना छोटा फ्राक पहनती कि जब ऊखरू बैठती थी तो मैं मुँह फेर लेता। वह कहती : तुम मनुष्य हो, तुम मनुष्य हो... वे सब पशु हैं... वे सब पशु हैं...

जापानियों को आश्चर्य हुआ ।

‘यह कुछ नहीं खाता ?’

‘नहीं ?’

‘पीता है ’

‘मैं इसे थोड़ा पानी पिलाता हूँ ।’

‘क्यों ?’

‘मैं देखना चाहता हूँ कि एक कमजोर गुलाम कितने दिन जीवित रह सकता है ।’

‘हम डाक्टर हैं ।’

‘क्यों ?’

‘डाक्टर चूहों पर प्रयोग करते हैं; हम आदमियों पर ।’

‘पर यह आदमी नहीं ।’

‘तो क्या है ?’

‘गुलाम ।’

वे ठठा कर हँसे ।

‘मुझे शक होता है ।’

‘क्या ?’

इसे कोई खाने को जरूर देता है ।’

‘देगा कौन ?’

‘कोई कैदी ।’

‘लेकिन हर एक को मुश्किल से अधपेट मिलता है । अपना पेट काट कर देगा कौन ?’

‘यह इन्डोनीशिया वाला देता होगा ?’

‘मैं क्यों दूँगा,’ कैदी ने कहा—‘यह हिन्दी है । मरे चाहे

जिये, मुझे क्या ? और यह तो मरेगा ! मैं तो इसे नहीं देता ।’

‘तू भूँठ कहता है ?’

‘कैसी भूँठ ?’

जापानी चले गये ।

वह इन्डोनीसिया-वासी मेरे से दूर बैठ गया और उसने फिर इधर-उधर देख कर कहा : ‘क्यों? मैं तुझे कब देता हूँ ।’

वह मेरे पास आया । एक जापानी आगया ।

इन्डोनीशिया के कैदी ने उसे दिखाने को अपना पाँव मेरे मुँह पर रख दिया ।

मैंने कुछ नहीं कहा ।

जब जापानी चला गया तो वह अपने पाँव को नोंचने लगा, जैसे वह उस पाँव को पापी समझता था । मैंने इशारा किया : ऐसा मत कर ।

‘वर्ना वे तुम्हें मार डालते ।’ उसने कहा, ‘तुम हिन्दी हो……’

‘वे तुम्हें भी मार डालते !’ मैंने कराह कर कहा : ‘वे विजेता हैं……’

सामने विषवत् रेखा के लाड़ले आदिम पुरातन सघन कांतार खड़े थे । विशाल वृक्षों की छाया में जहाज रुका ।

इन्डोनीशिया के कैदी ने कहा : ‘उठो ।’

मुझसे उठा नहीं गया ।

उसने सहारा दिया । तभी जापानी आया । कैदी ने मुझे भटका देकर कहा : ‘सूहर का बच्चा……उठता नहीं……’

मैं उठा ……

और मुझे आज तक ताज्जुब है कि मैं उठा कैसे ? कहाँ

से आगई मुझमें वह शक्ति.... कैसे बल आगया मुझ में कि मैं उठ सका

तांबे के रंग के कनाका—मैलेशिया वासी, माइक्रोनेशिया वासी—सिर पर घने घुंघराले बाल, हब्बियों की सी चपटी नाकें—सुगठित सुन्दर शरीर....

मैं सब देखता रहा । सब देखता रहा ।

जहाज से हम लोग धीरे-धीरे उतरे । मेरे साथ कैदी थे । किनारे की सुन्दरता देखकर मुझे लगा, मेरी भूख कम हो गई थी ।

चलो !' कैदी ने कहा ।

मैं चलने लगा । वे आगे बढ़कर पंक्ति में खड़े हो गये । लेकिन हतभाग्य मुझसे चला नहीं गया । मैं बैठ गया ।

तभी मेरा पहला कार्गो आता दीखा ।

मैंने सोचा ! वे मुझे पहचान लेंगे ।

फिर किसी ने कहा : 'कौन पहचानेगा....'

उन्होंने मुझे पहचान कर तो नहीं सताया था....

उन्हें मुझसे व्यक्तिगत शत्रुता थी ही कहीं....

वे तो मुझे नहीं सताते.... उनका गौरव अपनी सत्ता का प्रसार-भर करता है....

मुझे फिर भूख लग रही है....

यह कब तक लगेगी....

जापानी चिल्लाया : 'उठ ! मुर्दे !'

मैं जा पड़ा ।

वह चिल्लाया : 'चल ! बढ़ !'

में चलने लगा ।

‘और तेज़ ।’

में और तेज़ हो गया ।

क्यों ?

क्योंकि यहाँ वे कैदियों को खाना दे रहे थे ।

न्यू ब्रिटन में जब मैं उतरा तब केवल साठ आदमी बचे जो उस पहले कार्गो में पहुँचे थे । मैं इकसटवां था । बाकी , बाकी सब मर चुके थे ।

❀

❀

❀

लेकिन आज मैं आजाद होकर भी रो रहा हूँ ।

‘यों ?’ कोई पूछता है ।

‘हिरोशिमा जल गया है ।’ ।

‘लेकिन आज तू विजयी है ।

‘कैसे ?’

‘तेरे सामने ही तुझ पर अत्याचार करने वाले जापानियों ने हथियार रख दिये हैं । तू अफ़सर है न ?’

‘सूहर के बच्चे ! अब कैसी दया भरी आँखों से देख रहे हैं । कल तक इनके चेहरे पत्थर के दिखते थे, आज वे कैसे नर्म हो गये हैं ।’

कितने खूनों का बदला इनसे लिया जायेगा ?

कितने जुल्मों का बदला इनसे गिनगिन कर लिया जायेगा, क्या सारा राष्ट्र भी उसका बदला दे सकेगा ? क्या इनकी स्त्रियों को संसार के अन्य देशों की स्त्रियों के अपमान का बदला नहीं चुकाना पड़ेगा ?

क्या इनके बच्चों का कत्ल वैसे ही नहीं किया जायेगा जैसे संसार के अन्य देशों के बच्चों का कत्ल इन्होंने किया है ? इन्होंने जिस हिरोहितो को सूर्य का पुत्र कह कर लोगों को कुचला है, क्या उस मदान्ध राजसत्ता का गौरव अब पाँवों के नीचे नहीं कुचला जायेगा ?

मेरी यह कठोर प्रतिहिंसा बोलती है कि नहीं ऐसा ठीक नहीं होगा ?

क्यों ?

क्या इन्हें दण्ड नहीं चाहिये ?

चाहिये...

लेकिन...

लेकिन क्या

हिरोशिमा के कई लाख व्यक्ति मर चुके हैं ..

अरे दया मत करो ...

भेड़िये को भेड़िये के न्याय से ही कुचलो .

लहू का मोल लहू ही है...

लहू का मोल लहू तो नहीं

तो क्या है ?

लहू का मोल आजादी है ।

लहू का मोल माँ की ममता है ।

लहू का मोल औरत की इज्जत है ।

लहू का मोल बच्चों की मुस्कान है



भारत ! मैं लौट आया हूँ ।

मैंने असंख्य तीर देखे हैं, समुद्र देखे हैं ।

मैं उन समुद्रों में से आया हूँ जहाँ सैकड़ों साल पहले तेरे पाल वाले जहाज जाते थे ।

लोग कहते हैं कि तेरी भाषाओं में उन मैलेशिया-वासियों की भाषा के भी कुछ शब्द हैं, तो क्या वे कभी आये थे यहाँ ?

क्या तब भी ऐसा ही रक्तपात हुआ होगा ?

❀

❀

❀

१६४६ की पगध्वनि सुनाई दे रही है ।

कितने लाख आदमी लड़ाई में मरे है ?

लाख नहीं, कुछ करोड़ ही मरे होंगे ।

तुम लड़ने क्यों गये थे ? कुछ तुम्हारा सम्मान अटक गया था ? किसी से तुम्हारी अदाबत थी ? किसी से तुम्हारी राह रुक रही थी ?

नहीं, मैं तो पेट की खातिर गया था ।

❀

❀

❀

देखो यह अंगरेज हैं । इन्हें तुमने लड़ाई के मैदान में देखा था । तब यह कैसे थे ?

वहाँ ये इंसान थे ।

यहाँ क्या हैं ?

यहाँ ये मालिक हैं ।

क्या यहाँ भी यह तुमसे हमदर्दी दिखाते हैं ।

मैं पहले गुलाम था ।

अच्छा ।

फिर मैं कैदी हो गया ।

अब क्या हो ?

अब मैं फिर गुलाम हूँ ।

❀

❀

❀

युद्ध के लिये शान्ति चाहते हो, या शान्ति के लिये युद्ध ?
युद्ध के लिये प्रतिहिंसा, या कुछ और....

मैं कुछ नहीं चाहता....मैं केवल शान्ति के लिये शान्ति चाहता हूँ....

❀

❀

❀

माँ खड़ी है । ग्यारह वर्ष का छोटे कितना बड़ा हो गया है । ६॥ का है नीलम और सुषमा है आठ वर्ष की । माँ के पाँव छूता है रनवीर । पड़ोस के डाक्टर साहब का पूरा परिवार है, और भी न जाने कितने परिचित हैं

माँ रो रही है.... बार बार सिर सूँघती है अपने पुत्र का, जैसे गाय को बछड़ा मिल गया है

(और वकील साहब कहते हैं— 'साले जापानी ! अच्छा बदला मिल गया उन्हें हिरोशिमा में....

लेकिन माँ काट कर कहती है : 'नहीं भैया ! ऐसा मत कहो....ऐसा मत कहो....न जाने कितने बेकसूर मारे गये हैं....

माँ रोती है । रनवीर उसके पाँवों में लोट जाना चाहता है । दुख से प्रेम का जन्म होता है । रनवीर इतना सह कर जिस सत्य पर पहुँचा है, इतना भटक कर । माँ घर बैठे उसे जानती है.... इन ६ वर्षों में उसने क्या कम सहा है....)

छोटे कहता है : 'अम्मा नींद में से चौंक चौंक कर उठ बैठती थीं और कहती थीं.... देख तो छोटे ! तेरा भइया तो

नहीं आगया, मुझे लगा था वह बड़ी देर से खड़ा है...में खाट छोड़कर उठ कर जाता था तो साथ साथ चली आतीं थीं मेरे और जब वहाँ कोई न होता था तो हम तीनों को छाती से चिपका लेती थीं, छाती से, और कहतीं थी : भगवान ! सब के बेटों की रक्षा करना....

वकील साहब गद्गद् होते हैं । रनवीर देखता है माँ को, और माँ के नयनों में असीम आनन्द आज उमड़ा पड़ रहा है, पर जैसे उसे रोक रही है कि कही नज़र न लग जाये बेटे का आज फिर से जनम हुआ है न ?

आज कही घृणा या भय नहीं है केवल सुख है, आनन्द है

पर माँ कहती है : 'बेटा ! तूने एटम बम देखा होगा ?'

'नहीं' माँ !' रनवीर कहता है ।'

'कैसी भयानक चीज़ है ! इसे पैदा करके तो आदमी क्या कभी चैन पा सकेगा ...

और वह सुषमा की कोमल और स्निग्ध देह पर हाथ फेरती है, मानों उसे फूलों के मुरझाने की एक अज्ञात आशका हो रही है ।

सिर्फ़ डेढ़ सौ रुपये महीने रनवीर की तनख्वाह के आते थे, उन्हीं में इस मँहगाई में भी किसी तरह माँ ने इन तीनों बच्चों को पाला है । रुपयों के लिये रनवीर लिख गया था, सो आते रहे थे । लेकिन और कोई समाचार नहीं मिलता था । फौजी अफ़सरों से पता पूछा तो लिखा था कि उसका अभी पता नहीं चला है ! क्या इतना ही माँ के लिये काफी था ?

फिर भी अदम्य साहस से जिये जा रही थी वह । उसने बड़े-बड़े तूफान भेले थे । ४२ की क्रांति, ४३ का अकाल, एक-एक करके सब सुनती थी, गांधी जी ने भूख हड़ताल की थी तब माँ ने बेटे वाली प्रार्थना में गांधी जी के लिये भी एक जोड़ ली थी और घर के आँगन में ही उसने सारा युद्ध भेला था—'' युद्ध भी मन की अनुभूति है अन्यथा घटना मात्र हुआ करे, वह क्या विचलित कर सकती है ...

रनवीर कहता है : 'माँ! हजारों आदमी यो बिखर जाते हैं उससे, जैसे वे कभी थे ही नहीं' ...

सुषमा का अब संकोच कम हो गया है, रनवीर उसे गोद में उठा लेता है । पर अब वह गोद के लायक नहीं रही है, सो वह शर्मा जाती है ...

दृश्य तो ऐसा है कि देवता ऊपर से फूल बरसायें लेकिन खर कोई बात नहीं । जब देवता अपना काम छोड़ देते हैं तब मनुष्य ही उनके कामों को भी संभालने लगता है ...

वकील साहब की स्त्री कहती है : 'भाभी ! तुम भी ! लड़का आया है, कुछ मुँह मीठा कराओ ...

'अरे हाँ !' माँ कहती है ...

फिर केवल आनन्द है कुछ दिन ... भूली बातें, ममता के अवरुद्ध पहाड़ पिघलते हैं—'' माँ पुत्र की भयानक आपत्तियों को सुनती है और बिलख-बिलख कर रोती है और कहती है—हे भगवान ! अब अपनी दुनियाँ में ऐसा न होने देना ...

रनवीर को लगता है जैसे यह दुनिया कोई और है, वह एक दूसरी दुनिया थी । सारी परेशानियों और घुटन के बाव-

जूद यहाँ इन्सान इन्सान है, और वहाँ इन्सान जैसे पागल हो गया था, वहाँ जैसे इन्सान दाँव पर चढ़ा हुआ सा छटपटा रहा था

सुबह होती है तो 'धायँ धायँ' नहीं होती....

साँभ में चूल्हों का धुँआ उठता है। लाशों का नहीं...

सब कुछ कितना शान्त है। यह सच है कि इस शान्ति में भी हलचल है, मनुष्य की यातना यहाँ भी असीम है, किन्तु फिर भी यहाँ कुछ मूल्य है, जिनमें मनुष्य का निर्माण एकदम विनष्ट तो नहीं होता ...

छोटे कहता है : 'भैया ! सुषमा गाती बहुत अच्छा है। इसकी टीचरजी कहती थीं कि अगर इसे एक मास्टर रख दिये जाये गाना सिखाने वाले, तो यह बहुत अच्छा गा सकती है।'।

'रख देंगे। सुषमा ! गाना सीखेगी ?'

सुषमा भैया की ओर कितने प्यार से देखती है !

और रनवीर को लगता है कि वह ऐसी दुनिया में लौट आया है जहाँ सुन्दर की कल्पना निरन्तर जीवित रहती है, जहाँ संघर्ष का अर्थ है नया जीवन

और वहाँ अंधेरा हत्या लहू का समुद्र, धुँआ और हाहाकार....

कितना अधिकार है बच्चों का। वे क्या कुछ माँगते में संकोच करते हैं ? अपना अधिकार जो समझते हैं। वे कोमल हैं, हमें उन्हें संबल देना है ! क्यों नहीं सारा संसार भी ऐसा ही हो जाता ?

'रनवीर !' माँ कहती है— 'अभी भी बैठा क्या सोचा करता है बेटा !'

‘कुछ नहीं माँ !’

‘भूल जा बेटा ! वह सब भूल जा ! अब तो तू ब्याह कर ले । जीवन में नया उजाला छा जायेगा ।’

रनवीर देखता है । माँ के नयनों में कितना विश्वास है । परन्तु यह केवल परिवारगत है या लोकगत, यह वह नहीं समझ पाता ।

[तीन]

❀

❀

❀

रनवीर सिहर उठा ।

उसने आँखें खोल कर देखा । लैप जल रहा था । बाहर अभी भी तूफानी हवा चल रही थी ।

उसके बाद की कथा का तार टूट गया, यद्यपि वह भी एक अपना इतिहास रखती थी :

उसने कम्बल और ऊपर खींच लिया !

और सिगरेट सुलगाई । भीतर तक धुँआँ खींचा और आकाश की ओर मुँह कर टैण्ट की छत की ओर उसे फेंक दिया ।

क्या करे वह अब शादी । सब कुछ बरबादी की तरफ बढ़ा चला जा रहा है । नैतिकता है ही कहाँ !

धाय !

रात की निस्तब्धता में वह स्वर बड़ी भयानकता से गूँज उठा और पहाड़ों से टकराता हुआ खिसल कर घाटियों में गूँजता चला गया ।

रनवीर ने पिस्तौल उठा लिया जैसे यह सब काम पलक

मारते हो गया हो, और एक बहुत ही विकराल चीत्कार सुनाई दिया, जिसे सुनकर रनवीर थर्रा गया ।

‘कौन चिल्लाया !’ वह पुकार उठा....

बाहर कोई बड़ी जोर से कराह उठा ।

रनवीर झपाटे से कूदा और टैण्ट के पर्दे को उठाया ही था कि फिर आवाज आई— धाँय....

आँखों के सामने तारे से घूम गये ‘‘‘कधे में बाँई’ तरफ़ जोर का धमाकासा लगा, जैसे किसी ने गर्म सलाख हाथ में घुसेड़ दी हो ...

एक चीत्कार....

और वह बेहोश सा लड़खड़ाया

उसी वक्त कई बन्दूकें धाँय-धाँय कर उठीं....

कोई बुरी तरह चिल्लाया और फिर एक पत्थर लुढ़का और घाटी—पुर्सों नीची घाटी में वह भयानक आवाज गूँज कर विलीन होगई ।

रनवीर पलङ्ग के सहारे लेट गया धरती पर

इसी समय भारी बूटों के भागने की आवाज सुनाई देने लगी ।

अर्दली पर्दा उठाकर घुसा और चिल्लाया : ‘हुज़ूर !’

उसका काँपता स्वर सुन कर कई सिपाही आगये ।

‘क्या हुआ ? क्या हुआ ?’ की फुसफुसाहट गूँज उठी ।

अर्दली ने कहा : ‘हुज़ूर घायल हो गये ।’

चारों ओर भगदड़ और सनसनी । कई लोगों के बोलने की आवाज़ें—

‘क्या होगया ?’

‘अरे खून !’

‘साहब बेहोश हैं...’

‘डाक्टर को बुलाओ’

‘जल्दी दौड़ो’

‘कहना फौरन ...’

‘अरे इन्हें तो उठाओ’....

‘धीरे-धीरे...’

‘सँभाल कर....’

उन्होंने उसे लिटा दिया....

अर्दली पास आ गया ।

‘साहब ।’

‘हुज़ूर !’

रनवीर ने आँखें खोल कर कहा : ‘पानी...’

पानी पीकर चेत आया ।

‘यह क्या हुआ ?’

‘हुज़ूर ! एक कबायली आया था छिप कर उस लँगड़े को छुड़ाने....’ सन्त्री ने देख लिया । मगर इससे पहले कि सन्त्री सँभले उसने गोली चला दी...

‘सन्त्री....’

‘गोली दिल को फाड़ गई हुज़ूर....’

उसका स्वर भारी होगया ।

‘मैं उसी की आवाज़ सुनकर निकला था । पर्दा हटाते ही गोली हाथ में लगी....’ उफ़....

‘आहिस्ता हुजूर ! आहिस्ता !’

‘फिर कबायली को....’

‘हुजूर’ कोई बीस गोलियाँ लगी होंगी, वह गिरा और पाँव फिसल कर नीचे के खड्ड में जा रहा ।’ फिर वह स्वर बदल कर बोला— ‘बड़ा पक्का निशानेबाज़ था’ लेकिन छलनी कर दिया हमारे जवानों ने’ फिर स्वर बदला— ‘हुजूर थोड़ी सी पो लीजिये... ताकत और गर्मों के लिये....’

विहस्को पीकर रनवीर को अधिक स्फूर्ति लगी ।

बातूनी मुँह लगा अर्दली कहता गया : ‘डाक्टर साहब को खबर गई हुजूर । वस आते ही होंगे’

रनवीर ने कहा : ‘तुम लोग जाओ, अब मैं ठीक हूँ....’ अर्दली ज़रा आग और तेज़ कर दो अंगीठी में, और एक पैग और देना....’

सिपाही प्रशंसा भरी दृष्टि लेकर चले गये और अर्दली ने बोतल का काग खोल कर शराब उड़ेली....

बाहर खट खट, खटखट....

हवा की सर्द ठिठुरती पुकार.... फिर खड्डों में जाकर एक गूँजती हुई हुंकार.... डरावनी.... अंधेरे पर भूमती कठोरता.... ‘हलो....’

‘डाक्टर !’

‘क्या हुआ लेफ्टिनेंट कर्नल....’

डॉक्टर कुर्सी पर बैठा और क्षण भर देखता रहा, फिर उठा और कंधा देखा ।

‘कंधे में तो नहीं लगी....’

‘यहाँ हाथ में बाइसेप में, मसल के नीचे’

‘हूँ’। गोली ने फाड़ दिया है। लेकिन गुडलक ! गोली घुसी नहीं रही, वर्ना हड्डी तोड़ दी होती। उसका भटका जोर का लगा, पर नीचे से काटती निकल गई... यह तो जल्द ठीक हो जायेगा... गरम पानी’

‘कर रहा हूँ हुजूर !’

डॉक्टर ने पट्टी बांधकर कहा : ‘अब आप ठीक हैं ?’

‘जी हाँ बिल्कुल’ ‘रनवीर ने उठकर कहा—’ यह बिस्तर बदलो, कपड़े भी बदल डालूँ... खून हो गया है न ?’

‘श्योर, श्योर !’ डॉक्टर सक्सेना ने कहा।

‘सिगरेट लीजिये डॉक्टर !’

‘थैंक्स !’

दोनों अब सिगरेटें पीने लगे।

अर्दली ने गिलास में शराब ढाल कर डॉक्टर के सामने भी रख दी।

अंगीठी की तेजी से टैन्ट में गर्मी आई।

डॉक्टर ने कहा : ‘वैल ! तो मैं चलूँ ?’

‘क्या कीजियेगा अभी सर्दी है। थोड़ा गर्मा लीजिये डॉक्टर !’

‘पर सर्दी कम कहाँ होगी ?’ डॉक्टर ने कहा।

‘दुनिया तो गर्म हो रही है आजकल उपग्रह के चक्कर लगाने से’

‘हाहाहा’

दो ठहाके... अर्दली ने घुघू की तरह देखा और फिर

अँगीठी पर झुक गया...

‘आप आराम कीजिये....’

डॉक्टर चला गया....

बाहर सन्त्री बदल गया ...

जो मर गया उसका शव प्रातःकाल ससम्मान जलाया जायेगा....

भोर होगई है ।

अर्दली चाय रखता है...

रनवीर पीते हुए कहता है : वह सन्त्री का....

‘हाँ हुजूर....’

‘मैं भी चलता हूँ’

‘आप रहने दीजिये हुजूर !’ आपको तकलीफ़ होगी

लेकिन रनवीर नहीं मानता....

भगड़ा चढ़ा, उतरा, टोप उतरे, और सलामी दी गई,
और रनवीर आगया है लोटकर, पड़ा है बिस्तरे पर और सोच रहा है....

सन्त्री चली गया....

एक जान और चली गई...

कुछ देर पहले ही वह ज्ञागत था...

उसे नहीं मालूम था एक जंगली आयेगा और फ़िज़ूल गोली चलाकर उसे ख़त्म कर जायेगा....

और अचानक विचार आता है...

और अगर यह गोली ज़रा ६ इंच और इधर ही लगती तो... दिल फट जाता... और... रनवीर...

मेज़ पर धरी ही रह जाती यह तस्वीर...

निगाहें जाकर टकरा रही हैं...

वही मुस्कान...

वही भोलापन है... इंजिनियर की लड़की... ताज़्जुब है डॉक्टर की निगाह नहीं पड़ी, वर्ना दोस्त ठहरा ... न जाने कितने सवाल पूछ डालता... और सन्त्री मर गया है...

रनवीर को याद आया है कि अस्पताल में बीमारी और रोगों के बीच रहते हुए भी यह डॉक्टर कभी उनसे दबते नहीं ... जिन्दगी में यह भी उसी तरह रहते हैं जैसे और लोग ... वही वासना, वही लोभ, वही यश की कामना ... मनुष्य की व्यथा उन्हें यहीं छूती... सच तो यह है कि वह तब छूती है जब अपना मन उसमें उलझा होता है, अन्यथा वेदना दया की अधिकारिणी होती है, आँख के आँसू की नहीं... ऐसा बन्धन क्यों है इस मनुष्य पर...

क्योंकि वह सत्ता के लिये संघर्ष करता है और करता चला जा रहा है ... और करता चला जायेगा...

जीवन और सृष्टि की अबूझ पहेली को वह सुलभाता चला जा रहा है...

विज्ञान के चरण अब अंतरिक्ष में पहुँच कर नये असीम व्योम में मँडराने लगे हैं अभी जानने के लिये बहुत कुछ है.... प्रकृति की विजय तब तक अहंकार के विस्फोट करती रहेगी जब तक मन का सन्तुलन ठीक नहीं बैठेगा ।

लेकिन विज्ञान मन की साधना कहाँ है ?

चारों ओर भय बढ़ रहा है....

मन का विकास कहाँ है ?

वर्गयुद्ध की विषमता युद्ध पर युद्ध ला रही है ।

परन्तु वर्गयुद्ध का आधार तो आर्थिक विषमता है ।

क्या वर्गहीन समाज की ओर दावा करने वालों में वर्गयुद्ध समाप्त हो गया है ? जहाँ एक पार्टी जनता बनती है और वह यान्त्रिक ढंग से सब पर निरंकुश शासन करती है वहाँ आर्थिक आधार के सुलभने पर भी वर्ग नष्ट कहाँ होता है ? आर्थिक शोषण हटने से मनुष्य की बहुत सी वेदना मिट जाती है, परन्तु सब नहीं । अधिकार का मूल स्वार्थ अहङ्कार में है.... यश की लड़ाई में है.... त्याग.... भी अहंकार का ही रूप है बौद्धिक प्रतियोगिता वहाँ बनी ही रहती है और युद्ध इस तरह कभी भी समाप्त नहीं होगा.... आज तक के युद्ध अहंकार की अभिव्यक्ति रहे हैं जाति भेद, वर्ण भेद, रंग भेद धन भेद सब प्रकारान्तर से उसी अहंकार के प्रदर्शन हैं वही अहं अपने निचले स्तर पर उतर कर बनता है पशुत्व.... पशुत्व यानी हत्या.... और युद्ध केवल हत्या ही नहीं है.... एक घोर भय है भय.... जिसमें सत्ता का विनाश मिल जाता है.... और तब आत्मरक्षा के लिये युद्ध के कारण

उभार कर सामने किये जाते हैं धर्म, दर्शन, सिद्धान्त, आर्थिक शोषण, त्यागदान, सब उसी के रूप हैं.... एक युद्ध एक बुराई को खत्म करने के लिये बड़े विश्वास से लड़ा जाता है, परन्तु अन्त में वह लाता है और नयी बुराई

कुछ देश लड़े थे अपने साम्राज्य को बचाने के लिये स्वतन्त्रता की लड़ाई, अपने उपनिवेशों को तलवार के बल पर गुलाम बनाये रख कर.... कुछ और देश उठे थे अपनी तृष्णा और साम्राज्य को बढ़ाकर सब पर छा जाने के लिये एक लड़ा था साम्राज्यवादियों से मिलकर फासिस्टों के विरुद्ध, संसार में स्वतन्त्रता और शान्ति स्थापित करने के लिये.... और एक लड़ा था अपने वर्गहीन समाज की रक्षा करने के लिये जिसकी रक्षा करने के लिये... उसने छोटे देशों की जनता को गुलामी दी थी, निरीह जानकर, और एक अत्याचारी से संधि करके उसे समय दिया था कि वह आराम से अन्यो को कुचले... केवल अपने नये प्रयोग और अपनी जनता की रक्षा के लिये.... और हुआ क्या परिणाम.... कुचले हुए जागे.... लोहू के समंदर को फाड़कर जगह-जगह आजादी के टापू निकले.... तख्त उलट गये.... राजाओं के मुकुट लुढ़क गये आजादी का पहलू स्वयं एक दूसरे प्रकार की साम्राज्य की तृष्णा से पागल होकर निकला, बाकी साम्राज्य क्रुद्ध होकर लुटती सल्तनतों पर अत्याचार करते हुए बराने लगे.... और जनवाद जबरन अपने सिद्धान्त की आड़ में बाकियों पर चढ़ गया.... और उसने नये प्रकार की गुलामी दी हमने लहू देकर आजादी ली लेकिन तपस्पूत बलिदानी को गोली मिली और जनता को

भ्रष्टाचार और धूर्तखोरी... और कुछ अत्याचारियों ने अपने दंभ का बदला उस गुलामी से चुकाया जो हिंसा के बीज को भीतर पालती है और अब भी है वही पहले से बड़ा आतंक... सर्वनाश का भयानक डर एक ओर एक धन से मदमत्त सा फैलना चाहता है स्वेच्छा (Free will) के नाम पर, दूसरी ओर दूसरा अपने यांत्रिक समाजवाद को लेकर छा जाना चाहता है जनता के नाम पर... वह जिसकी जनता का वीर युद्ध सदैव प्रातः स्मरणीय बनकर रहेगा.... वहीं...मनुष्य की सदिच्छा (Good will) की उपेक्षा होगई ? कहाँ है पथ

और बलिदानी ने कहा था कि व्यक्ति को उठाओ । अहंकार को दबाओ.... युग का वह घोर बलिदान था.... किन्तु वह विज्ञान की महान शक्ति को नहीं चाहता था ... और हम चाहते भी नहीं, पर उसे ही अपनाते जा रहे हैं...

पाप का दमन करने को आज हम कहते हैं कि वर्गहीन समाज बनाओ.... शान्ति से.... व्यक्ति का विकास करते हुए.... व्यक्ति और समाज को मिलाते हुए... हिंसा है अत्याचार ... अहिंसा है आत्मरक्षा

हम अभी कहाँ हैं ?

दुनिया एक है । विज्ञान के प्रकाश में यह सत्य कितना बड़ा है । किन्तु अभी हम तो विकास के इस कखगघ तक नहीं पहुँचे हैं... सिद्धान्तों की यांत्रिक कट्टरता और वर्ग में मनुष्य को जन्म के आधार पर बाँटना.... यह सब उसी अहङ्कार की जड़ता के पक्ष हैं जो युद्ध का बीज है...

युद्ध तब हटेगा जब अहंकार मिटेगा....

अहंकार का विकास प्रकृति ने अपने आप किया है और वह करती जायेगी....

तो फिर वह कैसे मिटेगा....

अहंकार जीवित रहने की इच्छा है, अहंकार सुख प्राप्ति की इच्छा है.... वह सदा रहेगा . परन्तु उस अहंकार को उदात्त बनाना ही मनुष्य के कल्याण का पथ है उसी से शायद हम शान्ति की ओर बढ़ सकें....

घृणा और दम्भ इसी अहंकार की निचले स्वर की अभिव्यक्तियाँ हैं ... व्यक्ति का जब तक यह विकास नहीं होगा, तब तक इस पृथ्वी से युद्ध नहीं मिट सकेगा .. चाहे किसी भी पैगम्बर और दार्शनिक की दुहाई क्यों न दी जाये, चाहे इस विचार को सब ही अपने-अपने संकुचित दृष्टिकोणों, दृष्टियों और विकृत सीमाओं के कारण गालियाँ दे लें...

रनवीर को लगता है जैसे वह कहीं दूसरे रास्ते पर आ गया है और वह सोचता है....

तब भय ही आज संसार का आधार है उसमें कहीं सुरक्षा नहीं है.... विज्ञान ने विकास किया है मनुष्य की सांस्कृतिक चेतना को भय देकर....आत्मरक्षा के नाम पर सर्वनाश के अस्त्र बन रहे हैं जब अस्त्र बनते हैं तो वे चलते अवश्य हैं.... एक बनाता है कि दूसरा यहाँ जबरन समाजवाद न फैला दे, हमारे आर्थिक उपनिवेशों को न छीन ले.... दूसरा बनाता है कि पहला कहीं जबरन फिर पूँजीवाद न लौटा लाये.... हमारे नये समाजवादी उपनिवेशों पर से हमारा कब्जा

न उठ जाये.... अविश्वास.... भय.... दोनों का साधन विज्ञान.... कोई साधन नहीं यह कहने का कि युद्ध नहीं हो यह युद्ध तब तक रुका है जब तक दोनों की वैज्ञानिक प्रगति प्रायः समान है, जिस दिन एक भी बढ़ जायेगा, दूसरे को मार देगा.... लेकिन दोनों नहीं जानते कि मनुष्य दोनों सिद्धान्तों से बड़ा है और अस्त्रों से मनुष्य काटे जा सकते हैं, कुचले जा सकते हैं, लेकिन इन्सानियत नहीं मिटाई जा सकती मनुष्य का विश्वास यदि अस्त्रों के बल पर जमाया गया है; तो वह मनुष्य का विश्वास नहीं, अस्त्र का विश्वास है, वह एक भूँठ है, जिसमें अहंकार का प्रेत ही घुरघुराता है मनुष्य की निर्भयता नहीं....

बाहर कुछ शोर सा हो रहा है....

‘आँडरली ।’

‘हुज़ूर ।’ कहता हुआ वह भीतर खिंचा चला आता है ।

‘यह क्या शोर है ?’

‘हुज़ूर ! वह कबायली लँगड़ा है, रात को गिरफ्तार किया था । कप्तान साहब ने इधर भेजा है हुज़ूर के हुक्म के लिए ।’

‘वह पाकिस्तानी फौज का है ?’

‘नहीं हुज़ूर ! आजाद काश्मीर गवरमेन्ट का बोलता है अपने को ।’

‘वह कोई गवरन्मेंट नहीं ! उसके कुसूर क्या हैं ;’

‘मे सूबेदार साहब को बुलाता है ।’

आकर सूबेदार खट से सैलूट देता है ।

अपनी वर्दी पहने पाँवों पर कंबल डाले मोटे तकियों के

सहारे अधलेटा सा रनवीर कहता है—‘उसने गाँव वालों को लूटा है न ?’

‘हाँ हुज़ूर ।’

‘टेक एक्शन ! (कार्रवाई करो) वह सिर्फ़ लुटेरा है । उसको पाकिस्तानी फौज में नहीं गिना जा सकता ।’

‘लेकिन सर ! वह स्पाई है ।’

‘स्पाई !’ (जासूस)

‘यस सर ! उसकी जेब में नक्शा है और वह हमारे फ़ौजी मुकाम की पड़ताल कर चुका है, जिसका उसने नक्शा भी बनाया हुआ है । शायद उसे ही लेने रात का कवायली आया था जो मारा गया ।’

‘तो फिर वही करो, जो स्पाई का होता है । या कर्नल को फोन करके पूछ लो ।’

‘यस सर !’

वह सेलूट करके चला जाता है ।

और रनवीर पैड पर लिखने लगता है—

प्रिय छोटे,

मैं काश्मीर आगया हूँ । यह जगह बहुत ठण्डी है, मगर जिन्दगी में नया तजुर्बा है । समुद्र, जंगल, और मैदान तो बहुत देखे थे, लेकिन इस ज़मीन पर पहाड़ों का आलम ही और है । यह चीज़ सब चीज़ों से ज्यादा खूबसूरत है । हालाँकि इस वक्त सिर्फ़ बर्फ़ ही बर्फ़ है, लेकिन सफ़ेदी के अकेलेपन में भी इस कदर शेड हैं कि देखते ही बनता है । सोचता हूँ इसे देखने के बाद एक बार उत्तरी ध्रुव भी कभी देखना चाहिये, जहाँ ६

महीनों का दिन और छ महीनों की रात होती है ।

सुषमा की शादी कर डालना । मुझे छुट्टी अभी शायद न भी मिल सके । रुपये बैंक से जरूरत पड़े तो निकाल लेना । और हाँ, मेरी राय में एक मकान बनवा ही डालो अब ! रहना तो है ही । अब तुम भी जल्दी लायक हो ही जाओगे ।

वह इन्जिनियर साहब की लड़की का फोटो भी आ गया है । लड़की अच्छी है । इसकी शादी जरूर किसी अच्छे से आदमी से हो जाये तो बहुत अच्छा होगा । मैं तो शायद यही सोचता हूँ, कि मेरा शादी न करना ही ठीक रहेगा । अम्मा को अच्छी तरह समझा देना कि वे नाराज न हों । तुम दोनों की बहुएं आजायेंगी, तो उनका मन उन्हीं से बहल जायेगा । और बच्चू ! मेरी राय में तो तुम ही न जल्दी से कोई लड़की देखकर कर डालो अपनी शादी ! बकौल वकील साहब की बीबी के—छोटी-सी बटुआ सी बहू जो घर में छम-छम करती डोला करे ।

मैं यहाँ अच्छी तरह हूँ । डॉक्टर साहब मेरा काफ़ी खयाल रखते हैं । घबराने की कोई बात नहीं है । हमारी सेना का साहस और नैतिकता बहुत ऊँची है और हम देश के लिये कुछ भी उठा कर नहीं रखेंगे ।

तुम्हारा—रनवीर

पत्र लिखकर वह पढ़ता है और पुराना पत्र निकाल कर अँगोठी में डाल देता है, जो सुलग जाता है और फिर काला सा कोयलों पर पतला सा मरा सा दिखता है ।

सिगरेट जलाते ही उसकी नज़र फिर उसी फोटो पर

अटक जाती है.... इन्जिनियर की लड़की....

वही सुपने देखती आँखें....

जैसे कह रही है—मुझे देखो... मुझे जिन्दगी समझो ...
मैं स्वयं प्रकृति हूँ

वह निगाह हटा लेता है .

और बड़बड़ा उठता है : नहीं... नहीं.... यह दुनिया अच्छे
आदमियों की नहीं, सुन्दरी... यहाँ लुटेरे बसते हैं ...

जब वर्गहीन समाज बन जायेगा, जब व्यक्ति और समाज
के विकास का संतुलन हो जायेगा, जब विज्ञान माध्यम होगा,
साधन नहीं, अन्त नहीं... तब यह दुनिया अच्छी बनेगी.... तब
तक नहीं.... अभी तो यहाँ धनी गरीब को लूटता है, गरीब
बदला लेता है तो काम बिगड़ता है, सरकारी लोग दंभ और
आतङ्क से काम लेते हैं... रिश्वतें लेते हैं...व्यक्ति के स्वातन्त्र्य
के नाम पर दमन होता है, कही समाज के स्वातन्त्र्य के नाम
पर गुट्ट शासन करके व्यक्ति की सदिच्छा को घोटते हैं...

धमकी दी जाती है...व्यक्ति स्वातन्त्र्य का देश अमेरिका
कहता है कि ऐसा अस्त्र बनाया है कि दुनिया जल उठेगी...

धमकी दी जाती है... समाज स्वातन्त्र्य का देश रूस
कहता है कि ऐसा अस्त्र बनाया है कि यहीं से सब को जला
देंगे....

यह सब है व्यक्ति और समाज के लिये ..

व्यक्ति स्वातन्त्र्य का हरण करता है कौन ? एक गुट्ट !
समाज स्वातन्त्र्य का हरण कौन करता है ? एक वर्ग !

इस दोनों तरह की अकड़ और आन—(जो इन्सानियत और आजादी के नाम पर — निभाई जा रही है) का नतीजा है... लाखों करोड़ों की मौत.... विज्ञान, संस्कृति और सदियों की कला का सर्वनाश....

एक कहता है चलो अस्त्रों को समुद्र में डुबा दें....

दूसरा कहता है—‘नहीं !’ स्वार्थ उसे फागल किये है

क्योंकि वह समझता है यह एक भूँठ है, नया फ़रेब है....

पहला ही क्यों नहीं डुबा देता स्वयं.... क्योंकि उसे डर है कि उसके पास एक ही बल है और है वह अस्त्र बल....

हमारे पास कुछ नहीं है... पर हम तो किसी से नहीं डरते.... उनको ही भय क्यों है ? उन्हें अपने नये सिद्धान्तों का गर्व और विश्वास नहीं ? हिंसा से भरी यह “नहीं—” अहं की ‘पशुता’ है और चारों ओर भय छा रहा है....

हत्या और बलिदान का भेद जानते हैं वे ही, जो सत्य पर निर्भर रहते हैं । इसलिये हमें विश्वास है कि यह अस्त्रबल मनुष्यत्व को कभी भी पराजित नहीं कर सकता.... विज्ञान मनुष्य का तभी विकास होगा जब आत्मा का विकास उस पर हावी हो जायगा....

मनुष्य ही जीतेगा.... वही जीतेगा अन्त में....

उस दिन तक प्रतीक्षा करनी होगी.... अन्यथा भौतिक की विजय निरन्तर यान्त्रिक बनाती जायेगी और मनुष्य नये-नये युद्धों में निरन्तर पड़ता चला जायेगा....

बाहर फिर शोर हो रहा है ।

अर्दली प्रवेश करता है ।

‘हुजूर !’

‘क्या है ?’

‘हुजूर ! वह कबायली है ।’

‘क्या बात है ?’

‘हुजूर ! कर्नल साहब फोन पर नहीं थे ।’

‘कहाँ है वह ? उसे, जासूस है, तो, वही करना होगा, जो....’

‘हुजूर ! वह सारे राज भारत सरकार को बता कर मरना चाहता है ।’

‘क्यों ?’ रनवीर चौंक उठता है ।

‘पता नहीं हुजूर ! वह बड़ी देर से रो रहा है । कहता है मैंने तुम्हारे साहब को देखा है । उनसे मुझे एक बार मिला दो, फिर चाहे गोली मार दो, पर मेरी बात सुन लो, तुम्हारा साहब देवता है । मैं एक बार उनसे मिलकर अपनी बहशीपन की माफ़ी मांगना चाहता हूँ, वरना मेरे दिल को कभी चैन नहीं मिलेगा !’

रनवीर उठता है....

‘हुजूर !’ ओवरकोट कंधों पर डाल दूँ। बाहर अब सर्दी बढ़ गई है ।’

‘अच्छा ! लाओ ! यह हाथ बचा कर, हाँ ठीक है....’

रनवीर देख रहा है....

जैसे बिजली का तार छू गया हो....

कोन !

अजह्म !!!

वह पुकार उठता है— 'अजहर !!'

सामने अजहर धरती पर बैठा है। उसकी आँखों में आनन्द के आँसू उमड़ रहे हैं ...

'अजहर !' फिर अवरुद्ध स्वर से कहता है रनवीर—
'तुम ! तुम यहाँ ! स्पाई !'

'हुजूर !' अजहर भर्राये स्वर से कहता है—'हाँ मैं ही हूँ। मैं ही हूँ हुजूर ! आपने मुझे पहँचान लिया हुजूर !'

'अजहर ! तुम ही इन बेकसूर गाँव वालों को लूटते हो, कत्ल और ज़िना से तुम्हारा ही दामन भीगा है ? क्या इसी से तुम इस्लाम फैला रहे हो ? क्या सचमुच तुम्हारा इस्लाम खतरे में है !'

एक वीभत्स हँसी हँसता है अजहर और कहता है—
'हुजूर ! मैं इन सब चीजों के लिये नहीं लड़ता ! जापानियों ने मार मार कर लँगड़ा कर दिया था मुझे। फौज में नौकरी नहीं मिली। स्पाई बन गया आखिर ! यह पेट है हुजूर.....'
और तब वह उस पर हाथ मारता है 'यह किसी को क्या देखता है हुजूर ? सुबह आपको देखा हुजूर ! और लगा कि अंधेरी फटी जा रही है आँखों के सामने से। मेरे साहब ! रनवीर साहब ! हुजूर मुझे दाण्डेकर बुला रहा है आज ! मैं सारी लूट का राज़ बता कर हमेशा के लिये मर जाना चाहता हूँ'

और रनवीर देखता है...और कहता है....'तुम पाकिस्तान क्यों चले गये अजहर....'

'हुजूर ज़िन्दगी की प्यास ले गई....' मुसलमान हिन्दुओं को

पंजाब में पूरब को खदेड़ रहे थे, पूरब के हिन्दुओं ने मुझे उधर खदेड़ दिया और मैं जहाँ पहुँचा, वह मेरे लिये एक ऐसी दुनिया थी हूज़ूर कि जो कुछ मैंने जंग में सीखा था... वह सब सिर्फ़ नफ़रत बनकर मृत्त में समा सका ... और मैं नफ़रत के बल पर जिन्दा रहने लगा हूज़ूर ...

‘फिर आज क्या हुआ अजहर ! उसी नफ़रत से तुम्हें नफ़रत कैसे होगई आखिर ?’

‘हूज़ूर ! आज मुझे आपका वह अकेले में तड़पना और चिल्लाना याद आ रहा है । उस दिन मैं मौत के मुँह में घुसकर आपसे मिलने गया था । उसके बाद उन्होंने मुझे इतना मारा ... इतना मारा कि मुझे लँगड़ा कर दिया ... हूज़ूर ...’ वह शायद फिर उस पीड़ा की याद करके रोने लगा है...

उसका रोना देखकर रनवीर की पलकें भींग गईं हैं और मुश्किल से वह अपने होठों को भींच कर उन्हें बाहर गिरने से रोकता है और भरपूर स्वर से पूछता है : ‘फिर ?’

‘फिर हूज़ूर ! वही सोच रहा हूँ आज, कि यह जिंदगी आखिर मुझे कहाँ ले आई है । सोचा कि उस दिन मुझे आपने मसीहा समझा था । आज क्या समझोगे ? शैतान ? गोली ज़रा चूक गई, वर्ना... क्या होता आपका ? हूज़ूर ! मैंने बेकुसूरों और निहत्थों का क़त्ल किया है... जिना किया है...

‘तुम्हें दर्द और तकलीफ़ ने यही सबक दिया अजहर...?’

‘मैं इसीलिये इस जिन्दगी को बरबाद करना चाहता हूँ हूज़ूर ! मेरी बात सुन लीजिए, स्पाई हूँ, मुझे गोली से उड़वा दीजिए... अब मैं बहुत थक गया हूँ...

‘नहीं अजहर । इसलिए नहीं कहता कि तुमने एक दिन मुझे वह राहत दी थी जो शायद कभी कोई न दे पाए, लेकिन इसलिए कहता हूँ कि तुमने तप तप कर भी अपने को साफ़ नहीं किया....’

‘हुज़ूर ! मैं सब करता हूँ, बहुत बेचैन रहता हूँ, मगर इस दोजख ने, इस पेट ने सब कुछ मुझसे लूट लिया....’

‘याद है तुमने मुझसे पूछा था अजहर कि कभी वह दिन भी आएगा जब यह नफ़रत खत्म हो जाएगी हुज़ूर ?’

‘मेरे आका....’ वह चिल्लाता है—‘मुझे मरवा दीजिए....’
मुझे मरवा दीजिए....’

वह अपना ग़रेबान फाड़ डालता है....

और रनवीर कहता है : मैं लूटने नहीं आया हूँ अजहर ? मेरे हाथ में हथियार है जरूर, मगर हथियार से बड़ी है यह बात कि मैं किसी की रक्षा करने आया हूँ.... अगर यह हथियार छिन जाएगा, तब भी मैं यहीं लड़ता रहूँगा.... आज्ञादी हथियारों पर नहीं पलती.... दिलों पर पलती है.... विश्वासों पर जिन्दी रहती है तुमको कर्नल के पास ले जाया जाएगा....’

रनवीर टैन्ट में लौट आया है....

वह बिस्तर पर मुँह तकिए में गड़ाए, धरती पर घुटनों के बल बैठा है....

यह सब क्या है.... क्या हुआ है यह सब....

हत्यारा फिर आदमी बन रहा है किसी एक दिन में इतनी ताकत होती है कि वह इंसान की जिन्दगी बदल दे ? हाँ । इंसान के लोहू में इतनी ताकत होती है कि वह राष्ट्रों की घृणा और प्रेम को मोड़ देता है.... जैसा था गाँधी का लोहू जिसने नफ़रत की आग को अपनी बूंदों से बुझाया था....

सामने पत्र पड़ा है....

यही पत्र भेज दूँ.... नहीं.... फिर लिखूँगा.... माँ इसे पढ़ कर दुःखी हो जायेगी....

उसने पत्र फाड़ दिया है....

और फिर उसे वह जलाता है.... लपट उठती है.... और उस लपट में चमक उठता है चेहरा....

अजहर का चेहरा....

अजहर ! क्या तू मुझे भूल जायेगा ? मैं तो तुझे कभी नहीं भूलूँगा अजहर....

सचमुच इस नफ़रत का अन्त कब होगा....

अजहर ! मैं तेरे प्यार को सदा प्यार करूँगा....

लेकिन अजहर ! मैं तेरी नफ़रत को कभी भी प्यार नहीं करूँगा.....

अजहर ! तू इंसान था, फिर तुझे यह क्या होगया....

पेट ने तुझे इंसान से हैवान बना दिया....

अजहर ये तूने क्या किया....

रनवीर का चेहरा आँसुओं से भीग गया है....

और धुँधली दृष्टि में से दिखाई दे रहा है फोटो... इंजिनियर की लड़की कह रही है... दुख को समझने के लिये ममता के बीज डालो लेफ्टिनेंट कर्नल ! अपना भी घर बसाओ, ताकि तुममें जो दया का भाव है कि तुम सिर्फ कर्तव्य कर रहे हो, दूसरों का भला कर रहे हो, संघर्ष में उसका अहंकार मिट जाये... और उसकी जगह लेले प्यार... इंसान का सच्चा प्यार... इसी दुनिया में रहता है... पति पत्नी, माँ बाप, पुत्री और पुत्र... यही संस्कृति की रक्षा करता आया है और करता जायेगा... क्योंकि घर से दुनिया की शुरूआत है। उसी से इंसान के लिये प्यार जागता है... हिंसा से घृणा होती है। लूट, हत्या, फरेब, अहंकार... सब दूर होते हैं... करोगे जिंदगी को प्यार...? मौत के मुँह में खड़े हो तुम क्यों आखिर...? क्योंकि तुम जिंदगी को बचाना चाहते हो... दुनिया की धरोहर को बचाना चाहते हो... आगे बढ़ते चलो... उजाले की तरफ... यह तूफान अंधेरा... युद्ध... मृत्यु... सब बीत जायेंगे... आकाश में मनुष्य की जय यात्रा का नया स्टेशन घूम रहा है... नया चंद्रमा... नया उपग्रह... इसे देखने के लिये तुम्हारी संतान रहेगी शायद, कि मानव अंतरिक्ष में विजयगीत गाये... इतना ऊँचा उठाना है इंसान को... आओ... आओ... जिंदगी की तरफ आओ... काँटों में खिलते हुए फूल की तरह मुस्कराओ... जो कभी काँटों से घबरा कर हारता नहीं... महका करता है... इस दुनिया में मौत नहीं जीतेगी, जीतेगी जिंदगी; नाश नहीं, निर्माण; पाप नहीं करूँगा; अत्याचार नहीं, समानता, गुलामी नहीं; आज्ञादी...;

बंदूक नहीं... बीन...

और रनवीर मुस्करा कर लिखता ह

प्रिय छोटे,

मैं शादी कर लूँगा, क्योंकि ज़िंदगी
बहुत बड़ी चीज़ है... उसका आधार प्रेम है ... तुम्हारी
भाभी तुमने चुन ही ली है... माँ के चरन छूना... सबको मेरा
प्यार देना.....



